15, I

नववर्षाङ्क

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

शरदङ्क

वर्ष
१५
सं० २०१२

संख्या
१
आश्विन

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य २)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य
श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—
धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन
श्रीमान् रायबहादुर सेठ तोलारामजी गजराजजी जैन, लाडनूं [राजस्थान]

सहायक—
श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।
श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)
श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।
श्रीमान् भाई चूहरमल्लजी मुञ्जाल, चूहरमल्ल एण्ड को०, कटरा बड़ियां, देहली।
श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूीज लिमिटेड, सोलन ब्रूरी।
श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]

★-❀-★

सम्पादक और व्यवस्थापक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक—
श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'श्रीस्वाध्याय'के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौषशुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) और एक प्रतिका १।-) एक रुपया पांच आना है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदन की ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मँगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों को दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समय से ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।) रु० और एक अङ्क का मूल्य १।-) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मँगवाने पर उक्त मूल्यमें ग्यारह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मँगवाने में ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य या एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफे में कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानी से भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहक के पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भलीभांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन-किन विषयोंपर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थशास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय-व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मंदी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमायें नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो-जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन जिन अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियां आवेंगी उन-उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (हेमताङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

श्रीमहाशिवरात्रि, राष्ट्रियपर्व होली, वसन्त, श्रीसीता जयन्ती, सङ्कष्ट-चतुर्थी, षट्तिलाएकादशी, भक्तवर प्रह्लादका संक्षिप्त जीवन-चरित्र, श्रीरामकृष्णपरमहंस तथा श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके महान् आदर्श जीवन पर स्वतन्त्र विचार आदि आदि।

सब लेख कार्तिक शु० १५ ता० २९ नवम्बर १९५५ तक सम्पादक "श्रीस्वाध्याय" सोलन (शिमला) इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

विगत १४ वर्षोंके 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १॥) रु०   २—हेमन्ताङ्क २॥) रु०

२—वसन्ताङ्क १॥) रु०   ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु०   २—हेमन्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १॥) रु०   ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५॥) रु०   २—हेमन्तांक २) रु०

२—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६)

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य   २—हेमन्तांक ३) रु०

३—वसन्तांक ३) रु०   ४—ग्रीष्मांक २) रु०

तीनों अंकोंका इकट्ठा मू० ६॥)

पंचम वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ४) रु०   २—हेमन्तांक १) रु०

३—साहित्यांक २) रु०   ४—ग्रीष्मांक अप्राप्य

तीनों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ६)

छठे वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु०   २—हेमन्तांक ४) रु०

३—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०

सातवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु०   २—हेमन्तांक ४) रु०

३—वसन्तांक अप्राप्य   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

तीनों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ६)

आठवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु०   २—हेमन्तांक १॥) रु०

३—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक २॥) रु०

मेष लग्नमें उत्पन्न होने वाले प्राणियोंका सविस्तर फल ग्रीष्मांकमें दिया है। चारों अंकोंका मूल्य ६) रु०

नवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २॥) रु०   २—हेमन्तांक १॥) रु०

३—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक २॥) रु०

वृषभ मिथुन और कर्क लग्नमें उत्पन्न हुए प्राणियोंका विशेष फल विचार शरदंक, वसन्तांक और ग्रीष्मांकमें दिया गया है। चारों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ६॥) रु०

दशवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु०   २—हेमन्ताङ्क १) रु०

३—वसन्तांक १) रु०   ४—ग्रीष्मांक १) रु०

चारों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ५) रु०

ग्यारहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २)   २—हेमन्तांक २) रु०

३—वसन्तांक १॥)   ४—ग्रीष्मांक १॥)

नववर्षाङ्कमें सिंह लग्नमें उत्पन्न प्राणियोंका विशेष फल ७ पृष्ठोंमें और हेमन्तांकमें 'मृत्युञ्जानका अद्भुत उपाय' दिया गया है। चारों अंकोंका इकट्ठा मू० ५॥)

बारहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २॥)   २—हेमन्तांक १॥)

३—वसन्तांक १)   ४—ग्रीष्मांक २)

ग्रीष्मांकमें कन्या लग्नमें उत्पन्न हुए प्राणियोंका विशेष फल दिया गया है। चारों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ५॥)

तेरहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २॥)   २—हेमन्तांक १॥)

३—वसन्तांक १॥)   ४—ग्रीष्मांक १॥)

इस वर्षके अंकोंमें तुला वृश्चिक धनुर्लग्न और वैशाख ज्येष्ठ आषाढ़ मासमें उत्पन्न हुए नर नारियोंका चमत्कृत फल कई पृष्ठोंमें दिया गया है। चारों अंकोंका मू० ५॥)।

चौदहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २)   २—हेमन्तांक १)

३—वसन्तांक १)   ४—ग्रीष्मांक १)

इस वर्षके अंकोंमें मकर, कुम्भ, मीन लग्न और श्रावण भाद्रपद आश्विन तथा कार्तिकमासमें उत्पन्न हुए नर-नारियोंका विशेष चमत्कृत भविष्य फल कई पृष्ठोंमें दिया गया है। पूरी फाइल चारों अंकोंका मू० ४॥)।

प्रत्येक वर्षकी पूरी फाइल या चार अंकोंका डाक रजिस्ट्री व्यय १) होगा। पूरी फाइल वी० पी० से नहीं भेजी जावेगी। जो पुस्तकालय और संस्थाएं १४ वर्षके सब अंक इकट्ठे में जावेंगे उन्हें ५०) रुपयेमें प्राप्त हो सकेंगे।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्याय सोलन (शिमला)



(शरदङ्क)

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १५ | सोलन, आश्विन शु० १० बुधवार सं० २०१२ वि० | संख्या १



तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
---अ० वा० आचार्य

श्रीस्वाध्याय-महिमा

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

तमःस्तोमं नेतुं शममतुलमन्तर्हृदि ततं
सुधांशुर्यः साक्षान्मतिकुमुदिनीभाणनकरः।
सतां सेव्यो नित्यं भवति गणनाऽतीतमहिमा
महान्श्रीस्वाध्यायः शिवमतनु तन्वन्विजयताम् ॥१॥

अबुद्धान्संबुद्धान्सहजमलिनान्निर्मलगुणा-
न्नकृत्या वैधेयान्करकलितशास्त्रार्थनिकरान्।
अशान्तान्संशान्तान्सपदि भजतः स्वं विरचय-
न्नयं श्रीस्वाध्यायो नरमखिलभद्राणि नयति ॥२॥





पन्द्रहवें वर्षमें पदार्पण



तमु स्तोतारः ! पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन ।
आस्य जानन्तो नामचिद् विवक्तन महस्ते विष्णो ! सुमतिं भजामहे ॥ (ऋ० १।१५६।३)

दिवो विष्णो ! उतवा पृथिव्याः महो ! विष्णो ! उरो अन्तरिक्षात् ।
हस्तौ पृणस्व बहुभिः वसव्यैः आप्रयच्छ दक्षिणात् आ उत सव्यात् ॥ (अथर्व० ७।२६।७)

सांस्कृतिक विजय-पथ पर अग्रसर होते हुए 'श्रीस्वाध्याय'को चौदह वर्ष पूरे हो गये। इन वर्षोंमें हमारी हार्दिक इच्छा रही है कि सांस्कृतिक दिग्विजयके महान् कार्यमें हमको शेष शयी भगवान् विष्णुकी सी बुद्धि सुमति प्राप्त हो, नई पीढ़ी वीर हो। भगवद् भजन करे विष्णु सदृश सुमति प्राप्त करे। और जिस प्रकार भगवान् विष्णुने भौतिकोन्नतिमूल धनकी अधिष्ठातृ लक्ष्मी को पैरोंकी ओर स्थान दिया तथा आध्यात्मिकोन्नति ज्ञान-विज्ञानकी अधिष्ठातृ सरस्वतीके अधिष्ठान ब्रह्मदेवको हृत्कमल में उच्च स्थान दे रक्खा है उसी प्रकार भारतीय संस्कृतिके सरस्वती समाराधक सुधी-समाजको भी चाहिए कि वे भगवती सरस्वतीकी अपने हृत्कमलमें वास्तविकरूपेण आराधना करें। लक्ष्मीके क्रीतदास न बनें, उसे अपने स्थान पर ही प्रतिष्ठित रक्खें। 'श्रीस्वाध्याय' ने अपने विगत चौदहवर्षके जीवन कालमें इसी आदर्शका पालन और प्रसार किया है।

इस विजयादशमीसे 'श्रीस्वाध्याय' पन्द्रहवें वर्षमें पदार्पण कर रहा है। यह वह पुण्य दिन है, जब मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रने असुरराज रावणका वध कर आर्य संस्कृतिकी पुण्य-पताका और विजय-वैजयन्ती श्रीलंका पर फहराई थी। उस पुण्य-पताकाका 'श्रीस्वाध्याय' 'ध्वज-धर' बने इसका हमने बराबर प्रयत्न किया। सीमित साधनों, नानाविध कठिनाइयों और प्रतिकूल परिस्थितियोंके कारण हम 'श्रीस्वाध्याय' को जिस रूप-रंगमें देखना चाहते थे, उसमें अब तक हम असमर्थ रहे हैं। भारतके स्वाधीन होनेसे हमारी कठिनाइयां कुछ न्यून हो गई हैं ऐसा हम आज भी अनुभव नहीं करते। देशमें अपनी प्राचीन संस्कृतिको जाननेकी इच्छा उत्पन्न हो रही है- यह एक शुभ लक्षण है। पर यह नृत्य संगीत तक ही अभी सीमित है। इस आकांक्षाने अभी गहराईमें प्रवेश नहीं किया है। संस्कृतके पठन-पाठनको आवश्यक मानते हुए भी हम अभी तक यह निर्णय नहीं कर सके कि हमारी शिक्षा प्रणालीमें संस्कृतका क्या स्थान हो। जब संस्कृतका स्थान ही देशकी शिक्षामें निश्चित नहीं हुआ तो यह कैसे आशा की जा सकती है कि ज्योतिषके अनुसन्धान और इसकी शिक्षा एवं इसके प्रसारमें सरकार किसी प्रकारकी सहायता करेगी। किन्तु 'श्रीस्वाध्याय'को इस बातका सन्तोष है कि उसके प्रयत्न व्यर्थ नहीं गये और ज्योतिषियोंने संगठनकी आवश्यकताको अनुभव किया है।

'श्रीस्वाध्याय' को मासिक बनाने और इसके विभिन्न अंगोंको सदैव पूर्ण करनेकी हमारी हार्दिक इच्छा आज भी अधूरी ही है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इसके लिये हमने प्रयत्न करना छोड़ दिया है। हम विश्वास करते हैं कि विष्णु भगवान् हमारे दक्षिण और वाम दोनों हाथों को वसुओंसे अवश्य भरेंगे। सहृदय पाठकोंसे भी हम प्रार्थी हैं कि वे इस महान् कार्यमें सहायक हों। 'श्रीस्वाध्याय' की शक्ति जितनी बढ़ेगी—उतनी ही उनकी सांस्कृतिक नवचेतनाकी शक्ति भी बढ़ेगी।

जीवनके इतने वर्ष बीत जाने पर अतीतका सिंहावलोकन करनेकी इच्छा होना स्वाभाविक है। हम आज परम सन्तोषके साथ कह सकते हैं कि हमने प्रारम्भमें अपने लिये जिन मर्यादाओंको निश्चित किया था उनको जान-बूझकर कभी भंग नहीं किया और हिन्दी पत्रकारिता क्षेत्रमें 'श्रीस्वाध्याय' ने जो गौरवपूर्ण परम्परा स्थापित की है—वह किसी भी पत्रके लिये स्पृहणीय हो सकती है। मंगल-

मय परम प्रभुसे हमारी यही विनम्र प्रार्थना है कि वह हमें बल और शक्ति दे कि भविष्यमें भी इस उज्ज्वल गौरवपूर्ण परम्पराको स्थापित रखें और इसको और उंचा करें।

किन्तु इसका श्रेय हमको नहीं है। इसका सारा श्रेय 'श्रीस्वाध्याय' की प्रेरक-शक्ति पूज्य आचार्यश्रीको है। पूज्य आचार्यश्रीकी सतर्क एवं स्नेह-भरी दृष्टिने हमको कभी अपने पथसे च्युत नहीं होने दिया। गंगा-जलके समान पवित्र और तुलसी-दलके समान पुनीत उनका आशीर्वाद हमारे लिये वरद-हस्त और रक्षा-कवच सिद्ध हुआ। 'श्रीस्वाध्याय' का अस्तित्व इसकी काया और आत्मा उनके ही कृपापूर्ण प्रसादका फल है। इस पन्द्रहवें नव-वर्षमें पदार्पण करते हुए 'श्रीस्वाध्याय' विनम्र भावसे उनके पवित्र चरणोंमें नत मस्तक है।

'श्रीस्वाध्याय' का आज तक जीवन उसके संरक्षकोंकी कृपाका फल भी है। हमारे लिये सबकी कृपा और प्रसन्नता आदरणीय है। पर इस अवसर पर 'श्रीस्वाध्याय'के मुख्य संरक्षक धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ महाराज दुर्गासिंहजी और सम्मान्य सहायक आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्रीनरेन्द्रनाथजी मोहन, श्री पं० विद्याधरजी राजपुरोहित, श्री पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, श्री भाई चूहरमल्लजी मुंजाल, श्री डा० श्यामलाल जी मित्तल और संस्थाके मनस्वी कर्मठ अध्यक्ष श्री पं०गोविन्दजी मिश्र महोदयका नाम विशेष रूपसे उल्लेख करना हम अपना कर्तव्य मानते हैं। संकटों, अड़चनों और कठिनाइयोंमें आप महानुभावोंने कभी अपना कृपापूर्ण हाथ नहीं खींचा है। 'श्रीस्वाध्याय' अपने इन सभी संरक्षकों सहायकोंके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना अपना कर्तव्य मानता है।

लेखकों दैवज्ञों कवियों और विचारकोंके ममतापूर्ण सहयोगके लिये 'श्रीस्वाध्याय' हृदयसे आभारी है। 'श्रीस्वाध्याय' अपने जीवनके इतने वर्षोंमें एक दिनके लिये भी विलम्बसे प्रकाशित नहीं हुआ। इसका श्रेय कृपालु लेखकों को ही है। समस्त लेखकों और कवियोंका भविष्यमें भी 'श्रीस्वाध्याय' कृपा-पात्र बना रहे, इसके लिये हम अहर्निश सचेष्ट रहेंगे, यह हम विश्वास दिलाना अपना कर्तव्य मानते हैं।

'श्रीस्वाध्याय' भारतीय संस्कृतिकी पुण्य पताकाका ध्वज धर है। उसका यह गौरव भविष्यमें और भी अधिक बढ़े इस हार्दिक कामनाके साथ हम नये वर्षमें प्रवेश कर रहे हैं। तीन डगोंमें तीनों लोकोंको मापनेकी सामर्थ्य रखने वाले 'वामनावतार' इसमें हमारे आदर्श हैं, पथप्रदर्शक हैं और निर्देशक हैं। हमारा लक्ष्य है—

इदं विष्णुः विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पांसुरे। (ऋ० १।२२।१७)

हम भी भारतीय संस्कृतिकी तीनों लोकोंमें विजय-वैजयन्ती फहरानेकी कामनाके साथ नववर्षमें प्रवेश कर रहे हैं। हम जानते हैं कि हमारी कामना "उद्बाहुरिव वामनः" के समान है। परन्तु हमें मंगलमय परम प्रभु और पूज्य आचार्यश्रीके आशीर्वादमें दृढ़ विश्वास और श्रद्धा है। इस विश्वास और श्रद्धाके बल पर नववर्षमें विश्वासके साथ पग बढ़ा रहे हैं। भगवान् हमें बल दें यही विनम्र प्रार्थना है।

विनीत :—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

शुभाशंसनम्

[कविकुलगुरु साहित्याचार्य महामहोपाध्य
श्री पं० शास्त्री खिस्ते]

सर्वार्थसाधनमनुत्तरमप्रमेय-
मप्राकृतं निजगुरोश्चरणाब्जयुग्मम्।
ध्येयं सदा शिरसि तत्प्रभवप्रसादा-
च्चित्ते स्फुरन्ति विमलाः सकलाः पदार्थाः॥ १॥
त्रिवेद हरदेवेन सुधिया सुकृतां कृते।
सम्पादितः 'श्रीस्वाध्यायः' सर्वत्र जयतु स्वयम्॥

सम्पादकीय विचारः—

शक्ति उपासनाका पावन पर्व

राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीस्तथा राष्ट्रसरस्वती।
सेवनीया प्रयत्नेन भोगमोक्षप्रदायिनी॥
—श्रीराष्ट्रालोक, का० ८३

१—राष्ट्रकाली, २—राष्ट्रलक्ष्मी तथा ३—राष्ट्रसरस्वती भेदोंसे शक्ति त्रिधा मानी गई है। राजनैतिक स्वातन्त्र्य-प्राप्ति एवं संरक्षणके लिए राष्ट्रकाली, आर्थिक स्वावलम्बनके लिए राष्ट्रलक्ष्मी तथा सांस्कृतिक स्वातन्त्र्य प्राप्ति एवं संरक्षणके लिए राष्ट्रसरस्वती रूपिणी शक्तिकी उपासना आवश्यक है। इसीलिए तो वेद मंत्रमें भी कहा गया है—

ॐ इडा सरस्वती मही तिस्रोदेवीर्मयोभुवः,
बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः। (ऋ १।१३।६)

सदा शक्तित्रयकी उपासना होती रहे इसीलिए ब्रह्म-वर्गके लिए राष्ट्र-सरस्वती, क्षत्रियवर्गके लिए राष्ट्रकाली एवं वैश्यवर्गके लिए राष्ट्रलक्ष्मीकी उपासना करते रहनेका महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया था।

प्रतिवर्ष प्रत्येक वर्ण अपनी शक्ति साधनाको उत्तरोत्तर उन्नत करता रहे—अपनी पूर्वकृत साधनाका परीक्षण करता रहे इसलिए शक्तित्रय उपासना क्रमको बढ़ाते रहनेके लिए ही १ श्रावणी, २ विजयादशमी, ३ दीपावली ये तीन महोत्सव मनानेका आयोजन किया गया था। किन्तु दुःखसे कहना पड़ता है कि सभी वर्ग अपने दायित्वको (शक्ति उपासनाको) भुलाकर स्वकर्तव्य पराङ्मुख हो रहे हैं। यों तो हमारे महान् स्वतन्त्र भारत राष्ट्रको सम्प्रति तीनों शक्तियोंकी उपासनाकी परम आवश्यकता है, पर उनमेंसे राष्ट्रकालीकी उपासना तो नितान्त वांछनीय है। यहां पर स्मरण रखना चाहिए कि भारतीय सभ्यता—आर्य-सभ्यता—का दूसरा नाम ही शक्ति-सभ्यता है, शाक्तधर्म और ब्राह्मणधर्म दोनों पर्यायवाचक हैं, जैसा कि कहा है—

सर्वे शाक्ताः द्विजाः प्रोक्ताः न शैवा न च वैष्णवाः।
आदौ देवीमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम्॥

जब-जब हमने अपने धर्म शक्ति उपासनाको छोड़ा तब-तब हमारा पतन हुआ। यह तो सर्वविदित ही है कि बौद्धधर्म शाक्तधर्मका विरोधी है। अब यदि आप अपने प्राचीन इतिहासके पन्ने उलट कर देखें तो स्पष्ट हो जायगा कि किस प्रकार शक्ति-उपासनासे पराङ्मुख हो जानेके कारण ही राष्ट्रोन्नति सहसा रुक गई थी। मौर्य साम्राज्य कितना विस्तृत एवं उन्नत हो गया था, पर ज्योंही अशोकने क्षात्र अथवा शाक्तधर्मको त्याग कर बौद्धधर्मकी शरण ली कि वह महान् मौर्य साम्राज्य सहसा समाप्त हो गया। किन्तु राष्ट्रने पुनः अपने आपको पहिचाना—भगवती महाकालीकी उपासनाको अपनाया—अश्वमेधयज्ञका पुनः प्रचार आरम्भ हुआ, फिर क्या था बातकी बातमें भारतने वह गौरवशाली समृद्ध एवं उन्नत युग देखा जिसे संसारके इतिहासमें 'भारतीय स्वर्णयुग'के नामसे स्मरण किया जाता है। पर सम्राट हर्षने फिर वही भूल की जो अशोक कर चुके थे, उन्होंने भी शाक्तधर्मकी अपेक्षा बौद्धधर्मको अधिक मान्यता दी और परिणामस्वरूप जैसा कि स्वाभाविक था हर्ष अन्तिम हिन्दू सम्राट् बन कर रह गये और भारत युगोंके लिए परतन्त्रता पाशमें आबद्ध हो गया।

इस प्रकार अपने इतिहासका सिंहावलोकन करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि महाकालीकी उपासना से विमुख हो जानेके कारण ही राष्ट्रको पराधीनताके दिन देखने पड़े थे। महाकालीकी पूजा या विजयादशमीका उत्सव हमारी राष्ट्रिय चेतना राजनैतिक स्वातन्त्र्यका जागृत प्रतीक है।

अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिए हमें फिर से सच्चे शाक्त, वास्तविक अर्थमें महाकालीके उपासक वा क्षत्रिय बनना होगा। बिना क्षात्र भावनाओंके राष्ट्र-उन्नति नहीं कर सकता। क्योंकि शाक्त—क्षात्र—धर्मके लुप्त हो जाने पर राष्ट्रका सर्वस्व ही नष्ट हो जाता है। इसीलिए भगवान् वेदव्यास कहते हैं कि—

मज्जेत्त्रयी दण्डनीतौ हतायां
सर्वे धर्माः प्रक्षयेयुर्विवृद्धाः ।
सर्वे धर्माश्चाश्रमाणां हताः स्युः
क्षात्रे त्यक्ते राजधर्मे पुराणे ॥

भगवान् श्रीकृष्णने भी संपूर्ण गीतामें एकमात्र क्षात्र धर्मका ही उपदेश दिया है—

'तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय ! युद्धाय कृतनिश्चयः'

यही गीताका सार अथवा प्राण है तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम तो क्षात्र धर्मके जाज्वल्यमान जागृत प्रतीक हैं, इसीलिए भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें 'रामःशस्त्रभृतामहम्' रूपमें स्मरण किया है ।

इन्हीं सब बातोंको देखते हुए ही इस युगके महान् योगी श्रीरामकृष्ण परमहंस और श्री स्वामी विवेकानन्दजी आदि मनीषियोंने महाकाली महाशक्ति माँ दुर्गाकी उपासना के लिए ही अपने आपको सर्वात्मना समर्पित कर दिया था ।

किन्तु हन्त ! भारतकी कैसी दुर्दशा हो गयी । राम और कृष्णके नाम लेवा क्षात्र धर्मके अनुयायी आर्य आज अपने कर्तव्यसे, शक्ति पूजासे अपने पूर्वजोंके आदर्शों एवं उपदेशों से विमुख हो भगवान् राम और कृष्णके कार्योंका अनुकरण करना तो कहीं दूर रहा केवल उनके स्वांग रचकर रावण की कागजी प्रतिमाओंको जलाकर अपने कर्तव्यकी इति-श्री समझने लगे हैं । अपनी पाशविक वृत्तियोंके 'बलिदान' व आततायियोंके बधके स्थान पर मूक निरीह पशुओं पर तलवार चला अपने करोंको कलंकित करनेमें वीरता और क्षात्र-धर्मका अनुभव करने लगे ।

प्रत्येक व्यक्तिका प्रधान कर्तव्य है कि वह अबसे अपनी मातृ-भूमिका सच्चा सैनिक वीर क्षत्रिय बनकर अपने कर्तव्य का पूर्णरूपेण पालन करनेका प्रण करे । भगवती महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वती रूपिणी शक्तिका उपासक बन अपने प्राचीन शाक्त (क्षात्र)धर्मका प्रचार करनेके लिए कटिबद्ध हो जाय, क्योंकि क्षत्रियत्वके जागृत होने पर ही हमारा स्वतंत्र राष्ट्र समुन्नत हो सकेगा, इस विजयादशमीके शुभ अवसर पर दशकन्धर रावण पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामकी विजयका स्मरण करते हुए शक्ति पूजाका यही वास्तविक संदेश हम अपने प्रेमी पाठकों तक पहुँचाना चाहते हैं ।

महाराणाका महाप्रयाण

आर्यकुल-कमल-दिवाकर हिन्दुआं सूर्य मेवाड़-महिमहेन्द्र प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रतापके वंशज राजस्थानके महाराजप्रमुख महाराणा श्री भूपालसिंहजी गत आषाढ़ शुक्ल १३ को ७२ वर्षकी आयुमें स्वर्ग सिधार गये ।

महाराणा साहब अपने समसामयिक नरेशोंमें सबसे वयोवृद्ध तो थे ही, अनुभव एवं देशभक्ति आदि गुणों में भी सबसे बढ़ चढ़कर थे । राजस्थानकी बड़ी रियासतों में सर्वप्रथम आपने ही अपने मेवाड़ राज्यको राजस्थान संघ में विलयकी स्वीकृति देकर महान् त्याग और देशभक्ति की भावनाका परिचय दिया था । फलतः आप राजस्थान संघके राजप्रमुख नियुक्त हुए । पश्चात् राजस्थानमें जयपुर आदि राज्योंके विलय होने पर आप महाराजप्रमुख के पद पर प्रतिष्ठित हुए । स्व० सरदार पटेल आपकी इस देशभक्ति भावनासे अत्यन्त प्रभावित थे । कहा जाता है कि देशके स्वतन्त्र होने पर कुछ नरेशगण पाकिस्तान के साथ भी गांठ-सांठ करने लगे थे । पर आपके प्रभाव से ही वे भारतमें बने रहे ।

स्व० महाराणा अत्यन्त धर्मप्राण शासक थे । आपका कोष दान धर्मके लिए सदा उन्मुक्त रहता था । यही कारण था कि महाराजप्रमुखके पद पर नियुक्त होने पर ५ लाख रुपया वार्षिक आपको अपनी पेंशनके अतिरिक्त दान आदि कार्योंके लिए अलग मिलते थे । श्रीस्वाध्याय-परिवारके साथ आपका हार्दिक स्नेह था । ऐसे भारतीय संस्कृतिके अनन्य उपासक महाराणाके उठ जानेसे राष्ट्र समाज और धर्मकी वस्तुतः अपार हानि हुई है ।

इस अवसर पर परमप्रभुसे स्वर्गीय आत्माकी शाश्वत शांतिके लिए प्रार्थना करते हुए स्वर्गीय महाराणा साहब के परिवारके प्रति श्रीस्वाध्याय-परिवारकी ओरसे हम हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं ।

आशा है कि स्वर्गीय महाराणाके सुपुत्र एवं सुयोग्य उत्तराधिकारी श्री महाराणा भगवतीसिंहजी भी अपने अनुरूप पदकी मर्यादाओं व परम्पराओंका पालन करते हुए भारतीय संस्कृतिकी रक्षाके लिए सतत तत्पर रहेंगे ।

—

द्वितीय पंचवर्षीय नियोजनका ढांचा

द्वितीय पंचवर्षीय नियोजनका ढांचा देखकर कोई वर्ग सन्तुष्ट नहीं है। सबके असन्तोषका कारण अलग अलग है। उद्योगपति और व्यवसायी इस कारण असन्तुष्ट हैं कि प्रथम पंचवर्षीय नियोजनमें प्रथम भागको पूरा करनेके बाद भी द्वितीय नियोजनमें उनका क्षेत्र संकुचित कर दिया गया है। शिक्षित देख रहे हैं कि १९६१ में भी आजके समान बेकारी बनी रहेगी और १ करोड़ या १२० लाख व्यक्तियोंको काम देनेकी पहले कही गई बातको अभीसे घटाकर ८० लाख कर दिया गया है, जबकि देशकी जनसंख्या १९७१ में ४५ करोड़ ३० लाख, १९८१ में ५१ करोड़ ६० लाख और २००० ई० में ६० करोड़ हो जायगी। समाज सेवक इस कारण असन्तुष्ट हैं कि १९६१ में भी संविधानमें दिया गया निर्देश कि ६ वर्षसे १४ वर्ष की आयुके सब बालक बालिकाओंको अनिवार्य और बाधित शिक्षा न दी जा सकेगी। समाजवादी आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था स्थापित करनेके उत्सुक व्यक्ति देखते हैं कि १९६१ में भी पूंजीवादका इस देशमें प्रभुत्व स्थिर रहेगा और आजकी आर्थिक विषमता दूर न होगी। प्रत्येकने इस पर अपनी अपनी दृष्टिसे विचार किया है। भारतकी आज की अवस्थामें क्या सम्भव है और कहां तक बढ़ा जा सकता है इस व्यावहारिक दृष्टिसे इस पर विचार नहीं किया गया है। फलतः इससे नियोजन-निर्माताओंको छोड़कर और कोई सन्तुष्ट नहीं है। क्योंकि जिसने इससे जो आशा बांध रखी हैं वह इससे पूरी नहीं हो रहीं।

प्रस्तावित ढांचा—

विभिन्न दृष्टिकोणोंको छोड़कर जहां सब एक मत है, पहले उन बातोंको देखना ही अधिक उचित होगा। दूसरे नियोजनका खाका इस प्रकार है—

	(करोड़ रु० में)
बिजली	४५०
खेती, सिंचाई व ग्रामसुधार	९५०
कारखाने और खान	११००
संचार और परिवहन	९५०
निर्माण, सामाजिक सेवायें और भण्डार	८५०

राष्ट्रिय क्षेत्रमें नियोजनका कुल व्यय ४३ अरब रु० होगा। वैयक्तिक अंचलमें २२०० करोड़ रु० होगा। कुल नियोजनका व्यय ५६ अरब है। इसमें वैयक्तिक अंचलका भाग केवल २२-२२ प्रतिशत है और सरकारी उद्योगोंमें विनियुक्त पूंजी ९० प्रतिशतसे कुछ कम होगी।

परन्तु इस विशाल पूंजीके विनियोगसे राष्ट्रिय आयमें पूर्व अनुमानके अनुसार ५ प्रतिशत प्रतिवर्ष वृद्धि न होगी, वरन् इससे कुछ कम होगी। काम भी १ कोटि या १ कोटि २० लाख जनोंको देना सम्भव नहीं होगा। कांग्रेस महासमिति इसको बनाये रखनेके विचारसे नियोजन व्ययको बढ़ाकर ५० अरब करनेके पक्षमें थी। किन्तु नियोजन कमीशनको यह राशि बहुत अधिक प्रतीत हुई। ४३ अरब रु० पूंजीका विनियोग करने पर भी १० अरब रु० के नोटोंकी बढ़ोत्तरी करनी पड़ेगी। यह होते हुए भी ८ अरबकी कमी बनी रहेगी। यह कमी कर लगाकर पूरी की जायगी। इस समय करोंसे राष्ट्रिय आयका ७ प्रतिशत सरकारको आय होती है। ८ अरब रु० की कमीको पूरा करनेके लिए राष्ट्रिय आयका ११ प्रतिशत करोंमें लेना पड़ेगा।

१९५१ से १९५६ तक विकासकार्यों में २० अरब रु० व्यय होने का अनुमान है। इस दृष्टिसे द्वितीय पंचवर्षीय नियोजन अधिक विशाल और साहसपूर्ण है। पहले नियोजनने दृढ़ नींव स्थापित कर दी है अतः अब आर्थिक विकास की साहसपूर्ण योजनाओंका प्रारम्भ करना सम्भव है। नवीन नियोजनकी सफलता इस बात पर निर्भर है कि राष्ट्रिय आयका कितना बड़ा भाग पूंजी निर्माणमें लगता है। १९५०-५१ में ६.२ प्रतिशत नयी पूंजीके रूपमें लगाया गया। इसके बादके दो वर्षोंमें नयी पूंजी-निर्माण का दर क्रमशः ६.७ और ६.८ प्रतिशत रहा। १९५०-५१ से १९५३-५४ के तीन वर्षोंमें हमारी राष्ट्रिय आयमें १२.१३ प्रतिशत वृद्धि हुई। पर बढ़ी आय कृषि क्षेत्रका परिणाम था। पूंजी निर्माणमें इसका कोई भाग नहीं लगा। जनसंख्याकी वृद्धिको ध्यानमें रखें तो हमारा प्रति-

व्यक्ति औसतन उत्पादन ८ प्रतिशत होता है। इसको देखते हुए दूसरा नियोजन वस्तुतः साहसपूर्ण है।

नियोजनका ध्येय समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना बताया गया है। प्रश्न यह है क्या यह लक्ष्य पूरा हो सकेगा? बीमा कम्पनियोंका राष्ट्रियकरण करने मात्रसे समाजवादी व्यवस्था स्थापित हो जायगी, यह समझना भारी भूल है। अन्न-वस्त्रकी दृष्टिसे देश स्वावलम्बी हो गया है। पर बेकारीकी समस्या पहलेसे भी अधिक उग्र हो गई है। नये ८० लाख जनोंको भी १९६१ तक काम मिल सकेगा, यह सन्दिग्ध है। क्योंकि इसके मसविदेमें यह कहा गया है।

"ऊपर जो कहा गया है कि १ करोड़ या ११० लाख लोगोंको काम दिया जायगा, इससे यह अर्थ न लगाना चाहिए कि इतने लोगोंको वेतन या मजदूरी पर काम मिलेगा। निस्संदेह इसके एक भागको अवश्य इस तरहका काम मिलेगा। पर इसका एक बड़ा भाग काम करनेका अवसर देना है।"

काम करनेका अवसर देनेका जो ढांचा ऊपर विचारा गया है वह एक बड़ी मात्रामें देश श्रमको संगठित करनेकी एजेंसियोंकी योग्यता पर निर्भर है। यदि यह सफलता पूर्वक न किया जा सका तो ये दोनों भारी समस्या उत्पन्न करेंगे। नियोजनको तब काम देने या पूंजी विनियोगकी दृष्टि से पूरा करना सम्भव न होगा। पुनः संगठनके काम पर बहुत अधिक बल देना सम्भव नहीं, क्योंकि वह नियोजन का आधार है और नियोजनके इस पहलू पर जितना अब तक ध्यान दिया गया है उससे अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

इससे स्पष्ट है कि कोसी तट बांधके लिए किस प्रकार स्वेच्छासे सहस्रों व्यक्तियोंने श्रमदान दिया, उस प्रकारका काम देनेकी नियोजन कल्पना करता है। इसका अर्थ है कि १९६१ में भारतके स्वाधीन होनेके १४ वर्ष बाद भी आजके समान बेकारी बनी रहेगी।

काम देनेका सरकारी विचार जो है, वह भी देखने योग्य है।

	(लाखों में)
खेती और सम्बन्धित काम	१५
खान और कारखाने	१७
घरेलू और इमारती काम	३०
संचार (डाक तार) रेलवे बैंक व बीमा	४
थोक व फुटकर व्यापार व परिवहन	२०
पेशे (वकालत डाक्टरी शिक्षा आदि)	
नौकरी (सरकारी व अन्य)	२४
कुल	११०

किन्तु यह पूरा न होगा. यह नियोजन कमीशन ही स्वीकार करता है। लोगोंको काम कहां मिलेगा? बड़े बड़े कल कारखानोंमें या कुटीर उद्योगों छोटे और मध्यम परिमाणके उद्योगोंमें? हमारे देशमें इस विषयमें तीव्र मतभेद है और दोनों पक्षोंकी बातमें सचाई है। संगठित उद्योगोंने अब तक २५ लाख जनोंको काम दिया है। उनकी शक्ति मर्यादित है। प्रश्न यह है जब जन-शक्ति बेकार पड़ी है, तब क्या उसका उपयोग न कर मशीन और यन्त्रका उपयोग करना ठीक होगा? दूसरी ओर विश्वके अग्रगण्य राष्ट्रोंमें स्थान पानेके लिए नहीं देशकी सुरक्षाके विचारसे भारी उद्योगोंकी स्थापना आवश्यक है। प्रधानमंत्री इन दोनोंमें कोई विरोध नहीं देखते। वे दोनोंमें समन्वय और समयोजन करनेकी इच्छा रखते हैं। वस्तुत: समयोजन होना ही उचित है। परन्तु प्रस्तुत नियोजन उपभोगकी सामग्रीके. उत्पादन और मुद्रास्फीतिको रोकनेके लिए कुटीर उद्योग पर भरोसा करता है।

उत्पादनमें इस समय सरकारी भाग ३ प्रतिशतसे भी कम है। यदि सब प्रकारके उत्पादन और काम मिला लिये जाँय तो सरकारी भाग ११ प्रतिशत आता है। देश के आर्थिक तन्त्रमें सरकारी उद्योगोंका महत्व अधिक हो इस दृष्टिसे सरकारी क्षेत्र बढ़ाया गया है। परन्तु मुख्य प्रश्न यह है क्या वह इस प्रदत्त भागको पूरा कर सकेगा? जो लोग इसको कर सकते हैं, क्यों न उनको ही यह दिया जाय और उनको करों और नियंत्रणों द्वारा वशमें रखा जाय? राज्य बैंकके गवर्नर डा० जानमथाईने यह उपाय सुझाया है। निजी क्षेत्र व अंचल यदि हाथ पांव बांध देने पर भी सरकारके आदेशके अनुसार कार्य करनेको तैयार हो तो क्यों न भारी उद्योगोंका क्षेत्र उनके लिए खुला छोड़ दिया

जाय ? जब निजी क्षेत्रका लोभ नहीं किया जा रहा जो कि समाजवादी व्यवस्थाके लिए आवश्यक है—तो उनका क्षेत्र सीमित करनेका कोई अर्थ नहीं रहता। प्रथम नियोजन कालमें सरकारने जिन उद्योगोंकी स्थापनाका उत्तरदायित्व लिया था, उसको भी वह पूरा नहीं कर सकी है। इसके विपरीत वैयक्तिक अंचल अपना भाग पूरा करनेमें सफल हुआ है। इस अवस्थामें उसका क्षेत्र संकुचित करना दूरदर्शितापूर्ण नहीं कहा जा सकता।

कुटी उद्योगों पर हम भरोसा नहीं कर सकते। इसके लिए जिस विशाल एवं विस्तृत संगठनकी आवश्यकता है उसका इस समय सर्वथा अभाव है। उपयुक्त मात्रामें उपभोगकी वस्तुओंके उत्पादनके वास्ते इन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। घरेलू और कुटीर-उद्योगोंको संरक्षण मिलना चाहिए, पर जापानके समान संगठनके अभाव के कारण हम उन पर पूर्ण भरोसा नहीं कर सकते। संरक्षण पाकर भी हाथ करघा देशकी वस्त्र आवश्यकता पूर्ण करनेमें असमर्थ है। जापानमें साइकलें बनाना सम्भव है, क्योंकि वहाँ घरेलू उद्योगोंका व्यापक संगठन है। उनके लिए हाटकी व्यवस्था है। हमारे देशमें इन दोनोंका अभाव है। इस विषयमें व्यापार उद्योग मंडल द्वारा उठाई गई आपत्तियां यथार्थ हैं और उनमें पर्याप्त सत्यांश है। गांधीजी मशीनोंके विरुद्ध थे, इस भावनाके वश होकर आवश्यकतासे अधिक उन पर भरोसा न करना चाहिए।

कुटी-उद्योगोंके विकासके लिये २०० कोटि रुपये दिये गये हैं। नगरोंमें और नये ३० लाख घर बनाने की बात कही गई है। पर देहातमें भी घरोंके बनानेकी आवश्यकता है। इस विषयमें नियोजन मौन है। अक्टूबर १९५४ तक प्रथम नियोजनके अंतर्गत १०००० मकान बनाये जा सके हैं। इस अवस्थामें क्या आशा की जा सकती है कि दूसरे नियोजन कालमें तीस लाख घर बनाये जा सकेंगे ? आज आवश्यकता है कि कमसे कम १ करोड़ और मकान बनानेकी योजना बनाई जाय। सबको काम देनेकी दृष्टिसे भी यह आवश्यक है।

प्रथम नियोजनकालके अंतमें ६ से १४ वर्षकी आयु तकके ४० प्रतिशत छात्र और छात्राएँ स्कूलोंमें शिक्षा पा रहे होंगे। दूसरे नियोजन कालमें यह संख्या प्रतिशत ६० प्रतिशत पर पहुंच जायगी। इसका अर्थ है कि शिक्षा पाने और स्कूल जाने योग्य ४० प्रतिशत फिर भी १९६१ में बचे रहेंगे। यह स्मरण रखना चाहिए कि संविधानने सरकारको निर्देश दिया है कि दश वर्षोंमें १९६० तक ६ से १४ वर्ष तककी आयुके बालक बालिकाओंको निःशुल्क और बाधित शिक्षा देनेकी व्यवस्था होनी चाहिए। इस दृष्टिसे द्वितीय नियोजन संविधानकी आशाको भी पूरा नहीं करता।

१९५३-५४ में हस्पतालोंमें विस्तारोंकी संख्या ११२००० थी। १९६०-६१ में उनकी संख्या २५०,००० हो जायगी। इसी कालमें पञ्जीबद्ध डाक्टरोंकी संख्या ६५००० से बढ़कर ८०००० हो जायगी। इसका अर्थ है कि प्रति १५०० जनों के पीछे हस्पतालमें एक बिस्तर होगा और ६००० व्यक्तियों के लिए एक डाक्टर होगा। सरकार किस चिकित्सा प्रणाली को प्रोत्साहन देगी इस विषयमें कुछ नहीं कहा गया है।

वनस्पति घीके पक्षमें देशकी साधारण जनता नहीं है पर इसके उत्पादनमें ३३ प्रतिशत वृद्धि की जायगी। शुद्ध घीमें इसके कारण मिलावट होती है और वह इससे और अधिक बढ़ेगी। दूधका उत्पादन बढ़ानेकी आवश्यकता है। कमसे कम इसमें ५० प्रतिशतकी वृद्धि आवश्यक है।

नियोजनकी पूर्ति लोकतन्त्रात्मक प्रणालीसे की जायगी। इसका अर्थ है कि इसकी पूर्णता और सफलताके लिए जनता का अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है। नियोजनका वर्तमान रूप क्या जनतामें इसके लिए आवश्यक उत्साह और प्रेरणा उत्पन्न करेगा ? पहले नियोजन कालमें जनसहयोग अपेक्षित मात्रामें नहीं मिला। क्योंकि इसके लिए आवश्यक व्यापक संगठनका अभाव था। क्या इसकी पूर्ति दूसरे नियोजन कालमें हो सकेगी ? इस प्रश्नके उत्तर पर नियोजनकी सफलता निर्भर है।

—

वस्तुस्थिति क्या है ?
सुखी कौन ?

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

सुखी शब्दके दो अर्थ होते हैं, सुख जिसका है वह और सुख जिसमें है वह। सुख किसका नहीं है ? और किसमें नहीं है ? इसका निर्णय यदि हो जाए तो ज्ञात हो जायगा कि सुख किसका है और किसमें है। संशय भी और निर्णय भी दोनों ही काल्पनिक होते हैं। एकको छोड़ कर सभी काल्पनिक हैं। और जब सभी काल्पनिक है तो यह भी निर्णीत ही है कि सुख भी काल्पनिक ही है। और जब सुख काल्पनिक ही है तो उसका सम्बन्ध चाहे जिसके साथ जोड़ा जा सकता है और इच्छाऽनुसार तोड़ा भी जा सकता है। तोड़ना और जोड़ना इन दोनोंका कर्तृत्व चेतनमें है, जड़में नहीं। जड़ अशक्त है और चेतन शक्त। जीव काल्पनिक चेतन है और परमात्मा स्वाभाविक। बोध चेतनको होता है जड़ को नहीं। सुख किसका है और किसमें है ये दोनों बोध जीवको होते हैं, अतः कहना पड़ेगा कि जीव ही सुखी हो सकता है। जीव सर्वदा आत्म-समृद्धिका अभिलाषी है। यह उसका स्वभाव है, इसीलिए किसी पदार्थकी प्राप्तिको अनुकूल मानता है और किसीके त्यागको। और दोनोंसे सुखी होता है। त्याग हो अथवा ग्रहण, दोनोंमें अपनी इच्छाके अनुसार अनुकूलताकी भावना कल्पित कर 'सुखी हूं' ऐसा अनुभव करता है। 'सुखी है' 'सुखी हो' ये बोध थोड़े अपेक्षाकृत दूर होने पर भी होते चेतन को ही हैं। इसीप्रकार इच्छानुसार प्रतिकूलताकी भावना कल्पित कर उनके त्यागको अनुकूल मान सुखित्वका अनुभव किया जाता है। ऐसे ही आत्मरस समृद्धिके लिए ही प्रतिकूलकी प्राप्ति और अनुकूलके वियोग से दुःखिताकी कल्पना करके सुखित्वका अनुभव किया जाता है। यह सारा ही काल्पनिक है। इसीलिए यह क्रीड़ा है। देव चेतन होता है। काल्पनिक चेतन काल्पनिक देव है। अनंत देवोंकी कल्पना करके अनन्त प्रकारसे सुखोंकी समृद्धि करता हुआ यह महान् अहम्महादेव अपने आत्ममहारससे सुखी है और वस्तुतः सुखी है। इसीका सुख है और इसीमें सुख आत्माऽतिरिक्त जब वस्तु ही नहीं तो आत्माको छोड़ सुखी भी कौन अन्य हो सकता है ? हाँ, जीव भावमें यही सुखी और दुःखी अपनेको मानता है। देशकाल और वस्तु सभी आत्मानन्दके लिए कल्पित किया गया है, इसीलिए सभी जीवोंमें सुखित्व निरन्तर अनुभूत नहीं होता। मैं सुखी हूँ यह जाना जाता है इसीलिए यह ज्ञानसे छोटा है। सम्पूर्ण ज्ञान जिस ज्ञानमें आते हैं वह सबसे बड़ा ज्ञान है, उसे उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता ! वही महान् आत्मा महादेव है। अब पाठक वस्तुस्थिति जान गए होंगे। इस बातको हमारे 'श्रीआत्मविलास' में हमने यों लिखा है—

सुखं दुःखं च तत्तस्य यथा येन प्रकल्पितम्।
परमार्थतया स्वात्माऽतिरिक्तं वस्तु नास्ति हि॥

सुख और दुःख काल्पनिक है अतएव जिसने जैसा कल्पित कर लिया उसका वह सुख दुःख वैसा बन जाता है। परमार्थ रूपसे देखने पर ज्ञात होगा कि अपने आप आत्मस्वरूप को छोड़ कर और दूसरा कोई पदार्थ ही वस्तुतः नहीं है।

शिवमस्तु

सदुपदेश

गृहस्थ-धर्म बहुत पवित्र है। उसका विवेकपूर्वक पालन करो। झूठे चमत्कारोंके चक्करमें न आओ। चमत्कार अपने अन्दर ही है। अपने कुल, स्वभाव, देश, भावनाके अनुसार भगवान्‌के किसी भी साकार, निराकार या अवतारको इष्ट बनाकर उपासना करते रहो। देवता पितरोंका पूजन करते रहो। अतिथिका सम्मान करो। सबके प्रति सद्भाव रखो। उच्च-चरित्र और सादा व्यवहार रखना; स्वदेशके प्रति विशेष प्रेम रखना और सब प्रकारके व्यसनोंका बहिष्कार करना चाहिए। अपनी कमाईमें से दशवां भाग दान-पुण्य करना चाहिए। पितृ श्राद्ध करते रहना चाहिए।

सूर्योदयसे पहले उठ जाओ। शौच, स्नान, सन्ध्या-वन्दनादि नित्य-कर्म करके अपनेसे बड़ोंका अभिवादन, नमस्कार, नमस्ते, पायलागन, राम-राम, जय श्रीकृष्ण, जयशङ्कर आदि जो जहां मिले अवश्य करना चाहिए।

प्राचीन राष्ट्र-ध्वज

[ले०—श्री पं० गणेशदत्तजी "इन्द्र" विद्यावाचस्पति]

ध्वज कोई आजकी वस्तु नहीं। मानव-सभ्यताके साथ ही इसका प्रादुर्भाव हुआ है। ध्वज शासकीय चिह्न है। आदिकालमें शासक द्वारा प्रयुक्त पटचिन्ह विशेष, जो दण्ड पर लगा कर घोषित किया जाता था, वह राष्ट्र-ध्वज माना जाता था। ध्वज राजा और प्रजा, दोनोंका प्रतीक माना गया है। इसमें दोनोंका स्वाभिमान, दोनोंका तेज, दोनोंका वर्चस्व और दोनोंका गौरव समान रूपसे निहित रहता है। हमारा सबसे पहला ध्वज किस वर्णका, कैसा और किन चिन्ह विशेषोंसे अंकित होता था? यह बताया जा सकना कठिन है। अनुमान यही है कि वस्त्र बुननेकी कलाके उदयके साथ जो ध्वज निर्माण हुआ वह निस्सन्देह श्वेत रंगका होगा। प्राचीन भारत वासियोंको सफेद वस्त्र बहुत पसन्द था। वे इसे प्राकृतिक, शान्ति, सन्तोष, और प्रेमका सूचक मानते थे। आजकल भी सफेद झंडा शान्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

विश्वके सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदमें ध्वजका विस्तृत वर्णन मिलता है। अनेक मन्त्र ध्वज परक हैं। वेदने ध्वजको बड़ा आदरणीय श्रद्धास्पद और सम्मान्य कहा है—

"आदित्यारुद्रावसवः सुनीथाद्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम्।
सजोषसो यज्ञमवन्तुदेवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम्
(ऋग्वेद १।८।८) ॥

इस मन्त्रमें कहा गया है कि 'नागरिक हिंसारहित महान्-यज्ञके झंडेको ऊंचा करते हैं।' इसमें हिंसारहित (अध्वरस्य) शब्द विशेष विचारणीय है। शान्तिके कार्यमें सुख समृद्धि तथा ऐश्वर्यके वृद्ध्यर्थ इसका उपयोग किया जानेकी अनुमति है। कहा है—

"यदूर्ध्वास्तिष्ठा द्रविणेह धत्तायद्वा क्षयोमातुरस्या उपस्थे। [ऋग्वेद]

हे ध्वज! मातृभूमिकी गोदीमें उत्कृष्ट होकर स्थित हो और राष्ट्रमें ऐश्वर्यकी वृद्धि कर। वेद जिस बात को कहता है; आज अपनी वाणीमें कोटि कोटि कण्ठोंसे उसीको हम समवेत दोहराया करते हैं—

"झंडा ऊंचा रहे हमारा विजयीविश्व तिरंगा प्यारा।"

इससे आगे ध्वजका युद्ध भूमिमें ले जाने और उसके नीचे अपने मनोवांछित उद्देश्य-पूर्तिके लिए मर मिटनेके आदेश मिलते हैं।

"उत्तिष्ठत सं नह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह।
सर्पाइत रजना रक्षांस्यमित्राननुधावत।"
[अथर्व ११।१०।१]

अर्थात्—शत्रुओं पर शस्त्रवर्षणमें उदार वीरों, आप अपने झण्डे सहित खड़े हों और युद्धके लिए तैयार हो जाओ। वेदने झण्डेका रंग लाल बताया है—

"अरुणैः केतुभिः सह।" [अथर्व]

हे सेनापति! तुम लाल झंडेके साथ बढ़ो और इतना घमासान युद्ध करो कि—

"अवायन्तां पक्षिणो ये वयांस्यन्तरिक्षे दिवि ये चरन्ति।
श्वापदो मक्षिकाः सं रभन्तामामादो गृध्राः कुणपे रदन्ताम्॥"

आकाशमें ऊंची उड़ने वाली चीलें, गीध, कौवे आदि पक्षी तथा पंजों वाले मांसभोजी कुत्ते, स्यार, आदि और मक्खियां लाशों पर चोंचों और नाखूनोंसे प्रहार करें।

अपने राष्ट्रीय झण्डेके सम्मानमें प्राणोत्सर्ग तकके लिए सदैव समुद्यत रहनेका वेदमें स्थान स्थान पर वर्णन है। "इस की शान न जाने पावे, चाहे प्राण भले ही जावें" की भावनाको परिष्कृत किया गया है। वेद कहता है, मनुष्यों!

"केतुं कृण्वन्न केतवे" [चारों वेद]

अर्थात्—ऐसे व्यक्तियों और राष्ट्रोंको जो ध्वज रहित हैं उन्हें अपना झण्डा दो अर्थात् राष्ट्रध्वजके नीचे उन्हें लाकर खड़ा करो। और कहा है—

"केतुं कृण्वन्दिवस्परि विश्वारूपाभ्यर्षसि।
समुद्रः सोमपिन्वसे। [ऋग्वेद ९।६४।८]

अर्थात्—आकाशमें लहराता हुआ राष्ट्रध्वज जिस प्रकार हृदयको आनन्द पहुंचाता है, हे वीर! तू उसी प्रकार हमें भी तृप्त कर। राष्ट्रध्वज, समस्त राष्ट्रका होता है। यह समाज, जाति, धर्म, दल और प्रान्त विशेषका प्रतिनिधित्व नहीं करता। वेद कहता है—

हिन्वानोवाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि।
अक्रान्देवो न सूर्यः [ऋग्वेद ६।६४।६]

अर्थात्—हे राष्ट्रध्वज! तू विविध धर्मानुयायियों द्वार सम्मान प्राप्त है। तेजोमय सूर्यकी भांति प्रकाशित होकर विश्वमें स्थान प्राप्त कर।

"केतुं यज्ञानां विदथस्य साधनं विप्रासो अग्नि-
महयन्त चित्तिभिः।" [ऋग्वेद ३।३।३]

अर्थात्—बुद्धिमान् लोगोंको, राष्ट्र-सेवा-यज्ञके प्रतीक ध्वजके प्रति अपनी सेवाएँ प्रदर्शित करते हुए उसका अत्यन्त आदर करना चाहिए। राष्ट्रके प्रत्येक व्यक्ति द्वारा, चाहे वह किसी विचारधारा, धर्म, जाति, वर्ण, प्रान्त तथा पार्टी विशेषका हो, उसका कर्तव्य है कि शासन द्वारा घोषित तथा जनता द्वारा सम्मानित राष्ट्रध्वजका पूर्णरूपसे सम्मान करे। राष्ट्रध्वजके नीचे खड़े होकर सब लोग अथर्ववेदके द्वादश कांडके प्रथम सूक्तके ६३ मन्त्रोंका राष्ट्रगीतके रूपमे गान करें जो—

"सत्यं बृहद्दतमुग्रं दीक्षातपो-
ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ती।" से आरम्भ होकर
"भूमे मातर्निधेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवाकवे, श्रियां माधेहि भूत्याम्॥"

के साथ समाप्त होता है। वैदिक युगमें राष्ट्रध्वजके सम्मान सूचक कुछ वेदमन्त्रोंको यहां दिया गया है। आगे चलकर राष्ट्रध्वजको जनता "इन्द्रध्वज" नामसे सम्बोधित करने लगी थी। पुराणोंमें ध्वजके लिए कहा गया है—

"तं विष्णुतेजो भवमष्टचके रथेस्थितं
भास्वति रत्नचित्रे।
देदीप्यमानं शरदीय सूर्यं ध्वजं
समासाद्यमुमोद शक्रः।

कहा गया है कि, विष्णुने इन्द्रको एक ध्वज दिया था। अर्थात् राष्ट्रध्वजकी रूपरेखा, आकार प्रकार विष्णुने तैयार करके इन्द्रको दिया था जिसे वह अपने रथ पर भी छोटे आकारमें लगाता था।

मध्य युगमें तो ध्वज निर्माणके सम्बन्धमें विद्वानों द्वारा विधान बना दिया गया था। वाराही संहीतामें लिखा है—

"तस्यविधानं शुभकरण दिवस नक्षत्र मंगलमुहूर्त्तैः।
प्रस्थानिकैर्वनमियाद्दैवज्ञः सूत्रधारश्च।"

अर्थात्—राष्ट्रध्वजके लिए दंडकाष्ठ लानेके हेतु स्वयं राजा को शुभ समयमें ब्राह्मण मन्त्री और बढ़ईको साथ लेकर जङ्गलमें जाना चाहिए। जङ्गलमें पहुंच कर ध्वजदंडके हेतु लकड़ी पसन्द करना आवश्यक था। वर्जित- लकड़ीके सम्बन्धमें कहा है—

"कुब्जोर्ध्व शुष्ककण्टकि वल्लीवन्दाक युताश्च।
बहुविहगालय कोटर पवनानल पीड़िताश्च ये तरवः।
ये च स्यु स्त्रीसंज्ञा न ते शुभा शक्रकेत्वर्थे।"

आड़ी तिरछी, सूखी, कांटे वाली, जिस पर बेलि लिपटी हो, जिसमें पक्षियोंके घोंसले बहुत हों, जिसमें कोटर हों, जो अग्नि और वायुसे खराब हो गई हो ऐसी लकड़ी ध्वज के लिए न लें और स्त्रीलिंग नाम वाले वृक्षकी लकड़ी भी कदापि न लें। ध्वजके निमित्त प्राचीन समयमें अर्जुन वृक्ष की लकड़ी विशेषतः प्रयुक्त होती थी। इसके अभावमें अशोक कदम्ब, आम्र और शाल्मलि आदि वृक्षोंकी लकड़ी ली जाती थी।

जंगलमें ध्वजके योग्य वृक्ष देखकर राजा उस वृक्षकी सायंकालमें पूजा करता था। अन्तमें राजा वृक्षको सम्बोधित कर कहता था—

यानीह वृक्षे भूतानि तेभ्यः स्वस्ति नमोऽस्तुवः।
उपहारं गृहीत्वेम क्रियतां वासपर्ययः।
पार्थिवस्त्वांवरयते स्वस्तितेऽस्तु नगोत्तमः।
ध्वजार्थं देवराजस्य पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

दूसरे दिन प्रातः शुभवेलामें बढ़ई उसे काटता है। काटनेमें बड़ी सावधानी बरती जाती थी। वृक्ष कटने पर शुभ दिशामें ही गिरे, इस बातका ध्यान रक्खा जाना आवश्यक था। कट जाने पर उसे शाखा और पत्तोंसे रहित कर ले, उसकी छाल निकालनेके हेतु कई दिनों तक पानीमें पटक रखते थे। छाल जब गल जाती तो उसे हटाकर और सूत्र लगाकर सीधा बनाते। तैयार हो जाने पर उसे बैलगाड़ी

में रखकर नगरमें जाया जाता। उस दिन राजधानी खूब सजाई जाती। नृत्य, गीत, वाद्य, दीपावली, नाटक, खेल तमाशोंका आयोजन होता था। भाद्रमासकी श्रवण नक्षत्र युक्त द्वादशीके दिन ध्वजका पूजार्चन होता और चौथे दिन बड़े समारोहपूर्वक उसे निर्दिष्ट स्थान पर प्रस्थापित किया जाता था।

यह ध्वजदण्ड अट्ठाईस हाथ लम्बा और अनुपातानुसार मोटा होता था। ध्वज वस्त्रकी लम्बाई बारह हाथ और चौड़ाई आठ हाथ होती थी। इस कपड़े पर चिन्ह विशेष भी होते थे, जो समयानुसार बदलते रहते थे। आर्यों के ध्वजमें स्वस्तिक अवश्य रहता था। विक्रमकाल तक ध्वजमें स्वस्तिक होनेके प्रमाण मिलते हैं।

राष्ट्रका एक ही ध्वज होता है, और होना भी एक ही चाहिए। जिस देशमें ध्वज अनेक होते हैं, उसमें सुख शान्ति और उत्कर्षका स्थायित्व कठिन हो जाता है। एक आराध्य देवकी भांति ध्वज भी एक ही होना राष्ट्रके अभ्युत्थानका सूचक है। महाभारत कालमें प्रत्येक राज्यका ध्वज भी अलग था। ध्वजोंका रंग और उनपर अंकित चिन्ह भी विभिन्न थे। कुरुक्षेत्रके समरांगणमें अनेक देशों और प्रान्तोंके राजा इकट्ठे हुए थे। उनके ध्वज भी विभिन्न प्रकारके थे। अर्जुनके ध्वज पर वानरका चिन्ह था, पितामह भीष्मका ध्वज सिंह पंजे वाला था तो द्रोणाचार्यके ध्वजमें कमंडलुका चिन्ह चित्रित था। इसप्रकार प्रत्येक देशके राजा का अपना चिन्ह पृथक् था। प्रत्येक महारथी, अतिरथी अपने रथ पर अपने चिन्हका ध्वज लगाए समरभूमिमें रणोद्यत था। विविध भांतिके ध्वजोंका राष्ट्रमें होना अहितकर होता है, इसका प्रमाण कुरुक्षेत्रका महाभारत युद्ध हमारे सामने है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रका सर्वमान्य ध्वज एक ही होना चाहिए। देशकी समृद्धि, सुख, शान्ति, अभ्युदय और बलके लिए एक ही ध्वज अपेक्षित है। विविध प्रकारके, अनेक ध्वजोंकी कल्पना और निर्माण देशके लिए कदापि सुखकर नहीं हो सकता। ध्वजोंकी विविधता राष्ट्रके भावी अमंगल एवं अनिष्टकी सूचक है। शासन और जनताको संकटसे बचानेके लिए एक ही ध्वज को अपनाना श्रेयस्कर है। वेद कहता है—

"देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम्।"

भले आदमी अहिंसाके प्रतीक राष्ट्रध्वजको ऊँचा उठाते हैं, जिस ध्वजके नीचे हिंसाकी भावनावाले लोग एकत्र हों उसे राष्ट्रध्वज होने या कहलानेका भी अधिकार नहीं। राष्ट्रका ध्वज तो सत्य, अहिंसा, त्याग और परोपकारकी भावनाका सूचक होना चाहिए।

गम्भीर रूपसे विचारणीय लेख—

भौतिक प्रगतिका यह उत्कृष्ट स्वरूप !

[आजसे शतियों पहले हमारे देशकी यात्राके लिए आए हुए फाहियान हुएनसांग आदि यात्रियोंने हमारे देशके सम्बन्धमें कहा था—"भारत देश समृद्ध है। जनता सुखी है—सन्तुष्ट है। वहां चोरियां नहीं होतीं। सदाचार और सचाईका बोलबाला है।" किन्तु आजके यात्रीके विचार इससे सर्वथा विपरीत होंगे।]

हम प्रतिदिन, प्रति घण्टे ही नहीं अपितु प्रति मिनट और प्रति पल आगे बढ़ते जा रहे हैं। हमारा यह अभियान अप्रतिहत है। प्रतिक्षण विज्ञान प्रगति करता जा रहा है। नवीनतम आविष्कार नित्यशः हो रहे हैं। कल जो असम्भव था वह आज सम्भव सत्य बन गया है और आज जो असम्भव प्रतीत होता है वह कदाचित् कल सत्यका रूप धारण कर लेगा।

आजसे ६८ वर्ष पहलेकी बात है। महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगौरके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगौरको एक बार कलकत्तेसे काशी जाना पड़ा। उस समय भारतमें रेलवेकी सुविधा न थी, अतः उन्हें नौका-यात्रा करनी पड़ी। काशी पहुँचनेमें उन्हें ४५ दिन लगे और नौकाके किरायेके रूपमें सौ रुपये देने पड़े। इसके कुछ ही दिन बाद रेलवेका आगमन इस क्षेत्रमें हो गया; एतदर्थ पुनः एक बार जब महर्षिको कलकत्तेसे काशी जानेको आवश्यकता हुई, तब रेलवेकी ही यात्रा की। रेलवेने जब मात्र १५ घण्टे और ६॥-) में ही उन्हें आराम और सुविधासे काशी पहुंचा दिया, तब महर्षि महोदय विज्ञानके इस आविष्कार पर मुग्ध हो गए। उनके विचारमें यह आविष्कार ही आश्चर्यजनक था, किन्तु आज वह समय भी न रहा। वायुयान जैसे वेगगतिवान् वाहनकी तुलनामें रेलवेकी गति आज आश्चर्यजनक न रह गई। आजसे कुछ वर्ष पूर्व मोटरमें बैठकर आने-जानेका सौभाग्य राजा महाराजाओंको भी प्राप्त न था। आज साधारण मानव भी अल्पमूल्यमें ६० सीट वाली मोटरमें यात्रा करनेके लिए समर्थ है। रेडियो, टेलीफोन और टेलीविजन जैसे आविष्कारोंके फलस्वरूप आजका मानव सहस्रों मील दूरसे बोलते हुए मनुष्यकी बातें सुन सकता है और उसके साथ बातचीत भी कर सकता है। इतना ही नहीं अपितु वह उसे देख भी सकता है। अनेक बुनकर साथ मिलकर अनेक दिनोंमें जितना कपड़ा तैयार नहीं कर सकते, उतना कपड़ा आज एक यन्त्रकी सहायतासे एक मिल-मजदूर एक दिनमें प्रस्तुत कर सकता है। हलसे खेती करने वाले किसानको एक एकड़ खेतको जोतनेमें एक दिन लग जाता है। यही किसान ट्रैक्टरकी सहायतासे एक घण्टेसे भी कम समयमें इस खेतको जोत सकता है। आज तो वायुयानोंकी सहायतासे खेत बोये भी जाते हैं। यन्त्रोंने ऐसे अनेकशः आश्चर्योंका सर्जन किया है।

कलके मानवने जिसकी कल्पना भी की न थीः वह बात आज मूर्तिमान् बन गई है। ऊंचे आकाशमें उड़ने, गहरे जलमें भ्रमण करने, चन्द्रलोककी यात्रा करनेकी बातें भूतकालीन मानवके लिए स्वप्नवत् थी, किन्तु आज हम उन्हें प्रत्यक्ष देख रहे हैं। प्राकृतिक वर्षा न हो, तो कृत्रिम वर्षा की जा सकती है। प्रकृति स्वासोच्छ्वासकी क्रिया बन्द कर दे तो आक्सिजनसे कृत्रिम प्रयोगों द्वारा श्वासोच्छ्वास क्रियाका संचालन स्थिर रखा जा सकता है। गलेमें घाव या कैन्सर हो जाय तो पेटमें छेदकर सीधे खाद्य पहुंचानेका आश्चर्यजनक आविष्कार हो चुका है। आज एक मानवका रक्त दूसरे मनुष्यके शरीरमें प्रविष्ट किया जा सकता है। मृतप्राय मनुष्यकी आंखें निकालकर जीवित मानवको नेत्रदान करनेके प्रयोग सफलताका वरण कर चुके हैं। मानवने विज्ञानकी सहायतासे अनेक चमत्कारोंका सर्जन किया है। इन चमत्कारोंकी गणना करना सम्भव नहीं, कलका मानव इनसे वंचित था, किन्तु हमें प्राप्य हैं। विज्ञानकी सफलताका कोई पार नहीं, हम अत्यधिक आगे बढ़े। हमने बहुत अधिक प्रगतिकी। हाँ, हाँ, हमने प्रगति की, विज्ञान बहुत अधिक आगे बढ़ा।

मानवने नये नये आविष्कार कर अत्यधिक प्रगति की। समय और शक्ति बचानेके लिए अनेक यन्त्रोंका निर्माण किया, किन्तु सभी जानते हैं कि हमारे प्रत्येक कार्य और हमारे जीवनका अन्तिम ध्येय है जीवनमें सुख सुविधा और शान्ति प्राप्त करना। अतः मानव और मानवके विज्ञान की बहुमुखी प्रगतिने मानव जातिको कितनी अधिक शांति और कितना अधिक सुख दिया है। इसका हिसाब निकालने का प्रलोभन स्वाभाविक है। प्राचीन कालमें वर्तमान प्रगतिशील आविष्कारोंमेंसे एकका भी अस्तित्व न था। उस समय वायुयान न थे, मोटरें भी न थीं। हमारे पास आज यह सब कुछ है। फिर भी क्या हम अपने पूर्वजों की अपेक्षा अधिक सुखी हैं? हमारे दिन-प्रति दिनके जीवन में उनके जीवन जैसी विशालता और आराम है? वेगवान् वाहनोंका आविष्कार कर हमने अपना वेग बहुत बढ़ा दिया है, इसीलिए समय बहुत बचाया है, फिर भी पर्याप्त आराम करनेका समय क्या हमारे पास है?

हमारे पूर्वज बैलगाड़ियों और रथों पर बैठकर यात्रा करते थे। बम्बईसे कलकत्ता आदि दूरवर्ती क्षेत्रोंमें पहुंचने में उन्हें लगभग दो मास लगते। आज वायुयानकी सहायतासे हम इतने सुदूरवर्ती स्थान पर मात्र छः सात घण्टों में ही पहुँच सकते हैं। हम कितना अधिक समय बचाते हैं। किन्तु फिर भी हमारे पूर्वज घरकी चौपालमें बैठकर आनन्दसे बातें करनेका समय प्राप्त कर सकते थे। सवेरे घड़ी दो घड़ी प्रभु भजनमें लगा सकते थे और दोपहरमें पलंग बिछाकर आराम कर सकते थे। वायुयान जैसे वेगवान् वाहनोंकी सहायतासे हम बहुत सा समय बचा लेते हैं, किन्तु इतने पर भी घरके मनुष्योंके साथ निश्चित रूप से बातें करने, बालकों के साथ आनन्द करने थोड़ा बहुत समय प्रभु भक्तिमें लगाने और दोपहरको कुछ आराम करनेका समय आज हम उपलब्ध कर नहीं पाते। कितनी विचित्रता! फिर भी कितना सत्य! तार, टेलीफोन जैसे वेगवान् सन्देश वाहक उस प्राचीन कालमें न थे। फिर भी हमारे पूर्वज महत्वपूर्ण कार्य आरामसे सम्पन्न किया करते थे और आज इन सब—यन्त्रों—की सहायतासे भी अपने कार्योंका सम्पादन उचित रूपसे कर नहीं पाते। "मुझे सूचना नहीं मिली" अथवा "मैं आ नहीं सका" आदि वाक्य हम अनेक अवसरों पर सुनते रहते हैं। विशाल यान्त्रिक शक्तिसे सम्पन्न मिलें विज्ञानने हमें समर्पित की हैं। फिर भी हमारे अधिकांश मानव अर्धनग्न दशा में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पूर्व-कालमें जबकि एक भी मिल न थी, कदाचित् ही कोई अर्धनग्न दशामें रहा होगा। बड़ी बड़ी लम्बी उपाधियोंकी शिक्षाके पीछे आजकी भांति धन और समयका अपव्यय न होता था। गुरु शिष्यके सम्बन्ध अति उदात्त थे। आजकी भांति विद्यार्थी अध्यापकोंको धमकी न देते थे—कि यदि हमें असफल घोषित करेंगे, तो तुम्हारी कुशल नहीं। कहीं बेकारीका नामनिशान न था। सामाजिक शिक्षा और संस्कारके केन्द्र एक भी न होने पर भी तब लूट, हत्या, धोखे-धड़ी और बलात्कारकी घटनाएं एक भी न होती थी। लोग निश्चिन्त मन आराम कर सकते थे और रातमें घरका द्वार खुला रखकर निद्रादेवी की गोदमें निर्द्वन्द्व विश्राम करते थे।

एटम बम और हाइड्रोजन बमका निर्माण आजके विज्ञानने किया है, यह सत्य है, फिर भी कोरिया और हिन्द-चीनकी लड़ाइयां वर्षों तक चला करती हैं। किन्तु केवल धनुष-बाण और तलवारसे किये जाने वाले घनघोर युद्ध भी गिनतीके ही दिनोंमें पूरे हो जाते हैं। पहलेके युद्धोंमें सैनिक ही लड़ते थे। युद्धक्षेत्रके पास ही अपने खेतोंमें हल चलाता हुआ किसान सम्पूर्ण सुरक्षित था। उसे विश्वास था कि मुझ पर आंच न आयेगी, किन्तु आजके युद्धमें जिसमें मिर्चकी बुकनी आंखमें झोंक देनेको बुद्धिवाद कहा जाता है, शत्रु देशका एक निर्दोष शिशु भी अपनेको सुरक्षित नहीं मान सकता। जिस युगमें जंगली भेड़ियेकी भांति लोग अपने शिकार पर टूट रहे हैं—उस युगको प्रगति का युग कहा जाता है। पलासी और पानीपतके युद्ध, राम रावण-युद्ध एक मास भी नहीं चले। सुप्रसिद्ध महाभारत का धर्मयुद्ध केवल १८ दिनमें समाप्त हो गया था।

पेन्सिलीन, ओरियोमाइसिन या क्लोरियोमाइसिनका आविष्कार तब न था, फिर भी जितने रोगी आज दिखाई देते हैं—रोगसे मरते भी हैं, तब उनके शतांश भी रोगी कहीं थे और न मरते ही थे। आजके जैसे नवीनतम और विचित्र रोगोंका नाम भी प्राचीन चिकित्सा या निदान ग्रन्थोंमें देखनेको नहीं मिलता। विटामिन या टानिक

आनन्द

[ले०—प्रो० श्री बलजिन्नाथजी पण्डित, शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०]

३ आनन्दकी अभिव्यक्ति

यह तो स्पष्ट हो गया कि आनन्दरूप परमेश्वर सदा आनन्द रूपमें चमकता हुआ भी अपने आनन्दके ही उल्लास से अपनी आनन्दमयताको छिपा देता है। पर सर्वथा छिपा नहीं देता। छिपाकर भी अपनी नियति शक्तिके नियमोंके अनुसार उसे कभी-कभी प्रकट करता ही रहता है। जीव दशामें अपने आपको सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणसे वेष्टित करता है। सत्वगुण आनन्द रूप है, तमोगुण आनन्द का अभाव है और रजोगुण दुःख है। किसी तीव्र भावना से, मनकी अकस्मात् एकाग्रतासे, या समाधिके अभ्याससे कुछ क्षणोंके लिए या कुछ अधिक समयके लिए अन्तःकरणसे रजोगुण और तमोगुण धुलसे जाते हैं, और सत्त्वगुण तीव्र हो जाता है। सत्त्वगुणके तीव्र हो जानेसे कुछ क्षणोंके लिए भेददृष्टि (माया) भी मिट जाती है और मनुष्यका गुणातीत आनन्दरूप अपने वास्तविक पूर्णप्रकाश-विमर्श रूपमें चमकने लगता है। उस क्षणमें शरीर, इन्द्रिय, अन्तःकरण और प्राण सभी अपने वास्तविक स्वरूप, प्रकाशविमर्श रूप, सच्चिदानन्द आत्मतत्त्वमें लीन हो जाते हैं। उस क्षण केवल 'अहं' ही अवशिष्ट रह जाता है। सारा ही 'इदं' उस समय 'अहं' में ही लीन हो जाता है। इस तरहसे क्षणभरके लिए सब कुछ ही आत्माका आसरा लेकर विश्राम सा करता है। उसीको स्वरूप विश्रान्ति कहते हैं। यह विश्रान्ति ही आनन्द है। विश्रान्तिका अभ्यास ही भूली हुई पूर्ण आनन्दमयताको फिर पानेका एक मात्र उपाय है।

यह स्वरूप-विश्रान्ति भिन्न-भिन्न उपायोंसे होती है। साधारण जीवोंको इन्द्रियों द्वारा प्रिय विषयोंकी प्राप्तिसे क्षण भरके लिए हो जाती है। इससे भी बढ़कर मैथुनके अभ्यास से होती है। मैथुनमें आस्वादके समय समस्त इदंरूप जगत् मानो होता ही नहीं है। केवल आनन्द रूप अहं ही उस समय अपनी स्फुरत्तासे स्पन्दमान (चंचल सा) ही होता है। हिमालयकी तरह प्रशान्त नहीं होता। उस क्षणमें प्रियतम या प्रियतमासे आनन्द नहीं मिलता। अपने आपसे ही अपना ही आनन्द चमकने लगता है। इस प्रकारसे आनन्दकी अभिव्यक्ति होती है परन्तु विषयों या मैथुनके अभ्याससे जो आनन्दकी अभिव्यक्ति होती है, वह क्षणमात्र तक ही रहती

के इंजेक्शनोंका किसी को ज्ञान भी न था। फिर भी, तब के मानवकी आयु आजके मानवकी अपेक्षा कई गुणा अधिक थी। आज ३० वर्षका मानव भी वृद्ध जैसा दिखाई देता है तब ७० वर्षीय मानवकी युवक संज्ञा थी। कहा जाता है कि भीम और दुर्योधनके गदायुद्धके समय उनकी आयु ७० वर्षकी थी। आजसे शताब्दियों पहले भारतको सुख समृद्धि और वैभव, सत्यता और पवित्रताका दर्शन करनेके लिए विदेशी यहां आते थे। 'हुएनसांग' 'फाहियान' और 'मेगास्थनीज' आदि विदेशी यात्रियोंने हमारे देशकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। यहांकी जीवन धारा देखकर वे आश्चर्यमुग्ध होकर कह पड़ते थे—"भारतराष्ट्र समृद्धि और वैभवसे भरपूर है। लोग सन्तुष्ट और सुखी हैं। वहां परस्पर झगड़े नहीं होते, चोरियाँ नहीं होतीं। रातमें लोग द्वार खुला रखकर भी निश्चिन्त सो सकते हैं। भारतमें न्यायालयोंकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ऐसी घटनाएँ ही नहीं होतीं, जिनके लिए न्यायालय आवश्यक हैं। लोग सच्चे और ईमानदार हैं और व्यापारके सौदे मौखिक होते हैं। हस्ताक्षर करनेकी आवश्यकता नहीं होती।"

आज प्रगतिशील संसारमें हमारे देशके किसी बम्बई जैसे स्थानका पूरा परिचय प्राप्त करनेके बाद यदि कोई हमारे विषयमें अपना मन्तव्य प्रकट करना चाहे तो वह मन्तव्य उपर्युक्त मन्तव्यके अक्षरशः विपरीत होगा। फिर भी कहा जाता है कि हम प्रगति कर रहे हैं—निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। क्या यही प्रगतिका उत्कृष्ट स्वरूप है?

है, उससे शरीर शिथिल हो जाता है। और उसमें इस प्रकार के आनन्दकी अभिव्यक्तिकी शक्ति क्षीण होती जाती है। हां, एक बात अवश्य होती है, वह यह कि जीव आनन्दका अनुभव करता है और आनन्दके लिए उन्मत्त हो उठता है। यह उन्माद उसे तब तक शान्तिसे बैठने नहीं देता, जब तक कि वह पूर्ण आनन्दको प्राप्त न करे। नाटकके देखने से भी सत्त्वगुण तीव्र हो जाता है और मनुष्यको उस समय अपने सर्वव्यापक अद्वैत रूपका साक्षात्कार हो जाता है। ऐसा होने पर शरीर अन्त:करण प्राण आदि सभी अपने वास्तविक आनन्दमय स्वरूपमें विश्रान्ति प्राप्त करते हैं। इसीलिए नाटकका रस आनन्दमय स्वप्रकाश और चिन्मय माना गया है। यह स्वरूप विश्रान्ति कैसे हो जाती है इस बातको वाणी स्पष्ट नहीं कर सकती। वाणीकी गति द्वैत दशामें, मायामय जगतमें ही है। वह दशा अद्वैतकी और माया अतीतताकी होती है। उसका साक्षात्कार मनुष्य अपने ही अनुभवसे कर पाता है। इसीलिए आचार्य अभिनव गुप्तपाद नाट्यशास्त्रके भाष्यमें इस रसका वर्णन करते समय अनिश्चित अर्थ वाले वाक्योंका प्रयोग करते हैं। वे कहते हैं—

हृदयमिव प्रविशन्, सर्वाङ्गीणमिवालिङ्गन् अन्यत् सर्वमिव तिरोदधद्, ब्रह्मास्वादमिवानुभावयन्, अलौकिक चमत्कारकारी शृंगारादिको रसः।

अर्थ—"शृंगारादि रस किसी अलौकिक चमत्कारको उत्पन्न करता है। मानो कि हृदयमें प्रवेश सा करता है, सारे शरीर पर मानो आलिङ्गन सा करता है, शेष सारे संसारको मानो छिपा सा देता है, और ब्रह्मानन्दका सा अनुभव करा देता है।" काव्यके पढ़नेसे भी इसी प्रकार से स्वरूप विश्रान्ति हो जाती है। आनन्दकी अभिव्यक्ति का यह प्रकार, विषयानन्दसे बहुत ऊंचा है। इससे किसी किसीके अन्तःकरणके मल नष्ट होने लगते हैं। परन्तु काम क्रोध आदिके वश रहने वाले क्षुद्र मनुष्य प्राय: इसे भी विषयानन्दके ही तुल्य समझते हैं। इस कारण सामान्यतः इसका अभ्यास भी जनसाधारणको परमानन्दके समीप नहीं पहुंचा सकता। यह आनन्द भी बाह्य कारणोंकी अपेक्षा रखता है, इसलिए इस प्रकारकी अभिव्यक्ति भी आनन्दकी सहज अभिव्यक्ति नहीं।

आनन्दकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति मनुष्यको को सुषुप्ति के समय होती है। उस समय बाह्य कारणोंके बिना ही स्वरूप विश्रान्ति हो जाती है। परन्तु सुषप्ति प्रायः शरीर की थकावट आदिके कारण हो जाती है इसमें आनन्दकी स्फुरत्ता कुछ कुछ अभिभूत जैसी हो जाती है। इस कारण सुषुप्तिका अभ्यास भी परम आनन्द तक नहीं ले जा सकता। हां, यदि सुषुप्ति परिश्रमसे या निद्राके आधिक्यसे नहीं हो, योगके अभ्यास द्वारा स्वरूप विश्रान्तिसे हो जाय तो वह परम-आनन्दकी प्राप्तिका उपाय बन जाती है। वह सुषुप्तिकी दशा ही समाधिकी एक भूमिका होती है। समाधिके अधिकाधिक अभ्याससे तुर्य दशा आ जाती है। इस दशामें समस्त विश्व ही अहंता रूप आनन्दमय आत्म-तत्त्वमें विलीन होता हुआ प्रतीत होता है। इस प्रकारसे एक अपूर्व स्वरूप विश्रान्ति हो जाती है। यह दशा पूर्ण आनन्द मयताके अत्यन्त समीपकी दशा है। इसके अनन्तर ही अपने आपकी पूर्ण प्रत्यभिज्ञा (भूली हुई वस्तुको पुनः पहिचानना) हो जाती है। यों तो तुर्य दशा भी प्रत्यभिज्ञा की ही दशा है। परन्तु उस दशामें देह बुद्धि प्राण आदि और पृथिव्यादि समस्त जगत् ही अहंतामें लीन होता हुआ अनुभवमें आ जाता है। इस तरहसे यह दशा अभेदकी दशा है। क्योंकि समस्त भेद अभेदरूपतामें ही विश्रान्त हो जाते हैं। परन्तु यह दशा कुछ कुछ भेदकी दशा भी है। क्योंकि यदि भेद न होता तो कौन किसमें विश्रान्त हो जाता। अतः यह भेदाभेद दशा है। यह पूर्ण अभेद दशासे एक सोपान नीचे है। पूर्ण आनन्दकी दशा इसके अनन्तर ही आती है। उस दशाको तुर्यातीत दशा कहा गया है। इस दशामें इदंता इस प्रकारसे अहंतामें लीन हो जाती है, कि उसका नाम भी विशेष नहीं रहता। इस दशामें परिपूर्ण अहंताका प्रकाश और विमर्श हो जाता है। अहं ही चमकता है, इदं भी अहं रूपमें ही चमकता है। संसार दशामें पूर्ण आनन्दरूप परमेश्वर ही अनानन्द-स्वभाव घट पटादि भावोंके रूपोंमें प्रकाशित होता है। परन्तु इस तुर्यातीत दशामें घट पटादि जड़ भाव इस प्रकारसे आनन्द स्वभाव चैतन्यके रूपमें चमकते हैं कि घटता या जड़ताका किसी भी प्रकारसे अवभास ही नहीं होता। इसी लिए

यह पूर्ण आनन्दकी दशा है। यही आनन्दकी वास्तविक स्वभाविक अभिव्यक्ति है। यह आनन्दमय प्रकाशकी दशा है। वस्तुतः आनन्द सर्वत्र पूर्ण ही है। कहीं भी अपूर्ण नहीं। फिर भी अपनी पूर्णताके माहात्म्यसे, अपने परम स्वातन्त्र्यसे, भेदका अवभास करता हुआ अपूर्ण सा अपने आपको प्रकट करता है। फिर अपने आप ही स्वयं कल्पित भेदको त्याग देनेसे मानो अनानन्दताको मिटा देता है। तब अपने स्वभावसे फिर पूर्ण रूपसे ही चमकने लग जाता है। इस प्रकारकी भेदकल्पना और अभेद प्रथाकी क्रीड़ा करता हुआ भी अपनी पूर्णतासे च्युत नहीं होता। इन दोनों क्रीड़ाओंको स्वातन्त्र्यसे खेल सकता है। इनका कोई भी प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। यह उसकी पूर्णता है। तो यह स्वाभाविक आनन्दमयता ही अनुत्तर दशा कहलाती है। इस दशाके स्वाभाविक आनन्दमय प्रकाशका वर्णन आचार्य अभिनवगुप्त इस प्रकारसे करते हैं—

आनन्दोऽत्र न वित्तमद्यमदवन्नैवाङ्गनासङ्गवद्,
दीपार्केन्दुकृत प्रभा प्रकरवन्नैव प्रकाशोदयः।
हर्षः सम्भृतभेदमुक्ति सुखभूर्भारावतारोपमः
सर्वातीत पदस्य विस्मृत निधेः प्राप्तिः प्रकाशोदयः॥

अर्थ—"इस अनुत्तर दशामें जो आनन्द होता है, वह धन या मदिराके मदका जैसा नहीं होता, न ही वह स्त्रीसङ्गके समान होता है। आत्मदेव स्वयं कल्पित भेदके भारको त्याग देता है, इससे जैसे भारको फैंक देनेसे कोई बाह्य सुख मिलता नहीं, अपितु स्वाभाविक आनन्दकी रुकावट (भार) दूर हो जाती है; वैसे ही आनन्दकी रुकावट रूपी भेदभाव का अभिमान नष्ट हो जाता है, तो स्वाभाविक आनन्द पूर्ण आनन्द मयतामें चमकने लगता है। इस अनुत्तर दशाका प्रकाश भी दीपक या चन्द्रमा या सूर्यके प्रकाशका जैसा नहीं होता। अपितु जिस सर्वोत्तम अनुत्तर पदरूप खजाने को हम भूल गए थे अर्थात् खो बैठे थे, उसीकी पुनः प्राप्ति अर्थात् उसी अपने भूले हुए अनुत्तर स्वभावकी प्रत्यभिज्ञा मात्र ही प्रकाशका उदय है।"

इस अनुत्तरदशामें भी स्वरूप विश्रान्ति होती ही है। परन्तु यहां देह प्राण आदि अपने आनन्दमय स्वरूपमें विश्राम लेते हुए प्रतीत नहीं होते। यहां तो केवल आनन्द ही आनन्द है। देह आदि भी आनन्दमात्र ही है। देह की देहता तो चमकती ही नहीं। इसलिए यहां अपूर्व ही विश्रान्ति है। वह पूर्ण स्वतंत्रता है। किसी भी वस्तुकी अपेक्षाका अभाव ही यहाँ विश्रान्ति है। देह आदि विश्रान्ति के लिए आनन्दमय आत्माके मुखकी ओर देखते हैं। परन्तु आत्मदेव स्वयं पूर्ण आनन्द स्वरूप है। किसीके मुखकी ओर देखता ही नहीं। उसके पास कोई दूसरा है ही नहीं। वह सर्वथा पूर्ण है। अपनी पूर्णता का विमर्श ही उसकी स्वरूप विश्रान्ति है। यही विश्रान्ति वास्तविक और स्वाभाविक विश्रान्ति है। शेष सभी प्रकारकी विश्रान्ति संकोच दशाकी विश्रान्ति है। यही पूर्ण विश्रान्ति है। यह विश्रान्ति ही स्फुरत्ता है। यही स्पन्द है। यही चैतन्य है और यही ऐश्वर्य है। यहां परमेश्वर पूर्ण आनन्दघन है। सर्वतः और सर्वथा आनन्द ही है। किसी भी प्रकारसे आनन्दका अभाव इसे स्पर्श नहीं करता।

इस प्रकारसे पूर्ण आनन्दकी पूर्णताका ऐश्वर्य ही जगत्का बीज है। आनन्दकी ही महिमासे जगत्का अवभास होता है। परमेश्वर अपने आनन्द से ही जीव रूप बन जाता है और अपने आनन्दसे ही जीवरूपतामें अपनी शिवरूपताको पहिचान लेता है। इस तरह आनन्द ही स्वयं अपना ही बन्धक है। आनन्द अपने आपको आनन्दसे ही बांध लेता है, और आनन्दसे ही मुक्त कर देता है। विषयानन्दसे अपने आपको बांध लेता है और योगानन्दसे अपने उन बन्धनोंको तोड़ देता है। इसीलिए संसारमें विषयानन्द हेय माना गया है, और योगानन्द उपादेय। वस्तुतः आनन्द एक ही है। उसमें हेयता और उपादेयताका स्पर्श ही नहीं। परन्तु उसीके ऐश्वर्यसे हेयताका तथा उपादेयताका यह कल्पित अवभास मात्र है, क्रीड़ा मात्र है, इन्द्रजाल है। इस इन्द्रजालको इन्द्रजाल समझनेकी शक्ति को अभिव्यक्त करते हुए अपने वास्तविक आनन्दमय स्वरूप को पहिचाननेके लिए ही समस्त शास्त्र बने हैं। योगानन्द के ही अभ्याससे वह प्रत्यभिज्ञा प्राप्त हो जाती है। इसी लिए जन-साधारणके लिए योगानन्द उपादेय है और विषयानन्द हेय है। यदि किसी पर परमेश्वरका ऐसा अनुग्रह हो कि वह विषयानन्दका अनुभव करते हुए अनुसंधान द्वारा समझ सके कि यह विषयानन्द वस्तुतः मेरा अपना चिन्मय आत्मदेवका ही प्रकाश है तो उसके लिए विषयानन्द भी

उपादेय ही है। इसी लिए तन्त्रोंमें इस प्रकारके अधिकारीके लिए मांस, मदिरा, मैथुन आदिके सेवनका निषेध नहीं कहा गया है। परन्तु इस प्रकारके अधिकारी कितने हो सकते हैं। पहले भी लाखों करोड़ोंमेंसे कोई एक ही ऐसा हो सकता था। पर आजकलके संसारमें स्यात् एक भी न निकले। शैव शास्त्रके रहस्यको जानने वाले आचार्य अभिनवगुप्त इसीलिए श्रीतन्त्रालोकमें कहते हैं—

केतकी कुसुमसौरभे भृशं
भृङ्ग एव रसिको न मक्षिका।
भैरवीय परमाद्वयार्चने
कोऽपि रज्यति महेश चोदितः॥

अर्थ—"केतकी पुष्पके सौरभका रस लेनेका अधिकार भ्रमरको ही है, मधुमक्षिकाको नहीं। इसी तरह अद्वैत भैरव पूजाका अधिकार किसी विरले ही अधिकारीको होता है, जिस पर महेश्वरका अनुग्रह हुआ है।" इसीलिए जनसाधारणके लिए विषयानन्दकी उपासना हेय है। योगका अभ्यास, चाहे वह ज्ञान योग हो, भक्तियोग हो राजयोग हो, कर्मयोग हो, कोई भी योग हो, साधारण पूजा पाठ ही क्यों न हो, वे सब उपादेय ही हैं। जीवका यही कर्तव्य है कि उन कर्मोंका या योगादि उपायोंका अभ्यास करे, जिनसे वह योगानन्दका अधिकारी बन सके। अधिकारी बन कर उसे योगानन्दके अभ्याससे अपने पूर्ण आनन्द स्वरूपकी प्रत्यभिज्ञाको प्राप्त करना चाहिए।

आनन्दका प्रकाश बिना विकल्प ज्ञान द्वारा होता नहीं। क्योंकि विकल्प शब्दके संकेतोंके अधीन होता है। शब्द और अर्थका वाच्य वाचक भाव संबन्ध मायाकी द्वैत दशामें ही होता है। आनन्दका साक्षात्कार सर्वत्र अद्वैत स्व-प्रकाश दशामें ही होता है। इसलिए आनन्दका प्रकाश निर्विकल्पक ही होता है। आनन्द विकल्पके कलङ्ककी एक कलिकाको भी सहन नहीं कर सकता। निर्विकल्पक अवश्य गूंगा और बहिरा होता है। परन्तु गूंगा और बहिरा इसलिए होता है कि उसे शब्द और अर्थके वाच्य वाचक भावका ज्ञान नहीं होता। इसलिए लौकिक घट पटादि विषयोंके लौकिक द्वैत प्रधान ज्ञानके विषयमें गूंगा और बहिरा होता है। अद्वैत आनन्दके प्रकाशके विषयमें गूंगा और बहिरा नहीं होता। क्योंकि आनन्द वस्तुतः वाच्य वाचक भावको सहन ही नहीं करता। निर्विकल्पक इसलिए गूंगा और बहिरा है, कि वह शब्दों द्वारा वस्तुका वर्णन नहीं कर सकता। आनन्द तो शब्दोंका विषय ही नहीं। उसे शब्द वर्णनकी अपेक्षा ही नहीं। वह स्वप्रकाश है। अपने प्रकाशसे प्रकाशित होता है। उसका प्रकाश विमर्शमय है। विमर्शमयतासे ही अपने आपको स्वयं ही सिद्ध करता है। सविकल्पक भी वस्तुतः विमर्शके ही बलसे वस्तुको सिद्ध कर देता है। निर्विकल्पक प्रकाश भी विमर्शमय है। क्योंकि विमर्श ही प्रकाशका स्वभाव है, उसकी अन्तरात्मा है। उसकी प्रकाशता है। भेद केवल इतना है कि निर्विकल्पकमें विमर्श स्वाभाविक होता है, और सविकल्पकमें वह शाब्दी कल्पनासे रंगा हुआ होता है। इस तरहसे सभी जीव स्वभावसे ही निर्विकल्पक पूर्ण आनन्दघन परमेश्वर ही हैं। अपनी ही परमेश्वरतासे उन्होंने अपने पूर्ण आनन्दघन स्वरूपको भुला डाला है। यह उनकी क्रीडाका पूर्वार्द्ध है। अब उत्तरार्द्धमें उन्होंने अपनी ही ईश्वरताके बलसे शास्त्रोंमें कहे हुए मार्गसे अपनी भुलाई हुई परमेश्वरताको पुनः पहिचान लेना चाहिए। यही जीवन का सार है। यही इस पारमेश्वरी क्रीड़ाकी परिपूर्णता है। यही आनन्द है। शिवमस्तु।

—०—

सदुपदेश

धर्म सनातन वस्तु है। वह मनुष्योंके चलाए मत, मजहब पंथ, रिलिजन, समाज, सम्प्रदायों की तरह नहीं है। वह तो इस सनातन जगत्में सनातन जीवके सनातन सुखके लिए सनातन प्रभुका सनातन वेदवाणी द्वारा प्रचारित किया हुआ सनातन विधान है, सदाचार पद्धति है, जिससे मनुष्य संसारमें सुख पाता है और मरनेके अनन्तर स्वर्ग अथवा मोक्ष पाता है।

धर्मको जाननेके लिए धर्मशास्त्रोंको पढ़ना चाहिए अथवा सदाचारी ब्राह्मणके मुखसे धर्म सम्बन्धी उपदेशोंको सुनना चाहिए। चार वेद, उपवेद, उपनिषद, षड्शास्त्र, षड्दर्शनः अठारह पुराण, मनु, याज्ञवल्क्य आदि स्मृति, रामायण, महाभारत ये हमारे धर्मशास्त्र हैं।

कुरुक्षेत्रके मुख्य तीर्थोंका महत्त्व और परिचय—

कुरुक्षेत्र-पञ्चतीर्थी

[लेखकः—म० म० श्री पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर]

कुरुक्षेत्र भूमि दशयोजनात्मक है, अर्थात् चालीस कोश लम्बी-चौड़ी। उसमें सातवन, सात नदियां, सात ही प्रसिद्ध नगर और पचासी ग्राम हैं। कुरुक्षेत्र भूमिके सब तीर्थोंमें पांच तीर्थ अति प्रसिद्ध हैं। जहां बड़े बड़े मेले भरते हैं। यह कुरुक्षेत्र भूमि सम्पूर्ण भूमिसे पवित्र है, क्योंकि इसमें भूदोष नहीं है। मधुकैटभ राक्षसकी चर्बीसे सारी पृथ्वी मेदिनो हो गई थी, भगवान् विष्णुके नीचेकी भूमि (जहाँ वे बैठे थे) पवित्र बनी रही, वही कुरुक्षेत्र भूमि है, इसी कारण यहां महाभारत युद्ध किया गया, जिससे इस भूमिमें मरने वालोंकी मुक्ति (सद्गति) हो जाय।

कुरुक्षेत्रमें काम्यक वन, दितिवन, व्यासवन, फलकी वन, सूर्यवन मधुवन, और सीतावन, ये सातवन बड़े ही पवित्र हैं। इनके दर्शनसे महान् पुण्य प्राप्त होता है। इन सात वनोंमें ऋषियोंके आश्रम थे। । अब वे सब वन काटकर ग्राम बसाये गये हैं। जहाँ दितिवन था वहां अमीण, जहां काम्यकवन था वहां कमोधा, जहां व्यासवन था वहां वस्तली, जहाँ फलकी वन था वहां फरल, जहां सीता वन था वहां स्यूण, और जहां सूर्य वन था वहां सजूमा नामक ग्राम बसे हुए हैं, उन वनोंके भी चिन्ह अभी तक हैं।

सात नदियां—गंगामन्दाकिनी मोहणा ग्रामके पासमें है। मधुश्रवा और कौशिकीका संगम मेवली ग्रामके पासमें है, सरस्वती पृथूदक (पेवा) ग्राम में है। वैतरणी क्योंठा ग्राम में है। दृषद्वती फल्गु (फरल) ग्राम में है, हैरण्वती बेरीखेड़ा और हमारे रिटोली ग्रामके मध्यमे—'हंथनोर' तीर्थके पासमें कहीं है, अभी तक ठीक पता नहीं चला यह नदी कहां है।

सात नगर—(१) थानेश्वर (जङ्क्शन) (२) जीन्द (जंकशन) (३) सफीदम, (४) कैथल, (५) कलायत, (६) पुण्डरी (७) पहेवा। ८५ ग्राम स्यूण आदि। कुरुक्षेत्र भूमिको भगवान् कृष्णने 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' कहा है। महा भारतमें लिखा हैः—

पांसवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुदीरिताः।
अपि दुष्कृत कर्माणं नयन्ति परमांगतिम्॥

कुरुक्षेत्र भूमिसे उठी हुई धूलि भी शरीरसे स्पर्श करके स्त्री पुरुषोंको पवित्र बना देती है। कुरुक्षेत्रमें त्रिधामुक्ति मानी है—छत पर, मरने पर जलमें और स्थलमें मरने पर जैसा कि लिखा है—

गंगायाश्च जलेमुक्तिर्वाराणस्यां जलेस्थले।
कुरुक्षेत्रे त्रिधामुक्तिरन्तरिक्षे जले स्थले॥

कुरुक्षेत्र भूमिका महात्म्य नारद, स्कन्द, वामन, आदि पुराणोंमें, महाभारत, भागवत, भगवद्गीता, रामायण, मनु, शतपथ, जाबालोपनिषदादि शास्त्रोंमें विस्तारपूर्वक वर्णित हे। 'तीर्थैस्तदन्ति' इस अथर्ववेदके कहे अनुसार कुरुक्षेत्रादि तीर्थोंमें स्नान और मुक्तहस्त होकर दान करना भवसागरसे पार होनेका सरल साधन है। लिखा भी है—

ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्धं गोगृहे मरणं तथा।
वासः पुंसां कुरुक्षेत्रे मुक्तिरुक्ता चतुर्विधा॥

ब्रह्मज्ञान होना, गयामें श्राद्ध करना, गोष्ठमें मरना, और कुरुक्षेत्र भूमिमें निवास करना, यह चार प्रकारकी मुक्ति है। महाभारत में स्पष्ट कहा है—

'ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे।'

जो सज्जन कुरुक्षेत्रमें निवास करते हैं वे स्वर्गीय हैं। नारद पुराणमें लिखा है—

कुरुक्षेत्र समं तीर्थं न भूतं न भविष्यति।
तत्र द्वादश यात्रास्तु कृत्वा भूयो न जन्मभाक्॥

कुरुक्षेत्र भूमिकी बारह बार यात्रा करनेसे पुनर्जन्म नहीं होता।

मन्वादौ च युगादौ च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
महापाते च संक्रान्तौ पुण्येचाप्यन्यवासरे॥
स्नानस्तत्र कुरुक्षेत्रे फलानन्त्यमवाप्नुयात्।

सूर्य चन्द्रादि ग्रहणों पर स्नान और दान करने वालेको अनन्त फल प्राप्त होता है। परन्तु दान लेने वालेकी आयु और पुण्य दोनों क्षीण हो जाते हैं। इस दोषका प्रतिकार दोनों समय सन्ध्या करना और तीन हजार गायत्री जप करना है, देखिये महाभारत—

सायंप्रातश्च यः सन्ध्यां ब्राह्मणोऽभ्युपसेवते।
गायत्र्या पावितो देव्या प्रतिग्रहन्नसीदति॥

मनुने भी लिखा है—

जपित्वा त्रीणि सावित्र्या सहस्राणि समाहितः॥
मासं गोष्ठे पयः पीत्वा मुच्यतेऽसत्प्रतिग्रहात्॥

वीरमित्रोदयमें भी यही लिखा है कि—

तीर्थेचेत्प्रतिगृह्णीयाद् ब्राह्मणो वृत्तिकर्षितः।
दशांशमर्जितं दद्यादेवं कुर्वन्नहीयते॥

वृत्तिरहित ब्राह्मण तीर्थ पर दान लेने पर भी उसका दशांश ब्राह्मणोंको बांट दे ऐसा करनेसे वह दोषमुक्त हो जाता है।

'यत् यत् ददाति यस्तत्र कुरुक्षेत्रे रविग्रहे।
तत्तदेव सदाप्नोति नरो जन्मनि-जन्मनि॥

जो पुरुष सूर्यग्रहण पर दान देता है वह उसको जन्म-जन्मान्तर तक प्राप्त करता है।

पूर्तमिष्टं तपस्तप्तं हुतं दत्तं विधानतः।
कुरुक्षेत्रे ऽक्षयं सर्वमिति वेदविदोविदुः॥

कुरुक्षेत्र भूमिमें किया हुआ वापी कूप तड़ाग तप तथा होमादि कर्म अक्षय होता है। वीरमित्रोदयमें यह भी लिखा है—

यश्चान्यं कारयेच्छक्त्या तीर्थयात्रां नरेश्वर!
स्वकीय द्रव्ययानाभ्यां चतुर्थांशं लभेत सः॥

जो पुरुष अपने द्रव्यसे औरोंको तीर्थयात्रा करवाता है, उसको भी उस यात्राका चतुर्थांश पुण्य प्राप्त होता है।

भ्रातरं पितरं जायां मातरं सुहृदं गुरुम्।
यमुद्दिश्य निमज्जेत अष्टमांशं लभेत सः॥

जो पुरुष अपने माता पिता स्त्री भ्राता मित्र गुरु आदिके लिए गोता लगाता है या कुछ देता है उसका अष्टमांश उसको भी मिलता है। तीर्थ यात्रा यज्ञोंसे भी अधिक पुण्यप्रद है—

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्ट्वा विपुलदक्षिणैः।
न तत्फलमवाप्नोति तीर्थाभिगमनेन यत्॥

अग्निष्टोमादियज्ञोंसे भी बढ़कर तीर्थ यात्रा करनेका पुण्य है।

बुद्बुदा इव तोयेषु मशका इव जन्तुषु।
जायन्ते मरणायैव सुतीर्थस्नान वर्जिताः॥

जिसने स्त्री और पुरुषका जन्म लेकर कुरुक्षेत्रादि तीर्थोंमें स्नान नहीं किया उसका जन्म लेना मच्छरोंके समान है। तीर्थयात्रा यमनियमादिसे सफल होती है।

कुरुक्षेत्रके पांच तीर्थ—

(१) थानेश्वर—इसमें प्रसिद्ध तीन तीर्थ हैं—'ब्रह्मसर' इसीको कुरुक्षेत्र कहते हैं, इसके चारों ओर पक्की सीढियां हैं। इसमें स्नान और दानसे मुक्ति प्राप्त होती है। सन्निहितसर—यहाँ प्रत्येक अमावस्यामें समस्त तीर्थ आ जाते हैं, यहां स्नान और पिण्डदानका महान् पुण्य है। स्थाणुतीर्थ—यहां ब्रह्माजीने सरस्वतीमें स्नान करके 'स्थाणु-लिङ्ग' की स्थापना और अर्चना की थी, इस सरोवरके भी चारों ओर पक्की सीढियां हैं। यहां स्नान और स्थाणु (शिवलिङ्ग) का दर्शन पूजन होता है। सूर्यग्रहणके समय इन तीनों ही तीर्थोंमें स्नानादि होते हैं। स्थाणुके नाम से ही नगरका नाम थानेश्वर पड़ गया है। सप्तम शतकमें चीनी यात्री ह्यूनसांगने इसको बसता हुआ देखा था। यह नगर सम्राट् हर्षवर्धन और उसके पूर्वजोंकी राजधानी थी। हर्षके सभाकवि भट्टबाणने थानेश्वरका भव्य वर्णन किया है। नगर के निकटमें अनेक राजभवन, श्रवणनाथ मन्दिर, बाबा काली-कमली वालेके स्थान, श्री पं० गरुड़ध्वज शास्त्रीका ऋषिकुल, गीताभवन, और बिड़ला मन्दिर द्रष्टव्य हैं। वि० सं० २००१ में दिल्लीकी ओरसे हमारे यजमानत्वमें एक 'सूर्यसहस्ररश्मि' महान् यज्ञ यहां हुआ था, जिसमें कई सहस्र विद्वान् सम्मिलित हुए थे। सं० २००८ वि० सं० में भी यहां रुद्रयज्ञ हुआ, जिसमें हम 'सदसस्पति' थे। यह यज्ञ बिड़लाजीकी ओर से था।

(२) पृथूदक (पहेवा)—यह तीर्थ पहेवा नगरमें है। इस तीर्थका नाम पहले पापान्त कथा। स्वामी षडानन इसमें स्नान करके क्रौञ्चवध पापसे मुक्त हुए थे। इसमें स्नान करनेसे

मोक्ष प्राप्त होता है, पद्मपुराणमें लिखा है—

'पृथूदकेजाप्यपरो गर्भवासं न पश्यति'

वामनपुराणके अनुसार शंकरजी भी पृथूदकमें स्नान करनेके लिये काशीसे आए थे।

चैत्रकृष्णा चतुर्दश्यां श्राद्धं कुर्वन्ति ये जनाः।
पितृणामक्षयाप्रीतिर्जायते नात्र शंसयः॥

इसी प्रमाणसे चैत्र बदि चौदसका यहां प्रतिवर्ष बड़ा भारी मेला होता है। इसी दिन सम्राट् पृथुने यहां श्राद्ध और तर्पणमें पितृगणके लिये जलदान किया था। तभी से तीर्थका नाम 'पृथूदक' पड़ा। हमने भी सं० २०११ वि० में यहां आकर श्राद्ध तर्पण और स्नान किया था। पृथूदकसे थोड़ी ही दूर पर 'प्राची-सरस्वती' है। सम्राट् पृथुने यहां सौ अश्वमेधयज्ञ किये थे। श्रीकृष्णने युधिष्ठिरसे कहा था—

मा गयां गच्छ कौन्तेय ! मा गङ्गा मा च पुष्करम्।
तत्र गच्छ कुरुश्रेष्ठ ! यत्र प्राची-सरस्वती॥

(३) फल्गुतीर्थ—यह तीर्थ फरल ग्राममें है, यहाँ फलकी वनके दर्शन और दृषद्वती नदीके तीर्थमें स्नान किया जाता है। यहां स्नान तर्पण और पिण्डदानका महान् पुण्य है। यहाँ श्राद्धोंकी सोमवती अमावस्या पर बड़ा भारी मेला होता है। गयासुरका वरदान है कि श्राद्धोंकी अमावस्या पर जो यहाँ श्राद्ध करता है उसको गयाश्राद्धका फल प्राप्त होता है, उस दिन गयामें श्राद्ध नहीं होता। सोमा गयासुरकी लड़की थी।

(४) रामह्रद—यह तीर्थ जीन्द जङ्कशनसे चार कोश पर दक्षिणमें है। भगवान् परशुरामने पिता जमदग्निके वधसे दुःखित होकर त्रेता और द्वापरकी सन्धिमें सम्राट् सहस्त्रार्जुनको और उसके वंशधरोंको मारकर उनके रुधिरसे यहां पांच तलाब भरे थे, वे ही अब रामह्रदतीर्थ कहलाते हैं। ऋचीकादि पितृगण और ब्रह्माजीके वरदानसे वे ह्रद जलमय तीर्थ बन गए थे। यहां कार्तिकी और वैशाखी पूर्णिमाको बहुत बड़ा मेला भरता है, यहां स्नान करनेका फल और पुष्करस्नानका फल बिलकुल समान है। हमने भी यहां दिल्लीसे आकर अपने आचार्यत्वमें एक 'विष्णु महायज्ञ' सं० २०१० वि० में किया था।

(५) पिण्डारक—यह तीर्थ पिण्डारा ग्राममें है। जीन्दसे तीन कोश पूर्वमें है। यह सोमतीर्थ माना है। प्रत्येक सोमवती अमावस्या पर इसका बड़ा भारी मेला होता है। इसमें स्नान श्राद्ध तर्पण और सप्ताह करनेका महान् पुण्य है। २०१३ में हमने यहां रुद्रयज्ञ करवाया था। इस तीर्थके विषयमें यह प्रसिद्धि है—

'काशीं मुञ्च गयां मुञ्च मुञ्च प्राचीं सरस्वतीम्।
पिण्डारकन्तु मा मुञ्च अमायां सोमवासरे॥

सूर्य ग्रहणादि पर्वों पर कुरुक्षेत्र भूमिके किसी भी तीर्थमें स्नान करनेका महान् पुण्य है।

—o—

सदुपदेश

ईश्वर एक ही है अनेक नहीं. वह सर्वशक्तिमान्, स्वतन्त्र, सर्वज्ञ, भक्तवत्सल और कर्मसाक्षी होनेसे अनेक दिव्य लीलारूपोंमें प्रकट भी होता है और सर्वव्यापक भी है। उसी परमात्माके एक अंशमें यह अनन्त विश्वमय विराट् ब्रह्माण्ड बना है, जो उस परमात्माका प्रथम साकार लिंगरूप अवतार है। वही परमात्मा ब्रह्मारूपसे इस संसार का निर्माण करते हैं, विष्णुरूपसे पालन करते हैं, रुद्ररूपसे परिवर्तन (संहार) करते हैं। गणपति रूपसे निर्विघ्नता प्रदान करते हैं, स्कन्द सुब्रह्मण्य रूपसे बलकी रक्षा करते हैं। धर्मराज रूपसे सबके कर्मोंका निर्णय करते हैं, कालरूपसे दण्ड देते हैं, इन्द्र रूपसे अनुग्रह करते हैं, सूर्य रूपसे प्रकाश और स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। चन्द्र रूपसे प्रसन्न रखते हैं, अग्निरूपसे देव और मानवमें यातायात कार्य करते हैं। कामरूपसे सबको आकृष्ट करते हैं। योगमाया उसीकी महाशक्ति है, सकल देवियां इसी योगमायाके अवतार हैं. काम करने वाले गवर्नर, मिनिस्टर, कलेक्टर आदि अनेक होते हैं किन्तु सम्राट् या गवर्नमेण्ट एक ही होती है। उसीकी सत्ता या शक्तिसे सब काम करते हैं। इन देवताओंके भी अनेक अवतार रूप होते हैं। वे ही परमात्मा वैकुण्ठमें पुरुषोत्तम नारायण हैं, नित्य कैलासमें सदाशिव हैं। इस प्रकार वैदिक धर्ममें अनेकेश्वरवाद नहीं, एकेश्वरवाद ही है। अपने भगवान्को अलग माननेवाले भगवान्को नहीं जानते हैं, भगवान्के प्रति अपराध करते हैं। वे स्वतन्त्र और सर्वशक्तिमान् एवं भक्तवत्सल हैं।

—शङ्कराचार्य श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज

आधुनिक शिक्षित नारी और फैशन

[ले०—श्री प्रो० नन्द चतुर्वेदी]

यौवनका भी निस्सन्देह अपना निमन्त्रण होता है और यदि भाग्यवश सौन्दर्य भी बरसा तो फिर सोनेमें सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ होती है। सौन्दर्योपासना मानव की उस एकान्त साधनामेंसे है, जहाँ वह अपने जीवन का विशेष भाग व्यतीत करता है या करना चाहता है। स्वयं रीझता और रिझाता सौन्दर्य आञ्चलमेंसे दबे छिपे मानवकी ओर झांकता रहता है, और सत्य तो यह है कि स्रष्टाका यही रचना चातुर्य है कि अणु परमाणु इस सौन्दर्य साधनामें व्यस्त है। यह सौन्दर्य मानवको विश्वमें जीवित रखनेके अन्यतम साधनोंमें से है।

यहां यह विचारणीय है कि सौन्दर्य क्या है? उसकी किस प्रकार परिभाषा बनाई जाए? सौन्दर्य वास्तवमें किस गुणका नाम है? उसका नारी जीवनसे क्या सम्बन्ध है। और नारीने उसे किस प्रकार अपनाया है? आदि आदि।

काव्यात्मक दृष्टिको छोड़ते हुए भी यदि सौन्दर्यका विवेचन किया जाय तो यह निश्चय हो जाता है कि सौन्दर्य हमारी बोधगम्य इन्द्रियोंसे कुछ परे है, साज बाज का जहाँ कुछ भी प्रभाव नहीं। हृदय ही जहाँ निर्णायक है। यही तो कारण है कि एक सजे सजाए उपवनमें जहाँ मानव रुचि चयनकी भीड़ है, जहाँ प्रत्येक पुष्प, प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक लता अपने स्थान पर शोभा पा रही है, वहाँ हमारे हृदयकी तृप्ति नहीं होती। हाँ, आंख इससे प्रसन्न अवश्य हो जाती है। किन्तु वहां वह दर्शनीय शोभा कहाँ जो उन विशाल वनोंमें, जहाँ वृक्षोंसे उलझी हुई लताएँ,मुड़ी हुई पगडंडियां, कुछ कल-कल स्वर करते निर्झर, पासमें अपनी कहानी कहते चहकते विहंगम और हरित दूर्वादल हों। हमें लगता है हमारी आंखों और हृदय दोनों मौन हैं और हैं उस सुषमाके निहारनेमें तल्लीन। इसके अतिरिक्त उपवनकी शोभा शीघ्र भूल जाना सम्भव है, किन्तु उस प्रकृति वैभवकी छटा तो भूलने पर भी नहीं भूलती।

यदि हम इस प्रश्नके साथ अपने विषय पर भी देखते चलें तो हमें लगेगा कि आधुनिक शिक्षित नारी समाज भी अपनी काँट छाँटमें पूर्ण रूपसे रंग गया है। नगरोंकी लम्बी-लम्बी विशाल सड़कोंसे मुझे कभी कभी विरक्ति हो जाती है। संध्या समय अपने प्रेमियोंके (जिनके हृदय वासनासे ओत-प्रोत हैं) गलेमें गल बाँही डाले हुए प्रेमिकाएँ अपनी अर्धनग्न अवस्थामें निकलती हैं तो मुझे दुःख होता है कि अब शीघ्र ही भारत का प्रत्येक नगर पेरिसकी एक वासनापूर्ण गली बनने वाला है। आधुनिक समाज दिखावेमें व्यस्त है उसे अप्राकृतिक बनावका विचित्र धुन लग गई है। यदि मुंह काला है तो उसको गोरा बनानेके लिए क्रीम पाउडर लगाया जाता है। "फ्राक" (जिसका खूब प्रचार हो रहा है) में से लम्बी लम्बी निकली टांगें और दुर्बल हाथ, उभरा हुआ वक्षःस्थल और तिस पर लाल लाल अप्राकृतिक रंगे हुए होंठ (कौन जाने वे कभी अपना मुंह आरसीमें भी देखती हैं या नहीं) एक अद्भुत रूप बना देते हैं, जो देखते ही बनता है और उनकी बुद्धि पर भी तरस आता है। क्या आप इस आत्म-प्रवंचनाको ही सौंदर्य कहेंगे? उन्हें आत्मग्लानि भी नहीं होती कि यह सब क्यों किया जा रहा है, इस क्षणिक सुन्दर वेषभूषाके अन्दर उनका अतिकुरूप, भयानक शरीर छुपा है और यदि यह मान भी लिया जाए कि दो सड़क पर चलते व्यक्ति उनकी ओर मुस्करा भी गए, तो क्या बस यही उनके सौंदर्य का, प्रसन्नताका मापदंड है? क्या यह उनकी मानहानि नहीं? क्या यह नारीत्वका अपमान नहीं? यह सब कुछ स्वीकार करने पर भी आश्चर्य तो यह है कि यह सौन्दर्यका बनाव है या बिगाड़? यह शरीरकी रक्षा है, पोषण है या शोषण?

आज हिन्दू-संस्कृतिकी सुसभ्य महिलामें आप पाएंगे कि यदि वह सुन्दर नहीं तो कृत्रिम उपायों से कभी भी सुन्दर बननेका प्रयत्न नहीं करेगी। वह है—

कौन जो सुन्दर अथवा कुरूप बन सके। यह भी तो पूर्व जन्मके पुण्योंका फल है। साधारण रूपमें अपनी वेणी बांधे, एक श्वेत साड़ी पहने अपने गृह-कार्यमें दक्ष वह अपना जीवन सुखसे व्यतीत कर देती है। कभी उसकी यह इच्छा नहीं होती कि वह अपने कुरूपको अनैसर्गिक सौन्दर्यके आंचलमें छिपा ले।

बहिनोंसे ही मैं यह पूछता हूँ कि क्या यह अप्राकृतिक सौन्दर्य उनका सच्चा स्वरूप है? शिक्षित होकर तो उन्हें जो वे हैं उसी रूपमें आना चाहिए। शिक्षाके लिए कहा जाता है कि वह गुप्त वस्तुका प्रकटीकरण करती है, वह सुषुप्त शक्तियोंको नवीन रूप देती है। उन्हें नग्न रूप में लाती है। अज्ञान आवरण हटता है। उनका सच्चा स्वरूप सामने आता है, तो फिर शरीर ही के सम्बन्धमें यह पाप क्यों? हम जो कुछ हैं उसी रूपमें विश्वके सामने क्यों न आएं। यदि वह साज बाजको अधिक महत्त्व देती हैं तो इसका अर्थ है कि वह वासना को महत्व देती हैं, प्रेम को नहीं। इसका अर्थ है वह अपने जीवनको लुब्ध और लोभ जनक बनाना चाहती है, सुखी नहीं। इसका अर्थ यह है कि शिक्षाने उन्हें विनय नहीं पढ़ाया है, अभिमान पढ़ाया है, अथवा यों कहिए कि प्रवंचना पढ़ी है, धूर्तता पढ़ी है, सादे जीवनका उच्च आदर्श नहीं। एक अप्राकृतिक बनावकी आकांक्षाके साथ उन्हें आवश्यकता होती है कि उनके सौन्दर्यकी कोई प्रशंसा करे और सबसे अधिक सराहने वाला उनका हृदय सम्राट होता है। किन्तु यह सब कितने दिन तक, अपना स्वरूप तो सामने आए बिना नहीं रहता। तब फिर दूसरे प्रशंसक की खोज होती है। ओह! यह भी क्या जीवन है। आत्मा भी तो कोई वस्तु है, शरीर ही तो सब कुछ नहीं। व्यभिचार ही तो सब कुछ नहीं, आचार विचार भी तो कोई वस्तु है। वासना ही तो सब कुछ नहीं, प्रेम भी तो कोई वस्तु है। यदि वह यह कहें कि यह सब कुछ मनकी मौज है तो वह और भी सत्य से दूर हो रही है। साज-बाजका अर्थ ही यह है कि वह अपना प्रशंसक चाहती है।

केवल यह प्रश्न यहीं समाप्त नहीं होता, आर्थिक दृष्टि से भी तो कितने भयानक परिणाम हैं इसके। सामाजिक दृष्टिसे भी यह फैशन का रोग कितना घातक सिद्ध होता है। आर्थिक दृष्टिसे गृहस्थ जीवन और फैशनका कोई मेल नहीं मिलता। गृहस्थ जीवन ही सुखी हो ले, अथवा फैशन ही रह ले।

दोऊ न होय इक संग भू आलू।
हंसव ठिठाय फुलायब गालू॥

यह तो पतिके खरे पसीनेका दुरुपयोग है और मान लो कि यदि श्रीमतीजी स्वयं कमाती है तो उन्होंने भी इस क्षणिक आवेशमें ही सर्वस्व स्वाहा कर दिया। इस पाउडर, क्रीम, लवंडरके अनुपातमें यदि यहां अन्य सुन्दर पुष्टिकर पदार्थोंके सेवनमें लगाती तो उनके प्राकृतिक सौन्दर्यकी भी वृद्धि होती, मानसिक शक्तियों को भी बल मिलता और गृहस्थ जीवन भी सुखी होता।

"फैशन" का अर्थ ही है तृष्णाओंकी वृद्धि, इच्छाओं के जाल का विकास "तितलियां" बननेकी विचित्र धुन। और तितलियोंका स्वभाव किससे छिपा है, जिस पुष्प पर यौवन बरसता हो, जहाँ परागकी भीड़ हो, बस वहीं उस पुष्पका रसास्वादन करना और फिर नए पुष्प की खोजमें रहना। क्या इस रंगीन तितलीके जीवनको मेरी शिक्षित बहनें श्रेय देंगी? क्या ऐसी रंगीन तितलियाँ बन कर ही वे भारतीय सभ्यता और संस्कृतिकी रक्षा कर सकेंगी?

कालेजमें आज इन तितलियोंकी भीड़ है। कैसा भीषण परिवर्तन करती है शिक्षा उनके जीवनमें। एक दिन वह आती हैं एक सद्गृहस्थकी सुशील पुत्री बनकर अपने जीवनको महान् बनानेकी उच्च अभिलाषा लेकर अपने व्यक्तित्वको बनाने। कितनी मौन रहती हैं वे! सदाचार उनके आंचलसे झांका करता है, उनको सदाचरण पर अभिमान रहता है, पर देखते देखते कलसे आज वे क्या हो जाती हैं। उनकी आंखोंसे कल जहाँ सौम्यता, शीलता टपका करती थी, आज वहाँ छलकती है मादकता, नशीलापन। कल जहाँ उनको भारतीयता पर अभिमान था, आज वे पाश्चात्य वेष भूषाका प्रतिनिधित्व करती हैं। कल जिन्हें सदाचार पर गर्व था, आज वे कैसी ललचाई दृष्टिसे प्रत्येक युवककी ओर दबे छिपे देखकर मुस्करा उठती हैं, और तब इन पंक्तियोंके लेखकके सामने दूर धुंधले

क्षितिज पर साध्वी प्राचीन भारतीय नारी अपनी दुर्दशा पर फूट-फूट कर रोती सी दिखती है।

कैसी नारी ! जिसके गृहमें कहीं क्रीम, लवंडर पाउडर नहीं, फिर भी मलयाचलकी भीनी भीनी सुगन्ध वातावरणको सुरभित बना देती थी, जहां यद्यपि कहीं "रेडियो सैट" नहीं फिर भी सान्ध्य आरतीमें लीन अपने अटपटे स्वरसे विश्व-कुटुम्बकी हित-कामनाकी पुकार गगन-मंडलको वेधकर ही निकल जाती थी; जिसके यहाँ यद्यपि कहीं आधुनिक नावेल, प्रेम-पत्र नहीं फिर भी रामायण, महाभारतका पाठ ही जिनका एक मात्र सहारा था। और मैं मौन होकर उस युगकी सरस कल्पनामें लीन हो जाता हूं, जबकि कालेजका विशाल घण्टास्वर तथा शिक्षित देवीजीकी एड़ीदार ऊँचे बूटोंकी आवाज मेरी तन्द्रा तोड़ देती है, और विद्युत् गतिकी भांति टू दी वीमन (To the women) में महात्माजीकी ये पंक्तियां स्मरण हो आती है।—I have a fear that modern girl loves to be juliet to half a dozen Romeas. She loves adventure, she dresses not to protect herself from wind, rain anb sun but to attract attention. She improves nature by gracing herself and looking extra ordinary. मुझे भय है कि आधुनिक युवती आधे दर्जन रोमियोंके लिए जुलियट बनना चाहती है। वह इसलिए वस्त्र नहीं पहनती कि वर्षा, शीत, घामसे अपनी रक्षा कर सके, वरन् इसलिए कि वह किसी युवकका ध्यान आकर्षित कर सके, वह तो अपनी आकृति को वस्त्रोंसे सुन्दर बनाती है और असाधारण दिखाई देना चाहती है।

तब कभी कभी रस्किन (Ruskin) महोदयका एक सुन्दर मुहावरा स्मरण हो जाता है कि "वह दर्जियों का युग है।" (Tailors age)। कहते हैं। शिक्षा से वे बन्धन मुक्ति चाहती है, किन्तु ठीक इसके विपरीत वे नित्य प्रति अपनी इच्छाओंके बन्धनको सुदृढ़ बनाती जाती है। "फैशन" के जालमें ऐसी बंधी हैं, मानों बिहारी कविका हिरण, जो "ज्यों-ज्यों सुरझि भज्यो चहत त्यों त्यों उरझ्यों जात।" साड़ी का एक एक रेशमी धागा एक लोहे की भारी बेड़ी बनकर उन्हें जकड़ना चाहता है, ऊंची एड़ीकी चप्पलें उन्हें फिसला देख कर उन पर हंसना चाहती है, उनका उन्नत उरस्थल उनकी स्वतन्त्रता प्राप्तिकी मृगमरीचिका पर खिलखिलाना चाहता है। पर वे बेचारी क्या करें "जाही राम दारुन दुःख देहीं। ताकि मति पहले हर लेहीं॥"

यह है वर्तमान शिक्षाका फल। इस शिक्षाको ही यदि हम कहीं श्रेय देने जा रहे हों तो मैं शुद्ध हृदयसे विनयपूर्वक प्रार्थना करूंगा कि हमारा अशिक्षित ग्रामीण नारी समाज ही कहीं अधिक उत्तम है। हमें शरीरके बनावकी आवश्यकता नहीं। हमें तो हृदय चाहिए कलह नहीं, हमें चाहिए नारी तितली नहीं।

इच्छाओंको वृद्धिको आधुनिक अर्थशास्त्र बड़ा महत्त्व देता है। कहता है "इच्छाओंकी वृद्धि मानव उन्नतिका एक मात्र परिचायक है।" दूसरे शब्दोंमें यों कहिए कि "फैशन ही उन्नतिका एक मात्र मूल मन्त्र है।" भगवान् जाने अर्थशास्त्र कहां तक सत्य कहता है, किन्तु यह तो सत्य ही मानिये कि फैशनका प्रचार गृहस्थ सुखके विनाश की ओर तो पहला पद है ही, समाजका सुख नाश करने वाला एक मात्र असाध्य रोग तो है ही, आत्मिक अशान्तिका उत्पादक भी है।

प्रायः सुना है कि मनुष्य बड़ा निर्बल है और सिद्ध वहीं है जो इच्छासे मुक्त है। समय पर एक चायका प्याला न पाने वाले गुजरातीका दृश्य कभी कभी दर्शनीय होता है। तब भला नित नूतनता पसन्द करने वाली, गिरगिटकी भांति पल-पल पर वस्त्र बदलने वाली देवियोंकी दशाका तो कहना ही क्या? अधिकांश समय तो बाथ रूम, ड्रेसिंग रूम, रीडिंग रूममें ही व्यतीत होता है और फिर विवाहकी भी एक नई समस्या खड़ी हो जाती है। ऐसी श्रीमतीको तो वे ही श्रीमान् ले जा सकेंगे जो उनके नखरोंको ही पूर्वजोंके धन से साधा करेंगे।

तभी तो एक जातिमें ऐसे युवकोंके न मिलने पर किसी अन्य धनी मनचले युवककी खोज होती है। संयम का भी जीवनमें एक स्थान है यह तो मानना ही पड़ेगा। सत्य मानिए कि वेष-भूषा, आहार वातावरणका भी उ

पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। वेष भूषा भी ऐसी हो कि वह सौन्दर्यके साथ विनम्रताकी वृद्धि करे, न कि अभिमानकी और वासनाकी। अंगोंको दुराए रहे न कि उभारे।

एक श्वेत वसना साध्वी सुहागिन और एक अपटुडेट शिक्षिता छात्रामें यह विपरीतता देखते ही बनेगी। एक मृदुभाषी, सन्तोषी और विनम्र; दूसरी अभिमानी, असंतोषी और स्वार्थिनी (अपवादका प्रश्न दूसरा है) एक संयम साधनामें रत तो दूसरी प्रतिपल इच्छा वृद्धिमें तल्लीन। और बस यह इच्छा वृद्धि ही तो मानव सुखके विशाल वृक्षको शोषण करने वाली अमर बेल है।

एक बार एक पुस्तक अवलोकन करते समय अचानक ही मेरी दृष्टि उस पृष्ट पर पड़ी जहां विदाके समय एक जापानी मां अपनी बेटीको १४ आदेश दे रही थी। उनमें से एक आदेश था—"बेटी जब कभी अपने घरसे बाहर निकले कभी चटकीले रंगवाले सुन्दर रेशमी वस्त्र न पहन, शृंगार न कर। तेरे शृंगारका एक मात्र उद्देश्य हो अपने पतिको प्रसन्न रखना, अतः उसके सामने चाहे जैसे सुन्दर वस्त्र पहन, मनचाहा शृंगार कर, किन्तु जब कभी उसकी दृष्टिसे दूर हो तो स्वच्छ सादे वस्त्र धारण कर।" फिर भारतकी तो प्रत्येक नारी जानती है कि उसका स्वरूप शृंगार पति ही है। तुलसीने स्पष्ट ही कहा है—

जिय बिनु देह, नदी बिनु वारी।
तैसे ही नाथ! पुरुष बिनु नारी॥

और—

एकै धर्म एक व्रत नेमा।
काय, वचन, मन पति-पद-प्रेमा॥

यहां लेखक यह भी स्पष्ट कर देना चाहता है कि जिस प्रकार वह आधुनिक फैशनका विरोधी है उसी प्रकार वह विरुद्ध है उन घेर घुमेर घाघरोंका जो बरसोंमें एक बार जल दर्शन करते हैं, उन आभूषणोंका जो शरीर पर व्यर्थ में भार रूप हैं। वह तो केवल उस वेशभूषाका समर्थक है जो पूर्ण स्वच्छन्द वैज्ञानिक दृष्टिसे उपादेय तथा चटकीली भड़कीली न हो।

यह तो हुआ अप्राकृतिक शृंगारके लिए अर्थात् उन स्त्रियोंके लिए जो सदैव प्रकृति शृंगारसे दुरा लेना चाहती हैं और गांधीजीके इन शब्दोंका समर्थन करती हैं। "Instead of adorning the soul within her she had set about adorning her body and has succeeded so well in her Design that woman of to day do not know that she had begun to her bodily adornment which was almost asign of slavery।" (आत्माको सजानेकी अपेक्षा आधुनिक नारी समाज तो शरीर सजानेकी धुनमें पागल है और यहां तक सफलता प्राप्त भी कर ली है कि वह यह भी भूल गई है कि जिस बन्धनसे मुक्ति प्राप्त करना चाहती है उसी बन्धनमें अपने आपको जकड़ रही है।) कैसी वेदना भरी है उनके शब्दोंमें। तुम्हारे माता पिता तुम्हें पाठशालाओं में गुड़िया बननेके लिए नहीं भेजते, वे तो भेजते हैं तुम्हें अपने हृदयमें विश्वबन्धुत्व उत्पन्न करनेके लिए। वास्तव में इन गुड़ियाओंका जीवन बड़ा दयनीय है।

अब दो शब्द उनके लिए भी लिखूं जो स्वयं सुन्दर हैं, विधाताकी जिन पर विशेष कृपा है, वे इस लिए शृङ्गार करती हैं मानो उन्हें रूपके हाटमें जाना है, रूपका सौदा करने। आश्चर्य है कि जिन पर स्वयं सौन्दर्य देव प्रसन्न हैं उन्हें ऊपरी बनावटी शृंगारसे क्या प्रयोजन। कवि केशवने उस म्लानमुखी, एक वेणी बांधे, मैली साड़ी धारण किए, मां सीताका किन सुन्दर शब्दोंमें वर्णन किया है—

गुही एक बैनी मिली मैल सारी।
मृणाली मानों पंक ते काढ़ि डारी॥

इस कवि दृष्टिको छोड़कर भी यह तो सत्य है कि सौन्दर्यका अपना आभूषण है, जादू है, बिना किसी बुलावके वह तो निरन्तर मानव मात्रको अपनी ओर बुलाता रहता है। एकांकमें कहीं एक कोनेमें खिला कुसुम पथिककी आंख चुरा नहीं सकता। ठीक इसी प्रकार वह भाग्यवान् गृहलक्ष्मी अपने सौन्दर्यकी छाप तो अपने वातावरण पर लगाती है और उसे नन्दनवन बना लेती है। यही तो उसका सौन्दर्य है, सदाचार लज्जा पवित्रता ही तो उसका साज शृंगार है। कुटुम्बका सुव्यवस्था पूर्वक संचालन ही तो उसका सौन्दर्य सूचक है। सौन्दर्य तो कहीं छुपाए नहीं छुपता, चाहे वह किसी आकृतिमें क्यों न रक्खा जाए।

भाग्यफल

[ले०—श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

अगहन मासमें जन्मे व्यक्तियोंका फलादेश

अगहन अथवा मार्गशीर्ष मासमें जन्मे व्यक्ति चुम्बुकीय आकर्षण-शक्ति वाले होते हैं। इनकी शक्तिका विकास चरम रूपमें हो सकता है। अधिनायकता (डिक्टेटर शिप) इन्हें अधिक प्रिय होती है और सब कार्योंमें ये अपनी ही बातको रखना चाहते हैं। कृष्णपक्षके जन्मे व्यक्ति पराक्रम शाली होते हैं, ज्ञान, विज्ञान राजनीति आदि अनेक विषयों के पंडित होते हैं। इनके पराक्रमके समक्ष बड़ी से बड़ी शक्ति भी झुक जाती है। धैर्य और गतिशीलता इनके जीवनमें कूट-कूट कर पायी जाती है, प्रारम्भिक जीवन इन लोगोंका अत्यन्त विलासी होता है, परन्तु एकाएक इनका जीवन ऐसा बदलता है, जिससे इन्हें त्यागमय परिश्रमी जीवन बिताना पड़ता है। इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंमें से कुछ व्यक्ति संसारके इनेगिने व्यक्तियोंमें होते हैं, इनके चमत्कारी भाग्यके समक्ष संसारको आश्चर्यान्वित होना पड़ता है।

इस मासमें जन्मे कुछ व्यक्तियोंमें ईर्ष्या, द्वेषकी भावना अत्यन्त प्रबल होती है। कभी-कभी ये व्यक्ति अन्य लोगोंके लिए भयानक हो जाते हैं, तथा इनसे रक्षा पाना सहज काम नहीं होता। एक बार जिसके ऊपर इनकी बक्र दृष्टि हो जाती है फिर उसे बिना नष्ट किए नहीं छोड़ते हैं। यद्यपि ये दृढ़ प्रतिज्ञ होते हैं पर अवसर आने पर कभी कभी अपनी प्रतिज्ञा छोड़ भी देते हैं। इनकी शक्ति इतनी अधिक होती है जिससे शत्रु बिना चूं चपड़ किए नम्रीभूत हो जाते हैं। इनका चरित्र साधारणतया सुदृढ़ होता है, परन्तु कृष्णपक्षमें जन्मे व्यक्तियोंका चरित्र उतना अच्छा नहीं होता। वासना इनमें इतनी अधिक प्रबलता से रहती है, जिससे इन्हें कभी कदाचित् दुराचारकी ओर झुकना पड़ता है।

ये स्वयं अपने स्वामी रहते हैं, दूसरोंके अण्डरमें रहना इन्हें पसन्द नहीं होता, प्रशंसा और चाटुकारिता इन्हें पसंद नहीं होती और ये स्पष्टवादिता ही अधिक चाहते हैं। ये मंत्री, अभिनेता, सर्जन, प्रोफेसर, शिक्षक, वैज्ञानिक, कृषक और साधारण व्यापारी होते हैं। इस मास वाले व्यक्तियों को प्रबन्ध कार्यमें बहुत सफलता मिलती है। यदि आत्म-संयम और आत्म-नियंत्रण रखना सीख जायें तो इन्हें व्यापारमें भी सफलता मिल सकती है। सहन शक्ति इस मास में जन्मे व्यक्तियोंमें प्रथम श्रेणीकी होती है। कठोरसे कठोर विपत्तिमें भी घबड़ाते नहीं हैं, तथा मौका पड़ने पर छोटेसे छोटा कार्य भी प्रेमपूर्वक कर लेते हैं। आदर और प्रतिष्ठाकी इन्हें आकांक्षा अधिक होती है। जरा-सा अपमान होने पर भी इनकी अन्तरात्मा विद्रोह करने लगती है। यात्रा ये खूब करते हैं। देश-विदेशोंमें परिभ्रमण कर अपने ज्ञान भण्डारकी वृद्धि करते हैं।

शुक्लपक्षमें जन्मे व्यक्ति गणित और भूगोलमें भी प्रवीणता प्राप्त कर लेते हैं। छात्र वर्ग या कर्मचारियों पर अपना अनुशासन सुन्दर ढंगसे चला सकते हैं, प्राचीन

फिर उस स्त्रीको जिसे गृहदेवी बनना है उसे इस अप्राकृतिक आवरणसे क्या प्रयोजन ? यह तो वैश्याओंको शोभा देता है, जो रूपका मोल लेती हैं। बस उनके रूपकी सराहना तो उनके गृह कार्य कुशलतासे ही हो सकेगी।

अतः बहिनों! इस अप्राकृतिक शृंगारको छोड़ अपने आपमें वह दिव्य तेज प्रकटाओ कि पुनः तुम्हारे प्रभावसे सब गृहकलह मिटकर सदगृहस्थीका प्रचार हो। हमें तुम्हारी कोंख पर गर्व है, विश्वास है।

—❀—

भषाके प्रचारक होकर विदेशमें भी जाते हैं, ये दूसरोंको कभी कभी उनकी भलाईके लिए कष्ट भी पहूँचाते हैं तथा जोखिम उठाकर भी इन्हें काम करना पसन्द होता है, परंतु हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहना इन्हें पसन्द नहीं होता। ये चुभती हुई बातें कहते हैं और विपत्ति के समय बड़ी ही शांतिसे काम लेते हैं। इनका स्वभाव कुछ क्रोधी, स्वाभिमानी और निर्भीक होता है।

इस मास वाले व्यक्तियोंका स्वास्थ्य साधारणतः अच्छा होता है। ये बहुत कम बीमार पड़ते हैं, इनके कुटुम्बी इन्हें अधिक प्रेम करते हैं और अवसर पड़ने पर इनके सहायक अनेक व्यक्ति हो जाते हैं। इनकी कार्य प्रवीणता के सामने असफलताको भी झुकना पड़ता है। इनके हाथ से अनेक कार्योंका श्रीगणेश होता है तथा इन्हें भूमिके नीचेसे भी धन मिलता है। जिनका जन्म अगहन कृष्णा १, ३, ८, ११, १३ और १४ को होता है वे व्यक्ति मध्यम कोटिके धनी, जिनका जन्म कृष्णपक्षकी ७, ६, १० तिथियों को होता है वे उच्च कोटिके धनी एवं कृष्णपक्षकी ४, ५, ६ तिथियोंमें जन्म लेने वाले अल्प धनी या दरिद्री होते हैं। शुक्ल पक्षकी १, २, ५, ७, १०, ११, १२, १४ और १५ को जन्म लेने वाले साधारणतः धनी और ३, ४ को जन्म लेने वाले प्रायः दरिद्री होते हैं।

इनके स्वभावमें यह विशेषता होती है कि इनके प्रभावमें आकर उद्दण्डसे उद्दण्ड कोई भी व्यक्ति इनका आदेश पालने लगता है। जिस व्यक्ति पर इनकी कृपा हो जाती है, फिर उस व्यक्तिका साथ ये सर्वदा देते हैं। यद्यपि इनका घरेलू जीवन सुख और शांतिमय नहीं होता है, पर सामाजिक जीवन इनका बड़ा ही आदर्श होता है। सदा ये समाजके मुखिया बनकर उनका संचालन करते हैं, जिन व्यक्तियों का जन्म कृषक परिवारोंमें होता है, वे वहां भी पंचायतके सर्व-सर्वा होते हैं और समाजका संचालन सुन्दर ढंगसे करते हैं। पाश्चात्य ज्योतिषके सिद्धान्तानुसार इस मास वाले व्यक्ति उग्र स्वभावके होते हैं, तथा इंजिनियरिंगमें बहुत चतुर होते हैं। घर बनानेके कार्योंमें इनकी प्रतिभाका दूसरा नहीं होता। प्रतिभा इनकी विलक्षण होती है, और हस्तकौशलके कार्योंमें अपनी प्रतिभाका सदुपयोग करते हैं।

नारचन्द्र जैनाचार्यके मतसे इस मासमें जन्मे व्यक्ति प्रायः शारीरिक या बौद्धिक योद्धा होते हैं, और इनका प्रारम्भिक जीवन बड़ी कठिनाईसे बीतता है। अपने साहस और दृढ़ संकल्पके कारण अन्तमें इन्हें सफलता मिलती है। वे आवेगशील स्वतन्त्र और जल्दी काम करने वाले होते हैं, तथा सर्वाधिकार चाहते हैं। स्वाधीनता प्राप्त करना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। जब इनके गोचर में मंगल और शनि अष्टम में आते हैं उस समय इनका झगड़ा होता है। प्रोफेसरीमें ये सफल नहीं होते हैं। पर, सफल कवि या दार्शनिक अवश्य हो सकते हैं। कविता इन्हें अधिक प्रिय होती है। ये लोग सफल सैनिक भी बन सकते हैं और अपने साहसके कारण किसी भी आन्दोलन के नेता भी बन जाते हैं। इनकी पहुँच प्रायः सभी जगत् के ऊंचे-से-ऊंचे व्यक्तियोंके पास होती है। इन्हें स्त्रियों से सावधान रहनेकी आवश्यकता होती है, जब ये किसी नारीके प्रेम पासमें बंध जाते हैं, तो अपना सर्वस्व बिना नाश किये नहीं छोड़ते।

इनकी भावना सदा अपनी महत्ता प्रदर्शित करनेकी होती है और यही चाहते हैं कि लोग हमें स्वामी या श्रेष्ठ समझें। इनकी दृष्टिमें अपना गौरव सबसे बड़ा होता है, इसलिए ये अपनी आलोचना सुनना पसन्द नहीं करते। वे स्वयं अच्छे आलोचक होते हैं पर अपनी आलोचनासे घृणा करते हैं। अहंमन्यताकी भावना भी इनमें न्यूनाधिक्य रूपमें पायी जाती है। इनके जीवनमें अनेक दुर्घटनायें घटती हैं। अग्नि या बारूदसे जलनेका इन्हें भय रहता है, जरा-सी असावधानीमें इनकी बड़ी हानि हो जाती है। इनमें नपुंसकता समयसे पहले आती है। कुछ व्यक्ति इस मासके जन्मे नशीली वस्तुओंका प्रयोग भी अधिक करते हैं तथा कुछकी मृत्यु भी नशेके कारण हो जाती है।

विवाह और मित्रता

अगहन मासमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंका विवाह ११, १३, १७, १८, १६, २०, २२, २३, २५, २७, २८ ३०, ३२, ३५, ३६, ३८, ४२ और ४६ वर्षकी आयुमें होता है। जिनका जन्म कृष्णपक्षकी १, ३, ४, ५, ६, ११, १४ और ३० तिथियोंमें होता है, उनके प्रायः दो विवाह होते हैं। अवशेष कृष्णपक्षकी तिथियोंमें जन्म लेने वाले

व्यक्तियोंका एक विवाह होता है । रवि, सोम, मंगल, और गुरुवारको जिनका जन्म होता है उनका विवाह अवश्य होता है । शुक्रवारकी रातको उत्पन्न होने वालोंको पत्नीका वियोग जल्दी होता है तथा आधीरातके पश्चात् जन्म लेने वालोंके दो विवाह होते हैं, शुक्रवारके मध्यान्हमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंका एक ही विवाह होता है, तथा ये व्यक्ति परस्त्रीसे प्रेम भी करते हैं। बुध और शनिवारको जन्मे व्यक्तियोंके दो विवाह भी होते हैं।

अगहन मासमें जन्मे व्यक्तियोंके मित्र अधिक संख्यामें होते हैं । इनके स्वभावमें इतना वैशिष्ट्य होता है कि जहां रहते हैं वहां प्रेमका वतावारण बनाये रखते हैं, जिससे मित्रोंकी संख्या अधिक होती है । इनके सच्चे मित्र भी कई होते हैं तथा समय आने पर इनके मित्र जान देनेको भी तैयार रहते हैं, शत्रुओंकी संख्या भी अधिक होती है परन्तु शत्रु इनका अनिष्ट नहीं कर पाते हैं ।

घातक वर्ष

अगहन मासमें जन्मे व्यक्ति पूर्णायु वाले होते हैं। बहुत कम व्यक्तियोंका अकाल मरण होता है । हां, बीमारियां इन लोगोंको उत्पन्न होती हैं, पर ये जल्दी ही स्वस्थ हो जाते हैं, एलोपैथिक चिकित्सा इस मास वाले व्यक्तियोंको लाभ नहीं करती है । बीमार होने पर आयुर्वेदिक चिकित्सा ही अधिक लाभदायक होती है । जन्मसे ३, ८, १०, १२, १३, १६, २०, २२, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३८ ४२, ४५, ४६, ४६, ५२, ५४, ५५, ५७, ५६, ६५, ७०, ७४ और ७६ वें वर्षोंमें अधिक कष्ट होनेकी संभावना है । इस मासके शुक्लपक्षमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंको बालारिष्ट भी होता है । इस लिए किसी-किसीके मतमें जन्मसे ८ वाँ २१ वां २८ वां दिन तथा १, ३, ५; ६, ७, ६, ११ वें मास भी कष्ट कारक माने गये हैं । बात और कफ कारक वस्तुओंसे बचना चाहिए ।

अच्छा और बुरा समय

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंका जीवन साधारणतः आनन्द पूर्वक व्यतीत होता है। विशेष रीतिसे विचार करने पर १४, १८, २०, २१, २६, २४, २७, ४२, ५४, ५५, ५७, ५६, ६१, ६२, ६३, और ७४ वें वर्षोंमें विशेष दुःख होता है । इनका पूर्ण भाग्योदय १८ वर्षकी आयुसे प्रारम्भ होता है । २८ वर्षकी आयुसे ४२ वर्षकी आयुके मध्यका समय जीवनकी सफलताका होता है, और ४६ से ५६ वर्ष की आयु तकका काल स्वास्थ्यके लिए कुछ हानिकारक होता है तथा आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक कठिनाइयोंका सामना भी व्यक्तिको इसी समयमें करना पड़ता है ।

सन्तान सुख

अगहन मासमें जन्मे व्यक्तियोंको पुत्रोंकी अपेक्षा कन्या सुख अधिक होता है । परन्तु जिन व्यक्तियोंका जन्म शुक्ल पक्षमें होता है उन्हें ६ पुत्र और ५ कन्यायें तक होते हैं। कृष्ण पक्षमें जन्म ग्रहण करने वालोंको ४ कन्यायें और अधिकसे अधिक दो पुत्र होते हैं।

अनुकूल समय

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको मंगलवार विशेष लाभदायक होता है । महीनोंमें कार्तिक, अगहन, वैशाख, और श्रावण अच्छे बताये गये हैं। तिथियोंमें ४, ५, ७, ११, १३, और १५ विशेष अच्छी १, ३, अनिष्ट कारक और अवशेष तिथियां मध्यम होती हैं। संख्यामें इन्हें सदा ६, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ६०, ६६, १०८ श्रेष्ठ हैं तथा जिन संख्याओंका योग ६ हो, ऐसी संख्याएँ भी उत्तम बतायी जाती हैं।

आर्थिक स्थिति

इस मास वालोंकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। प्रायः ये लोग अच्छे धनी होते हैं । युवावस्थामें इन्हें अच्छी आय होती है। वृद्धावस्थामें आर्थिक संकट उत्पन्न होता है। २४, २७, २८, ३२, ३५, ३६, ४०, ४८ और ५६ वें वर्षमें अच्छी आय होती है । ३६, २८, ४४, ४६, और ६४ वें वर्षमें आर्थिक संकट होता है।

अगहन मासमें जन्मी नारियोंका फलादेश

इस मासमें उत्पन्न होने वाली नारियां सफल गृहणी होती हैं, इन्हें माता बननेकी उत्कट इच्छा रहती है, और जबसे इनका विकास आरम्भ होता है उसी समयसे माता बननेकी इच्छा जागृत हो जाती है, इनका स्वभाव मिलन-

[शेष पृष्ठ ४३ पर]

उ० भा० ज्यौतिष-सम्मेलन दिल्लीके सभापति

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्यका

अभिभाषण

यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम् ॥
यद्भासा भासते सर्वं भू नीर गगनस्थितम् ।
शिवाय सिद्धरूपाय तस्मै ज्योतिष्मते नमः ॥

अयि ! सुरसरस्वती समुपासनतत्पराः पूर्वप्रकाशकप्रतिभाप्लवोत्तीर्णापूर्वपारावाराः त्रिकालज्ञमहर्षिदृष्टमन्त्रतन्त्रादि परितोषितामराः, दिव्यग्रहर्क्षादिगतिज्ञानप्रभाव विविधवृत्तविदितचराः ज्योतिर्वित्प्रवराः ! स्वमहत्वमडितमहिमण्डला महनीय महिलाः सततवितरणकलितकराः परिषदीहसमुपस्थिता श्रीमन्तो जिज्ञासवः दानवीराः धीराश्च सत्यमेव महामहोमयोऽयमवसरः समुपस्थितः समेषां प्रत्नसनातनार्यसंस्कृतिसमुपासकानां कृते, यदत्र भारतराजधान्यां नानादिग्देशादागताः मान्याः वदान्याः विद्वांसो दैवज्ञाः संस्कृतप्रचारसममेव ज्योतिर्विज्ञानोन्नत्या अपि सन्नद्धपरिकरा दृश्यन्ते । यद्यप्यस्मिञ्ज्योतिर्विज्ञानसम्मेलने अनेके मत्तो वरिष्ठाः वर्षीयांसश्च दैवज्ञशिरोमणयः स्वोपस्थित्या अधिवेशनमदः समलङ्कुर्वन्तश्चकासन्ततराम्, तथापि समग्रविज्ञ विद्वद्धौरेयैरयमेव जनः साभापत्यायादिष्टो ऽतः स्वासामर्थ्यं सम्यगवगच्छन्नपि महतामादेशं प्रणिपातविनम्रशिरसा वोढुमेवेहोपस्थितोऽस्मि । सुविदितचरमेवेतदत्र भवताम् प्रेक्षावतां श्रीमतां यत् षट्स्वपि वेदांगेष्वक्षिस्थानीयमेकं ज्योतिषमेव प्रत्यक्षं शास्त्रं दरिदृष्यते ।

कालज्ञानादृतेदृष्टापूर्वादिकं किमप्यभ्युदय निश्रेयस साधकं कर्म न प्रसिध्येत्, तत्कालज्ञानं च ज्योतिर्विज्ञानाधीनमिति निश्चप्रचम् । एतादृशस्य महत्त्वशालिनो ज्योतिश्शास्त्रस्योन्नयनायैव वयमत्र समेता इति महद्धर्षास्दम् ।

सम्मेलनेऽत्र समग्रा एव विचारधारा सुरगिरा एव प्रवर्तेत इति मेऽभिलाषस्तथाप्यत्रोपस्थित सर्वजनलाभधिया राष्ट्रभाषयैव स्वाकूताः प्राकाशयितव्या इत्यालोच्य सम्प्रति श्रीमतां समक्षे स्वाभिप्रायाः हिन्दीभाषायामेव संक्षेपतः प्रस्तूयन्ते ।

आदरणीय दैवज्ञवृन्द ! एवं उपस्थित सभ्यगण !

आज मैं जिस विषयको लेकर आपके समक्ष उपस्थित हो रहा हूँ वह अत्यन्त जटिल और गवेषणापूर्ण है । जो विषय केवल ज्ञान गम्य है, जिसमें हमारे ऋषि मुनियोंका सारा आध्यात्मिक जीवन व्यतीत हो गया । जिस पर शास्त्रकारोंका नाना प्रकारका विचार विमर्श हो रहा है—उस पर मेरे जैसे व्यक्तिका अभिभाषण सूर्य प्रभाके सामने खद्योतसे भी गया बीता कहा जा सकता है, फिर भी कविकुलगुरु कालिदासकी—

'मणौ वज्र समुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः ।'

इस उक्तिके अनुसार अपने कुछ विचार आपके सामने प्रकट करनेका साहस कर रहा हूँ ।

महोदयों ! ज्योतिःशास्त्र वेदका प्रधान अङ्ग नेत्र रूप है । जिस क्षणसे सृष्टिका आविर्भाव हुआ उसीके साथ ही ज्योतिर्विज्ञानका भी आविर्भाव हुआ । विश्वात्मा भगवान् सूर्य और सृष्टिसर्जक ब्रह्मदेव तथा व्यास वशिष्ठ अत्रि पराशरादि १८ महर्षिगण ज्योतिःशास्त्रके आदि प्रवर्तक माने जाते हैं । अतः यह निर्विवाद सिद्ध है कि हमारा यह

ज्योतिर्विज्ञान अत्यन्त प्राचीन लोक कल्याणकारी जीवनशास्त्र है। इसके बिना संसारका कोई भी कार्यकलाप सुव्यवस्थित रूपसे संचालित नहीं हो सकता। वैदिक यज्ञादि कार्य-कलापकी सिद्धिके लिए भी इस ज्योतिशशास्त्रकी परम आवश्यकता है। जो इस काल-विधान-शास्त्रको नहीं जानता वह न तो ठीक समय पर यज्ञादि करवा सकता है और न ईश्वरीय ज्ञान (वेद) के रहस्योंको ही समझ सकता है। वेदाङ्गज्योतिषमें लिखा है—

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान ॥

बात ठीक ही है, शुभाशुभकालको बतलानेवाला यही एक शास्त्र है, इसके बिना मनुष्य अन्धा है वह वैदिक विभूतियोंको देख नहीं सकता।

ज्योतिषशास्त्र और ग्रह नक्षत्रोंके नामकी सार्थकता—

हमारे क्रान्तदर्शि महर्षियोंने जिस वस्तुका जो भी नाम रक्खा है वह सब सार्थक है, कोई भी शब्द निरर्थक नहीं। शब्द ब्रह्म माना गया है। ज्योतिशशास्त्र और ग्रह नक्षत्रादिके सार्थक नाम इस प्रकार निष्पन्न होते हैं—महर्षिगण दीख पड़ने वाले प्रकाशमान् तारकपुञ्जोंका निरन्तर वेध करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इनकी स्थिति दो प्रकारकी है। इनमें कोई तो गतिशील और कोई निश्चल है। जिन तेजः पुञ्जोंका अपने स्थानसे तनिक भी संचलन उपलब्ध नहीं हुआ वे (न क्षरतीति) 'नक्षत्र' नामसे संकेतित किये गये और जो गतिशील एवं आकर्षण शक्तिशाली थे उनमें अन्य पिण्डोंके लिए ग्राहकता शक्ति होनेके कारण (गृह्णातीति ग्रहः) 'ग्रह' इस सार्थक नामसे अभिहित हुए। अतः इन ज्योतिर्मयपिण्डोंसे सम्बन्ध रखने वाला शास्त्र 'ज्योतिशशास्त्र' इस नामसे प्रसिद्ध हुआ। इन ज्योतिर्मयपिण्डोंमें जो जिस रूप में दीख पड़े, उनके विषयमें जैसा भी ज्ञान जैसे जैसे प्राप्त होता गया, उसीके अनुसार उनके नाम भी निर्धारित होते गये। जैसे आकाशमें अत्यन्त दूरवर्ती एक तेजःपिण्डका शनैः शनैः (धीरे-धीरे) चलन होनेके कारण 'शनैश्चर' नाम पड़ा। सबकी अपेक्षा पिण्डके गुरु (बृहत्) होनेसे 'गुरु' 'बृहस्पति'। पृथ्वीके समान गुण होनेके कारण भौम, क्षितिज, कुज और जलते हुए अङ्गारेके समान होनेके कारण 'अङ्गारक'। आकाशमें नित्य 'सरण' गमन करनेके कारण 'सूर्य'। श्वेत वर्ण रूप में प्रकाशित होने और चन्द्रमाकी भांति कांतिमें ह्रास वृद्धि होनेके कारण 'शुक्र' 'सित'। सबसे पीछे वेधादिके द्वारा बोधन (ज्ञान) होनेके कारण 'बुध' चन्द्रमाकी कक्षाके समीप होने से 'चन्द्रज'। मनुष्योंके मनको चन्दन (आह्लादन) करनेके कारण 'चन्द्र' इत्यादि। इस प्रकार सभी तेजःपिण्डोंके उनके गुण धर्मके अनुसार ही सार्थक नाम निर्धारित किये गये हैं।

सौरजगत्के इन तेजःपिण्डों (ग्रहों) का जड़ चेतन पर प्रभाव—

अब यह बात तो पाश्चात्य विज्ञान से भी सिद्ध हो चुकी है कि इस सौर जगत्में जितने ग्रह उपग्रह तारे आदि हैं उनका परस्पर आकर्षण विकर्षणका सम्बन्ध है। वे सब एक दूसरेसे कुछ लेते देते रहते हैं। पृथ्वीमें जितनी वस्तुएँ हैं वे सब चन्द्रज्योति-प्रधान एवं सूर्यज्योति-प्रधान हैं। जिनमें चन्द्र ज्योतिकी प्रधानता है वे सब वृक्ष, वनस्पति, लता औषधि पशु, पक्षी, मनुष्यादि स्त्री जातिके हैं और जिनमें सूर्य ज्योतिकी प्रधानता है वे सब पुरुष जातिके होते हैं। इन सबके साथ सूर्य और चन्द्रमाका अटूट सम्बन्ध है। संसारकी आत्मा एवं बुद्धि सूर्य है और मन चन्द्रमा। श्रुति (वेद) ने भी इसका समर्थन किया है—"सूर्य आत्मा जगतस्थुषश्च" "धियो योनः प्रचोदयात्" "चन्द्रमा मनसो जातः" इत्यादि। समस्त पदार्थोंमें दो प्रकारकी शक्तियाँ रहती हैं। किसीमें एककी प्रधानता अधिक होती है तो किसीमें दूसरेकी। चन्द्रमा औषधियोंको रस प्रदान करता है इसीलिए चन्द्रमाका एक नाम 'औषधीश' भी है—'औषधीशो निशाकरः" और सूर्य उन में ज्ञान शक्ति एवं प्राणशक्ति प्रदान करता है। रसदार फलोंमें चन्द्रमाकी प्रधानता अधिक और सूर्यकी प्रधानता न्यून रहती है—जैसे अंगूरमें जब तक चन्द्रमाका प्राधान्य रहेगा, तब तक वह रसदार अंगूरके रूपमें रहेगा और ज्योंही उसमें सूर्यका

प्राधान्य अधिक हुआ त्यों ही धीरे धीरे वही अंगूर अपना रूप बदल कर किसमिस या मुनक्काके रूपमें आ जावेगा। उस समय उसमें रसकी प्रधानता नहीं रहती, ज्ञान और बलकी प्रधानता रह जाती है। इससे स्पष्ट है कि सूर्य चन्द्रमा और ग्रहपिण्डोंका प्रभाव संसारकी जड़ चेतन सभी वस्तु मात्र पर निरन्तर पड़ता रहता है। ज्योतिर्विज्ञानके महान् आचार्य श्री वराहमिहिरने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ बृहज्जातकके मङ्गलाचरणमें ही कितने सुन्दर रूपमें जगदाधार भगवान् सूर्यकी महिमाका वर्णन किया है, देखिये—

मूर्तित्वे परिकल्पितः शशिभृतो वर्त्मापुनर्जन्मना--
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतां भर्ताऽमर ज्योतिषाम्।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुतौ
वाचं नः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥

तात्पर्य यह है कि यही सूर्य कल्याणकारक शिव का रूप है, योगियोंका परमगम्य स्थान है। जीवमात्रका आत्मा है, यज्ञोंका प्रतिपादक तथा देवता ग्रह नक्षत्रोंका स्वामी है। यही जगत्का नाश उत्पन्न और पालन करने वाला तीनों लोकोंका दीपक है।

कुछ एक पाश्चात्य शिक्षाविभूषित (विदूषित !) नेता एवं उच्चशासक ग्रहोंके प्रत्यक्ष प्रभावको नहीं मानते। वे यदा कदा इस ज्योतिर्विज्ञान पर व्यंग्य-बाण छोड़ते रहते हैं और कहते हैं कि "यह सब ढकोसला है। इतनी दूर आकाश में रहने वाले बिचारे सूर्य चन्द्र आदि ग्रहोंको क्या पड़ी है जो हमारे काममें दखल देवें।" इत्यादि अनर्गल अनधिकार चर्चा करते हैं। परन्तु मैं उनसे पूछता हूं कि जिस क्षण सूर्य और चन्द्रमाका प्रभाव संसार पर पड़ना रुक जायेगा, वे अपना दखल छोड़ देंगे उस क्षण क्या आप सृष्टिको प्रलयसे बचा सकेंगे ? मन और बुद्धि रूप चन्द्र सूर्यका किसी प्राणिके मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ जावे तो वह प्राणी विक्षिप्त (पागल) हो जाता है, क्या आप उसे रोक सकते हैं ? शुक्ल पक्षमें चन्द्रमाकी वृद्धिके साथ ही समुद्रमें ज्वार भाटा भी बढ़ता जाता है और पूर्णमासीके पूर्ण चन्द्रमामें समुद्रमें ज्वार भाटेका तूफान सा आ जाता है, क्या इसे आप अपनी किसी भी वैज्ञानिक शक्तिसे रोक सकते हैं ? इन्हीं तिथियोंमें रोग बढ़ जाते हैं, श्वास रोगियोंकी स्थिति भयानक हो जाती है, उन्माद ग्रस्त रोगियोंकी प्रकृतिमें सहसा परिवर्तन हो जाता है, यह सब क्यों ? अभी अभी गत ता० २० जूनको सूर्यग्रहण देखनेसे दो व्यक्ति बिलकुल नेत्र हीन (अन्धे) हो गये हैं। यह सूर्य चन्द्रमाका प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं तो और क्या है ? ग्रहणसे पहले पत्रोंमें सरकारी घोषणा भी प्रकाशित हुई थी कि—'कोई खुली आंखसे सूर्यग्रहण न देखे अन्यथा अन्धा हो जावेगा।' जब ग्रहोंका कोई प्रभाव वा अस्तित्व ही आप नहीं मानते हैं तो फिर करोड़ों मील दूरस्थ सूर्यने इन प्राणियोंकी नेत्र-ज्योति कैसे हर ली ? इससे स्पष्ट मानना पड़ेगा कि ये लोग माने चाहे न माने ग्रहोंका प्रभाव अवश्य होता है। संखिया (विष) कोई व्यक्ति जानकर खाए तब भी मरता है और अज्ञानवश खाने पर भी मरेगा अवश्य। विष तो अपना प्रभाव करेगा ही। ग्रहोंका प्रभाव भौतिक जगत्में भी भली भांति देखा जा सकता है। उनसे मानसिक प्रवृत्तियां और आध्यात्मिक आकांक्षाएँ भी जाग्रत होती हैं। भौतिक जगत्में हम देखते हैं कि भूकम्प आदिकी घटनाएँ गुरु शनि और भौमकी गतियोंके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। प्रत्येक परमाणुकी बनावट और शक्तिके साथ सौर जगत्की स्थितिका घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनुष्यका शरीर ऐसे कई परमाणुओंसे बना है तब फिर उस पर सौर जगत्का प्रभाव कैसे नहीं पड़ेगा ? चट्टानोंका बनना बिगड़ना और वर्षा का होना न होना यह सब सूर्यके ऊपर निर्भर है। वर्षाका प्रभाव हमारी उपज (फसल) हमारे स्वास्थ्य और हमारी आर्थिक स्थिति पर कितना अधिक पड़ता है यह सभी जानते हैं। आईन्सटाईन आदि पाश्चात्य विद्वानों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि—प्रकाश अथवा विद्युत् लहरोंकी भांति गुरुत्वाकर्षणकी लहरें भी ग्रहोंके द्वारा तरंगित हुआ करती हैं। इन लहरोंके सम्बन्धमें दूरीका कोई प्रश्न ही नहीं उठता, वे सूर्य चन्द्र आदि अनेकानेक ग्रहोंकी गतियों पर प्रभाव डाला करती हैं, तब फिर मनुष्य जो इतना छोटा प्राणी है उस पर इन लहरोंका प्रभाव कैसे नहीं पड़ेगा।

बन्धुओं ! ये नेता और उच्च शासकगण अधिकारारूढ़ हुए हैं ये भी तो योगकारक ग्रहोंके प्रभावसे शुभदशापरिपाक आने पर ही अपने प्रारब्धकर्मानुसार उच्चपदस्थ हो सके हैं। ग्रहोंका प्रभाव भी मनुष्यके पूर्वजन्मार्जित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार ही पड़ता है। यह मैं पहले ही कह चुका हूँ कि ज्योतिश्शास्त्र वेदका नेत्र है। नेत्रका कार्य है भली बुरी सभी वस्तुमात्रको दिखा देना। इस शास्त्रके द्वारा विद्वान् दैवज्ञ समष्टिरूपमें सम्पूर्ण राष्ट्र एवं व्यष्टिरूपमें प्राणिमात्रकी जन्म-कुण्डलीका सूक्ष्म रूपसे अध्ययन करके उसके सम्पूर्ण जीवनके सुख दुःख, हानि लाभ, जीवन-मरण, सदाचार दुराचार, यश अपयश आदिके समग्रको शीशेकी भांति स्पष्ट रूपमें प्रत्यक्ष देख सकता है। इसीलिए सब शास्त्रोंमें (वेदाङ्गोंमें) ज्योतिषको सर्वोत्कृष्ट शीर्ष स्थान प्राप्त है। वेदाङ्ग ज्योतिषमें कहा है—

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा । तद्वद्वेदाङ्ग शास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनिसंस्थितम् ॥

मैं अपने सीमित साधन और ज्ञानके द्वारा इस विज्ञानकी विगत २८ वर्षोंसे यत्किञ्चित् सेवा कर रहा हूँ। विगत १४ वर्षोंसे 'श्रीस्वाध्याय' पत्र और 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में मैंने 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' स्तम्भमें ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर सूक्ष्म पर्यवेक्षण करके देश विदेशके घटनाचक्र एवं राष्ट्रनायकोंके सम्बन्धमें जो कुछ भविष्य सूचन किया उसकी सत्यताने जनताको इस विज्ञानकी ओर विशेषरूपसे आकर्षित किया है। और जो लोग ज्योतिर्गणनाके आधार पर की गई भविष्यवाणियोंपर विश्वास नहीं करते थे उन्हें भी नतमस्तक हो इस विज्ञानकी सत्यताको स्वीकार करना पड़ा है। अनेक राजा महाराजाओं, विशिष्ट विद्वानों, नेताओं, उच्च राज्याधिकारियों और तपोनिधि वीतराग महात्माओंसे भी मेरा सम्पर्क रहा है। ज्योतिर्विज्ञानके द्वारा समय समय पर उनकी व्यक्तिगत रूपमें जो यत्किञ्चित् सेवा की गई उसकी सत्यताके प्रमाण विद्यमान हैं। अपना शुभाशुभ भविष्य जाननेकी इच्छा मनुष्य मात्रमें स्वाभाविक है। सर्वस्वत्यागी वीतराग महात्मा भी जब अपनी आध्यात्मिक पारमार्थिक उन्नति एवं भगवत्प्राप्तिके लिए ग्रहगतिको जानने वाले विद्वान् दैवज्ञसे परामर्श लेते हैं, तब फिर साधारण जनकी तो बात ही क्या ! एक विद्वान्ने ठीक ही लिखा है—

वनं समाश्रिता येऽपि निर्ममाः निष्परिग्रहाः । अपि ते परिपृच्छन्ति ज्योतिषां गतिकोविदम् ॥

सज्जनों ! यह कोई अभिमानकी बात वा आत्मश्लाघा नहीं है। अपितु जो लोग ज्योतिश्शास्त्रकी वैज्ञानिकता पर सन्देह करते हैं, उनके लिए दिग्दर्शन मात्र है कि जब मेरे जैसा अकिञ्चन अल्पबुद्धि एकाकी व्यक्ति भी अपने सीमित साधन और सामान्य अनुभवके द्वारा इस राज्याश्रयहीन भविष्यविज्ञानकी श्रेष्ठता और सत्यताको आधुनिक सर्व साधन-सम्पन्न राज्याश्रय प्राप्त एलोपेथी डाक्टरी विज्ञानसे कहीं अधिक सत्य प्रमाणित कर सकता है तो फिर जो अनेक वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध अनुभवी ज्योतिर्विज्ञानवेत्ता हैं यदि उन सबका सामूहिक रूपमें सहयोग प्राप्त किया जाये तो इसमें शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है और इस विज्ञानके द्वारा संसारका महान् उपकार हो सकता है। जो सत्ताप्राप्त महानुभाव इस विज्ञान को बिना किसी प्रकारका सहयोग दिये और इसके मूल तत्त्वोंको जाने बिना व्यर्थ ही आक्षेप करने लग जाते हैं उन सज्जनों से मैं प्रार्थना करूंगा कि आप इस महान् विज्ञान पर अनधिकार चेष्टाके रूपमें अहैतुकी कृपा न किया करें। जो बात आपकी बुद्धिमें न बैठे तो पहले उस विषयके विशेषज्ञसे उसकी ठीक जानकारी प्राप्त कीजिए, और फिर उस पर अपना कुछ मत स्थापित कीजिए अथवा चुप रहिए। महर्षि पराशरने लिखा है कि जो मनुष्य शास्त्रको बिना जाने ही ज्योतिषकी निन्दा करता है वह रौरव नरकगामी होता है —

यो नरः शास्त्रमज्ञात्वा ज्योतिषं खलु निन्दति । रौरवं नरकं भुक्त्वा चान्धत्वं चान्य जन्मनि ॥

भारत धर्मप्राण देश है, धर्म और अध्यात्म बलके आधार पर ही यह विश्व-वन्द्य रहा है और अब भी रहेगा करोड़ों भारतीयोंके कार्य-कलाप ज्योतिषके आधार पर ही होते हैं। धर्मनिरपेक्ष राज्यके स्वयंभू नेता चाहे भले ही स्वर्ग नरकको भी न माने, परंतु यह मैं उन्हें स्पष्टरूपमें बता देना चाहता हूँ कि आपकी इस प्रकारकी शास्त्र विरुद्ध बातोंसे कुछ मुट्ठी भर आपके चाटुकार चाहे भले ही प्रसन्न होते हों, पर करोड़ों भारतवासियोंके हृदय पर ठेस पहुंचती है और आपकी लोकप्रियता बढ़नेकी अपेक्षा कम ही होती है।

पञ्चाङ्गोंमें एक वाक्यता आवश्यक—

भारतमें आजकल सूर्यसिद्धान्त मकरन्द ग्रहलाघव ब्रह्मसिद्धान्त केतकी ज्योतिर्गणित आदि अनेक ग्रन्थोंसे लगभग २०० पञ्चाङ्ग प्रतिवर्ष प्रकाशित होते हैं। परन्तु इन पञ्चाङ्गोंमें नवीन करणग्रन्थ केतकी ज्योतिर्गणितादिके अतिरिक्त सभी पञ्चांगोंकी ग्रह स्थितिमें भारी अन्तर रहता है । पञ्चाङ्गमें जिस ग्रन्थसे ग्रह बनाये हैं उसी ग्रन्थके अनुसार आये हुए अयनांश मिलाने पर वे ग्रह वेध तुल्य होने चाहिएँ। अर्थात् वेधशालाओंमें वे ग्रह ठीक उसी स्थान पर दिखाई देने चाहिएँ अथवा यूरोपियन पञ्चाङ्गके साथ मिलना चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं होता। सूर्यसिद्धान्त मकरन्द और ग्रहलाघवीय पञ्चाङ्गके ग्रहोंमें कई बार ८ दश अंशों तकका अन्तर रहता है। शनि गुरुके राशि परिवर्तन और वक्र मार्गके समय कभी-कभी दो तीन मास तकका अन्तर पंचागोंमें दृष्टिगोचर होता है। जब पंचागोंकी गणितमें ही यह दशा है तो फिर फलादेशकी क्या गति ?

जन्मपत्र वर्षफल प्रश्न मुहूर्त्तादिमें जब तक स्पष्टग्रह सूक्ष्म दृक्तुल्य न होंगे तब तक फलादेश कभी यथार्थ नहीं मिल सकता। इसीलिए श्रीकेशवाचार्यजीने अपनी जातकपद्धति (केशवी) के आरम्भमें ही लिखा है:—

"यन्त्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेद्योऽथ खेटाः फुस्टाः यत्पक्षे हि घटन्त····"

ब्रह्मसिद्धान्त आदि अन्य कई प्रामाणिक ग्रन्थोंमें ग्रह साधनके लिए निम्न वाक्य उपलब्ध हैं।

संसाध्यं स्पष्टतरं बीजं नलिकादियन्त्रेभ्यः, तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ। (ब्र० सि०)
यान्ति संसाधिताः खेटाः येन दृग्गणितैक्यताम्। तेन पक्षेण ते कार्याः स्फुटास्तत्समयोद्भवाः। (दा० ष०)
यदा यश्चैव सिद्धान्तो गणितो दृक्समो भवेत्। तदा तेनैव संसाध्यं जातकं गणयेद् बुधः।(वृ० नौ० टी०)
यत्पक्षे हि घटन्ति शुद्ध खचराः वार्यास्तु तत्पक्षकाः। (प० प्र०)

इन प्रमाणोंसे स्पष्ट ही है कि जिस पक्षके ग्रह आकाशमें वेधसे प्रत्यक्ष घटित हों (दिखाई दें) उसी पक्ष का उपयोग करना चाहिए। जो सज्जन सूर्यसिद्धान्त मकरन्द ग्रहलाघवादि प्राचीन स्थूल गणितके ग्रहोंका ही सवत्र उपयोग करनेका आग्रह करते हैं, वे बड़ी भारी भूल करते हैं। सूर्यसिद्धान्त ग्रहलाघवादिका केवल मात्र सूर्य प्रायः ठीक आता है (इसमें भी कलाओंका थोड़ा अन्तर तो आता ही है) अन्य सब ग्रहोंमें काल भेदके कारण बहुत (कई अंशो तकका) अन्तर पड़ गया है। सूर्यसिद्धान्तमें ही स्पष्ट लिखा है—

शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः। युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलः॥

ग्रहलाघवकार श्रीगणेशदैवज्ञके समयमें ही सूर्यसिद्धान्तादि प्राचीन सिद्धान्तोंकी ग्रहगणितमें अन्तर आ गया था, इसी कारण उन्होंने तत्कालीन ग्रहस्थितिको वेध द्वारा जांचकर नवीन करण ग्रन्थ 'ग्रहलाघव' की रचना की। उसमें उन्होंने लिखा है—

"सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिकोनाब्जो गुरुस्त्वार्यज।"

ग्रहलाघव रचनाकालको भी आज ४३५ वर्ष हो गये, अतः अब इसके ग्रहण समय और 'ग्रहोंके अंशादिकोंमें अन्तर आने लग गया है। ऐसी स्थितिमें अब भी प्राचीन सूर्यसिद्धान्तीय ग्रहों पर ही विश्वास करना कदापि बुद्धिसंगत नहीं कहा जा सकता। हां, सूर्यसिद्धान्तकी अपेक्षा तो ग्रहलाघव और मकरन्दके ग्रह फिर भी कुछ ठीक आते हैं। किन्तु वे भी आधुनिक कालके दृक्तुल्य सूक्ष्म नहीं कहे जा सकते। स्वयं श्रीगणेशदैवज्ञ ने—

कथमपि यदिदं चेद्-भूरिकाले श्लथं स्यान्मुहुरपि परिलक्ष्येन्दुग्रहाहक्षयोगात्।
सदमलगुरुतुल्य प्राप्तबोधप्रकाशैः कथित सदुपपत्त्या शुद्धिकेन्द्रे प्रचाल्ये॥

यह लिखकर स्पष्ट किया है कि कभी कालान्तरमें जाकर मेरा यह गणित (ग्रहलाघव तिथिचिन्तामणि) भी शिथिल हो जाएगा, तब मर्मज्ञ विद्वान् चन्द्रमा व ग्रहोंकी युति तथा नक्षत्र-ग्रह-युति, ग्रहणादिकोंको बारबार देखकर (वेध करके) सुन्दर शुद्ध उपपत्तिसे इसमें चालन देवें। इसी प्रकार मकरन्दकारने भी अपने

ग्रन्थ (मकरन्द सारणी) की स्थूलता स्पष्ट ही लिखी है । यथा—

"वक्रादिकं स्थूलमिदं मयोक्तं सुखार्थमेवेति न तद्यथार्थम् ।"

"अस्तोदयौ स्पष्टतरौ प्रसाध्यौ सिद्धान्तरीत्या कुसुतादिकानाम् ।
यद्वात्र शुक्राङ्गिरसौ प्रसाध्यौ विवाहयात्रादि फलप्रसिद्ध्यै ॥"

इतनी स्पष्टवादिता होने पर भी जो अनेक सहयोगी पञ्चाङ्गकर्ता अपने अपने पंचांगोंका निर्माण सूर्यसिद्धान्त मकरन्द ग्रहलाघवादिकी स्थूल सारिणियोंसे केवल परिश्रम और समयकी बचतके दृष्टिकोणसे करते हैं—वे इस प्रत्यक्ष शास्त्रके साथ अन्याय कर रहे हैं। अब कोई भी गणितज्ञ प्राचीन स्थूल गणितको केवल 'दादा वाक्य प्रमाण' मान कर ही इस वैज्ञानिक यन्त्र युगमें सत्य सिद्ध नहीं कर सकता। आचार्य कमलाकर भट्टने जिन्होंने १५८० शाके (सन् १६५८ ई०) में काशीमें 'सिद्धान्त-तत्वविवेक' लिखा था वहाँ उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि इस युक्तिशास्त्र तथा प्रत्यक्ष शास्त्रमें महर्षि भगवान् व्यासकी बात भी नहीं मानी जा सकती, क्योंकि जहां प्रत्यक्ष है वहां केवल वाक् प्रमाण प्रमाण नहीं माना जा सकता। यथा—

'तद्धि व्यासोदितं चापि दुष्टं ज्ञेयं विजानता ।'
नान्यन्मुनीन्द्रोक्तमपीह यस्मात्प्रत्यक्ष सिद्धौ नहि वाक् प्रमाणम् ॥

एतदर्थ सभी सहयोगी पञ्चाङ्गकर्ताओंसे मैं सानुरोध प्रार्थना करूँगा कि वे अपने पञ्चाङ्गोंमें प्राचीन स्थूल गणितका परित्याग करके नवीनकरणग्रन्थ केतकी ज्योतिर्गणितादिसे दृक्तुल्य सूक्ष्मगणितका समावेश कर भारतीय पञ्चाङ्गोंमें एक वाक्यता लानेका प्रयत्न करें। स्व० लोकमान्य तिलक, केतकर, गुरुवर श्री गो० स० आपटे, छत्रे आदि विद्वानोंके सत्प्रयत्नसे दक्षिण भारत बम्बई पूना मध्यप्रदेश और सौराष्ट्रके प्रायः अधिकांश सभी प्रतिष्ठित पञ्चाङ्ग दृक् तुल्य सूक्ष्म नवीन गणितसे निर्माण होने लगे हैं। इधर उत्तर भारतमें सर्वप्रथम वेधतुल्य दैनिक सूक्ष्म ग्रह देनेका प्रयास मैंने सं० २००२ से प्रारम्भ किया था। काशीमें केवल एक स्व० महामहोपाध्याय श्री पं० बापूदेवजी शास्त्रीका पञ्चाङ्ग शुद्ध दृक् पक्षीय गणितसे निर्माण होता है। इस पञ्चाङ्गके गणितकी शुद्धता और उपयोगिताको समझते हुए उत्तरप्रदेश सरकारने इसका प्रकाशन अपने हाथमें ले कर केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारोंके सामने एक आदर्श उपस्थित किया है। इसी प्रकार भारतके प्रत्येक प्रान्त से एक शुद्धगणितका पञ्चाङ्ग प्रान्तीय सरकारकी ओरसे प्रकाशित होना नितान्त आवश्यक है।

फलादेशके लिए दैवज्ञ कैसा होना चाहिए—

ज्योतिर्विज्ञानके महान् विद्वान् श्री भास्कराचार्यने लिखा है—

ज्योतिश्शास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते, नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम् ।
ते गोलाश्रयिणोन्तरेण गणितं गोलोऽपि न ज्ञायते, तस्माद्यो गणितं न वेत्ति स कथं गोलादिकं ज्ञास्यति ॥

ज्योतिश्शास्त्रके फलको पुराण तथा गणकों (दैवज्ञों) ने आदेश कहा है। यह फलादेश शुद्ध लग्न पर निर्भर है। लग्न स्पष्ट ग्रहके आश्रित है। स्पष्ट ग्रह गोलाश्रयी है और गोल गणितके आधारपर है। इसलिये गणितके बिना किसी भी पदार्थका पता लगना कठिन है। अतएव समस्त जगत्में गणितकी सत्ता व्यापक रूपसे वर्तमान है। इस लिए दैवज्ञको सर्वप्रथम शु : गणितका ज्ञान परमावश्यक है। जो गणित नहीं जानता उसका फलादेश करना धृष्टता मात्र है। त्रिस्कन्ध ज्योतिषके महान् विद्वान् आचार्य श्रीवराहमिहिरने भी लिखा है—

"तन्त्रे सुपरिज्ञाते लग्ने छायाम्बुसंविदिते। होरार्थे च सुरुढे नादेष्टुर्भारती वन्ध्या ।"

अर्थात् यदि ग्रह गणितका पूर्णज्ञान हो, छायायन्त्र और पानीय यन्त्रसे लग्नका शुद्ध ज्ञान किया गया हो तथा होराशास्त्रका प्रौढ़ पाण्डित्य हो, तो ऐसे फलादेश करने वालेकी वाणी कभी मिथ्या हो नहीं सकती। श्री भास्कराचार्यने सिद्धान्तशिरोमणिके गणिताध्यायमें बलपूर्वक दैवज्ञके लिए लिखा है कि त्रिस्कन्ध ज्योतिष (सिद्धान्त संहिता होरा) भूगोल खगोल, पाटीगणित, बीजगणित, जातक, प्रश्न, शकुनादि विविध विद्याओंका सम्यग् ज्ञान रखने वाला, ज्योतिशशास्त्रीय गूढ

रहस्योंके विचार विमर्श अन्वेषणमें चतुर प्रगल्भमति दैवज्ञ ही फलादेश बतानेका अधिकारी है। जिसमें ये गुण नहीं है वे काठके सिंह वा भित्तिपर लिखे हुए राजाके चित्रके समान नाम मात्रके दैवज्ञ हैं—

जानन् जातक संहिताः सगणितस्कन्धैकदेशा अपि, ज्योतिश्शास्त्रविचारचार चतुरः प्रश्ने च किञ्चित्करः।
यः सिद्धान्तमनन्तयुक्ति विततं नो वेत्ति भित्तौ यथा, राजा चित्रमयोऽथवा सुघटितः काष्ठस्य कण्ठीरवः॥
अपार होरागमपारगामी पाट्यां च बीजे सुतरां प्रगल्भः।
सद् गोलविद्या कुशलः स एव भवेत् फलादेशविधौ समर्थः॥

सज्जनों! आज आपको श्रीभास्कराचार्य और वराहमिहिराचार्यके बतलाये उक्त लक्षणोंसे युक्त दैवज्ञ बहुत कम कहीं इने गिने ही मिलेंगे। आजकल तो शीघ्रबोध और एक दो छोटी मोटी पुस्तकें देखकर बगलमें पञ्चाङ्ग दबाये हुए तिथि नक्षत्रादिको बताने वाले नक्षत्रसूची लोग ही अधिक दिखाई देंगे। ऐसे अनधिकारी लोगोंने ही मनमाना ऊटपटांग फलादेशादि बताकर इस शास्त्र पर धब्बा लगाया है। ऐसे लोगों पर कुछ सामाजिक प्रतिबन्ध होन चाहिए। जिस प्रकार आयुर्वेदमें बिना रजिस्टर्ड वैद्यके कोई चिकित्सा व्यवसाय नहीं कर सकता। और यह ठीक भी है; क्योंकि "नीम हकीम खतरा-ए-जान" कहा है। इसी प्रकार 'नीम ज्योतिषी' भी 'खतरा-ए-जान माल' ही नहीं अपितु 'खतरा-ए-विज्ञान' अर्थात् ज्योतिषशशास्त्रके लिए भी घातक हो सकता है। राजकीय प्रतिबन्धोंकी अपेक्षा में ऐसे कार्योंमें सामाजिक प्रतिबन्धोंको अधिक अच्छा समझता हूँ। अतः जो ऐसे अनधिकारी लोग इस ज्योतिषकी दुकानदारीमें उतर आये हैं उनको समाजकी ओरसे कोई दूसरा कार्य दिलाया जावे। अथवा उनको इस विज्ञानकी पर्याप्त जानकारीके बाद ही इस क्षेत्रमें प्रवेश करने दिया जावे।

जहाँ त्रिस्कन्धज्योतिषके मर्मज्ञ विद्वान्को पंक्तिपावनवता कर सम्मानित किया गया है, वहाँ अनभिज्ञ प्रपञ्ची और इधर-उधरसे भूत व वर्तमान घटनाओंको पहले ही जानकर अपने शास्त्र-ज्ञानका दम्भ रचनेवाले धूर्त दैवज्ञोंकी पूरी भर्त्सना भी की गई है। परमादरणीय विद्वद्वरेण्य स्व० महामहोपाध्याय श्री पं० दुर्गाप्रसादजी द्विवेदीने 'जैमिनी-पद्यामृत' में ऐसे प्रपञ्ची ज्योतिषियोंको नमस्कार करना भी निषेध किया है। वे लिखते हैं—

आघ्राय गन्धान् परवृत्तजातान् सन्धाय लोकान् बहुधाप्रपञ्चैः।
प्रवर्तते यः फलिताभिमानी स साधुवाचापि न पूजनीयः॥

दैवज्ञके लिए आत्माभिमानी और तपोनिष्ठ होना आवश्यक—

दैवज्ञ अपने आपको कभी छोटा या हेय न समझे। जो त्रिस्कन्ध ज्योतिषका जानकार है, जिसने सौरजगत्के ग्रह-नक्षत्रादि पिण्डोंकी गतिविधिका हस्तामलकवत् परिज्ञान कर अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायककी महत्ताको जाना है, वह ब्रह्मविद् (दैवविद्) तो स्वयं ब्रह्मस्वरूप है "ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति" अतः दैवज्ञको पूर्ण आत्मविश्वासी और ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिए। यह स्थिति प्राप्त करनेके लिए गुरुपरम्परा-प्राप्त साधना भी ज्योतिषीके लिए परम आवश्यक है। आत्माभिमानी से मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि ज्योतिषी महा अभिमानी बन जावे और किसीसे बात ही न करे, या अपनेसे सबको हेय समझे। सच्चा ब्रह्मविद् या दैवविद् न तो किसीको हेय समझेगा और नाही वह किसीका अकल्याण ही करेगा। मेरा तात्पर्य यह है कि जो ज्योतिषी अपने यजमानों या धनिक सेठोंके यहां बिना बुलाये प्रतिदिन जाकर पंचांग सुनाते हैं, उनकी चाटुकारिता करते हैं, नानाप्रकारसे उन्हें प्रसन्न करनेका प्रयत्न करते हैं और वे धनमदान्ध लोग इनको अपना क्रीतदास समझ बैठते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। कई धन-मदान्ध लोग ज्योतिषीको अपने घर बुलाकर परीक्षा लेना चाहते हैं, कई चलते-चलते रास्तेमें या समय असमय जब चाहें प्रश्न कर बैठते हैं, और फल न मिलने पर बादमें मजाक उड़ाते हैं। यह दोनों (पूछने और बताने वाले) के लिए हानिकर है। जो सज्जन श्रद्धापूर्वक बुलाकर शास्त्रीय विधिके अनुसार फल पुष्प दक्षिणादिसे दैवज्ञका सम्मान करे वहां अवश्य जाकर जिज्ञासू भक्तको अपने ज्ञानसे लाभ पहुंचाना चाहिए। बहुतसे लोग कह देते हैं—"अजी! ज्योतिषीजीका और हमारा तो घर जैसा मामला है, हम तो जब चाहें इनको पकड़ कर काम करवा लें।" किन्तु यह भी गलित मार्ग है।

मित्रता या घर जैसा सम्बन्ध और बात है और ज्योतिर्विज्ञानके द्वारा शास्त्रीय निर्णय दूसरी बात । ज्योतिषीकी स्थिति किसी भी उच्च न्यायालयके न्यायाधीश (जज) से कम नहीं। एक न्यायाधीशके साथ आपकी घनिष्ठ मित्रता है तो वह घर तक ही सीमित रह सकती है। जब आप उसके न्यायालयसें निर्णय सुननेके लिए जावेंगे तो राजकीय नियमानुसार आपको फीस भी पूरी देनी पड़ेगी और अन्य वादी-प्रतिवादियोंके साथ ही आपको खड़ा रहना पड़ेगा। उस समय न्यायाधीश अपने घरेलू सम्बन्धोंको बिल्कुल भूल जायगा और न्यायानुकूल आपके पक्षमें भला या बुरा जो भी निर्णय होगा स्पष्ट सुना देगा। इसी प्रकार फलादेश निर्णयके समय ज्योतिषीके घरेलू सम्बन्धोंको भुला देना चाहिए । शास्त्रकी आज्ञा है कि दैवज्ञ गुरु और वैद्यके पास कभी रिक्त हस्त न जावे। सन्धिकालमें रात्रिमें, और दुर्दिनमें (जिस समय बादल हों) कभी प्रश्न न करें। इन शास्त्रीय विधियोंका उल्लंघन करनेके कारण ही कार्यकी सिद्धि नहीं होती, फिर सुख और शान्ति कहां से हो। भगवान् श्रीकृष्णने गीतामें लिखा है—

'यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः । न स सिद्धि मवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ॥'

ज्योतिषके फलादेशमें ही नहीं अपितु अन्यान्य शास्त्रोंमें भी अपूर्णता सम्भव—

फलादेशमें अपूर्णता रहने या न मिलनेके कई कारण हैं। उनमेंसे प्रधान कारण है इष्टकाल (जन्म समय) का ठीक न होना और शुद्ध गणितका अभाव। यदि किसीने जन्म समय ठीक बता दिया और कुण्डली बनाने वाले स्थानीय ज्योतिषीजीको दिग्देशकाल तथा गणितका पूरा ज्ञान न हो तो वे मन माने ढंग पर इष्टकाल लगाकर कहींके भी स्थूल (अशुद्ध) गणित वाले पंचांगसे लग्न और ग्रह स्पष्ट लगा देते हैं। पुरानी बनी हुई प्रायः ७५ प्रतिशत जन्मकुण्डलियों में यही दोष पाया जाता है, फिर फलादेश कैसे ठीक मिले। ज्योतिषीके आत्मबल और अनुभवकी कमीसे भी फलादेशमें त्रुटि रह जाती है। एक-एक भावके सूक्ष्म निर्णयार्थ पर्याप्त श्रम और समय अपेक्षित है, परन्तु थोड़े समय और श्रममें ही सभी बातोंका निर्णय कर देनेसे त्रुटि रहना स्वाभाविक है। यदि इन बातोंकी ओर पूरा लक्ष्य दिया जावे तो ज्योतिश्शास्त्रके फलादेशमें जो कुछ अन्तर रहता है वह भी दूर हो सकता है। इस फलितविज्ञानमें ही क्यों साधारण त्रुटि वा अपूर्णता प्रत्येक विज्ञानमें रहती है; अनेक बारके अध्ययन अनुशीलन अन्वेषणसे वे सुधर सकती हैं। व्यवस्थित ज्ञान ही को तो शास्त्र कहते हैं। वैद्यक और डाक्टरी भी एक शास्त्र है, कानूनकी व्यवस्था भी एक शास्त्र है । परन्तु हम देखते हैं कि कई रोगोंके निदान और चिकित्सामें त्रुटियां हो जाया करती हैं । एक डाक्टर यदि सौ रोगियोंकी चिकित्सा करता है तो सबको शतप्रतिशत समान रूपसे लाभ नहीं होता। इसी प्रकार एक उच्च कोटिके वकीलके पास यदि १०० अभियोग हों तो वह भी सबमें शतप्रतिशत सफल नहीं हो सकता। यह सब जानते और देखते हुए भी डाक्टर और वकीलकी योग्यता तथा उस शास्त्रमें सन्देह नहीं किया जाता; परन्तु ज्योतिश्शास्त्र और ज्योतिषीको बुरी तरहसे कोसा जाता है, यह कहाँका न्याय और बुद्धिमत्ता है ? जिस प्रकार आयुर्वेद वा डाक्टरी विज्ञानमें कई पैटेण्ट रामबाण शतप्रतिशत लाभ करने वाली औषधियाँ हैं, ऐसे ही हमारे ज्योतिर्विज्ञानमें भी 'अधियोग' 'इक्कबाल' इत्थशालादि अनेक ऐसे अनुभूत रामबाण सिद्ध योग हैं जो कभी व्यर्थ नहीं जाते।

भारत सरकार से निवेदन—

ज्योतिर्विज्ञान और अङ्क शास्त्रका उद्गम स्थान भारत है। यहींसे ज्ञान विज्ञानको लेकर पश्चिमी राष्ट्रोंने आशातीत भौतिक उन्नति की है। ज्योतिर्विज्ञानमें भी वे लोग भारतसे आगे बढ़ रहे हैं। वहां अनेक वेधशालाएँ स्थापित हैं और इंग्लैण्ड फ्रांस अमरीका जर्मनी आदि स्वतन्त्र राष्ट्रोंकी सरकारें लाखों रुपया व्यय करके 'Nautical Almanac' 'Des Temps' जैसे विशालकाय पंचाङ्ग प्रतिवर्ष प्रकाशित करवाती हैं। परन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि स्वतन्त्रभारत की केन्द्रीय सरकारने अभी तक न तो दिल्लीकी वेधशालाके लिए कुछ प्रयत्न किया है और न कोई पंचांग ही प्रकाशित करवाया। यह स्वतन्त्र भारतकी राजधानीके लिए लज्जा जनक बात है। कुछ वर्ष पूर्व जयपुरकी सरकारने गुरुवर श्री०

पं० केदारनाथजी राजज्योतिषीको दिल्ली भेजकर वेधशालाका जीर्णोद्धार प्रारम्भ करवाया था, परन्तु राजस्थानी मन्त्रिमंडल बदलनेके साथ ही इस महान् कार्यकी आर्थिक सहायता राजस्थान सरकारने बन्द कर दी और वह कार्य अधूरा ही छूट गया। भारत सरकारसे मैं इस सम्मेलनकी ओरसे निवेदन करूंगा कि वह इस वेधशालाको अपने हाथमें ले और राजधानीके अनुरूप इसको प्राचीन एवं नवीनतम सभी यन्त्रसामग्रीसे परिपूर्ण करके यहांसे 'नाटीकल-एल्मानक' जैसा विशाल पंचांग प्रकाशित करवाये। दूसरा निवेदन यह है कि भारत सरकार अपने 'इण्डियन मेट्रॉलाजिकल डिपार्टमेण्ट' (ऋतुपरिवर्तनशास्त्र विभाग) के साथ ही एक 'भारतीय ज्योतिष-विभाग' स्थापित करके भारतीय ज्योतिर्विज्ञान वेत्ताओंको भी कुछ अवसर दे तो जिन विदेशी यन्त्रोंसे जहां केवल ३ दिन पूर्वका ही वर्षा वायु ज्ञान प्राप्त होता है, वहां हमारा यह प्राचीन उपेक्षित विज्ञान ६ मास पूर्व तककी सही रिपोर्ट देकर अपनी सत्यता प्रमाणित कर सकता है। वायुशास्त्र वृष्टिविज्ञान और भूगर्भ शास्त्रमें हमारा ज्योतिशशास्त्र किसीसे पीछे नहीं। परन्तु राज्यकी उपेक्षा, जन सहयोगकी कमी और साधनाभावके कारण ही इस विज्ञानके लाभसे हम वंचित हैं।

त्रिस्कन्ध ज्यौतिष-शिक्षणके लिए ज्योतिर्विज्ञान महाविद्यालय होना चाहिए—

ज्योतिषका गणित (अङ्कगणित रेखागणित बीजगणित) विभाग तो सबके लिए समान रूपसे उपयोगी है ही। माध्यमिक पाठशालाओं और हाई स्कूलोंमें संस्कृत लेने वाले छात्रोंको अङ्कगणित—अर्थमैटिक एलजबरा ज्योमेट्री के लिए श्रीभास्कराचार्यकी लीलावती और रेखागणित बीजगणितसे अध्ययन प्रारम्भ कराया जावे। ज्योतिषका प्रारम्भिक ज्ञान प्रत्येक बालकको अनिवार्य रूपसे होना चाहिए। जयपुर और काशीके अतिरिक्त अन्य कहीं भी त्रिस्कन्ध ज्योतिषकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिए महाविद्यालय नहीं है। पंजाब विश्वविद्यालयने भी विशारद और शास्त्रीमें वैकल्पिक पत्र ज्योतिष रखा है अतः अर्थकरी विद्या होनेके कारण छात्र प्रसन्नतापूर्वक इस विषयको लेना चाहते हैं, परन्तु उन्हें पढ़ाने वाले नहीं मिलते। पंजाबकी पाठशालाओं और राजधानी दिल्लीमें भी कहीं ज्योतिषकी कोई पाठशाला नहीं। पंजाब विश्वविद्यालयने 'सूर्यसिद्धांत' और 'सर्वानन्दकरण' जैसे गणितके प्रौढ़ ग्रन्थ तो परीक्षामें नियत कर दिये, पर इनके पढ़ानेका कोई प्रबन्ध नहीं। बेचारे परीक्षार्थी छात्र बुरी तरहसे तरसते हैं। गत तीन वर्ष तक मैं पंजाब विश्वविद्यालयकी विशारद और शास्त्री परीक्षाका (ज्योतिषका) मुख्य परीक्षक रहा, उस समय मुझे परीक्षार्थियोंकी इस असह्य असुविधाका पूर्ण अनुभव हुआ। सरकार और विश्वविद्यालयोंका कर्तव्य है कि वे इस परमोपयोगी ज्योतिर्विज्ञानके शिक्षणका समुचित प्रबन्ध करें। प्रत्येक मण्डल (जिले) में एक ज्योतिषकी पाठशाला और राजधानीमें ज्योतिर्विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना होनी चाहिए।

ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंका संगठन आवश्यक—

विद्वज्जनों! आपने अपना अमूल्य समय देकर मेरे इन कुछ हृदयोद्गारोंको सावधानतया सुना, इसके लिए मैं दूर दूरसे पधारे हुए विद्वानों और दिल्लीकी जनताका आभारी हूं। अब अधिक समय न लेते हुए उपसंहार के रूपमें संगठन सम्बन्धी एक दो बातें कह कर इस भाषणको समाप्त करूँगा।

बन्धुओं! यह तो आप जानते ही हैं कि संगठनमें ही शक्ति है। कोई भी समाज, दल, जाति, सभा, और कुटुम्ब परिवार बिना संगठनके जीवित नहीं रह सकते। जो जितना अधिक संगठित होगा वह उतना ही बलवान् और समुन्नत होगा। सब लोगोंका संगठन हो चुका है परन्तु अभी तक ज्योतिषियोंका अखिल भारतीय संगठन नहीं हुआ, यह दुःखकी बात है। मैं चाहता हूँ कि समस्त भारतके ज्योतिषियोंका संगठन हो। यह कार्य राजधानी दिल्लीसे ही प्रारम्भ हो तो बहुत अच्छा है। आज गुरुपूर्णिमाका दिन भी बड़ा सुन्दर है और दैवयोगसे मंगलवार भी, अतः 'स्थाप्यं समाप्यं शनि भौमवारे' के अनुसार आज के शुभ मुहूर्तमें ही आपको यहाँ 'उत्तरभारतीय ज्योतिष-परिषद्' अथवा 'दिल्ली-ज्योतिष परिषद्' नामसे एक संस्थाकी स्थापना करके कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण होना चाहिए। बम्बईमें 'बाम्बे एस्ट्रालाजीकल सोसायटी' नामक संस्था बड़ा अच्छा कार्य कर रही है। बम्बई प्रान्तके सभी प्रमुख ज्योतिषी उस संस्थाके सदस्य हैं। चौपाटी

पर भारतीय विद्याभवनमें ही इस संस्थाका कार्यालय, पुस्तकालय और विद्यालय भी है। प्रत्येक रविवारको स्थानीय सभी ज्योतिषी एकत्र होकर परस्पर विचार विमर्श करते और बाहरसे आये हुए विद्वान् दैवज्ञोंका भाषण करवाते हैं। नगरके बड़े बड़े धनी मानी सज्जन उस संस्थाके संरक्षक सहायक हैं। विगत वर्ष आवश्यक कार्यवश मैं पूना और बम्बई गया था तब सोसायटीके मन्त्री श्रीअमृतलाल शाह और 'जन्मभूमिपंचांग'के प्रधान सम्पादक श्री देवशी वीरजी खोना तथा स्थानीय अन्य प्रमुख ज्योतिर्विदोंसे विचार विमर्श हुआ। २१ मार्च १६५४ को विषुवद्दिन होनेसे 'बाम्बे एस्ट्रालाजीकल सोसायटी' की ओरसे सभाका विशेष आयोजन था। सभामें मेरे विचारोंको भी स्थानीय मान्यमान्य सज्जनोंने बड़े ध्यानपूर्वक सुना। उन लोगोंकी सहृदयता गुणग्राहकता और इस ज्योतिर्विज्ञानके प्रति कर्तव्यनिष्ठाको देखकर मुझे महान् हर्ष हुआ। मैंने उसी समय विचार किया कि यदि दिल्लीमें भी इसी प्रकारका सङ्गठन होकर एक संस्था बन जावे तो कितना अच्छा हो।

दिल्लीमें धनी-मानी लोगोंकी कमी नहीं, विद्वानों वा ज्योतिषियोंकी कमी नहीं, ज्योतिर्विज्ञानसे स्नेह सहानुभूति रखने वालोंकी कमी नहीं, कमी है तो केवल संगठन और सहयोगकी है। यहां राजधानीमें वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० यमुनाधरजी ज्योतिषाचार्य और श्री पं० रामेश्वरप्रसादजी ज्योतिषाचार्य प्रभावशाली सम्पन्न महानुभाव हैं। इनके अतिरिक्त श्री प्रो० बी० सी० गंगोली, श्रीरामस्वरूप शर्मा, श्री गिरिधारीलालजी गोस्वामी, श्री शिवशंकरजी राजज्योतिषी आदि और भी अनेक विद्वान् ज्योतिषी हैं। राज्यकर्मचारियों वकील बेरिष्टरों और व्यापारी वर्गमें भी कई ऐसे सज्जन हैं जिनको ज्योतिर्विज्ञानमें विशेष अभिरुचि है और वे इस शास्त्रका व्यवसायके रूपमें नहीं अपितु 'स्वान्तः सुखाय' अपना अनुशीलन करते रहते हैं। ऐसे महानुभावोंमें श्री सेठ सत्यनारायणजी गोयनका, श्री ला० अमरनाथजी, श्री पं० गोपेशकुमारजी ओझा एम० ए० एल० एल० बी०, श्री पं० आनन्दस्वरूप जी शर्मा, श्री कृष्णदयालुजी भार्गव के नाम विशेषरूपसे उल्लेखनीय हैं। इन सब व्यक्तिगत शक्तियोंका यदि एक स्थानमें संगठन हो जाये तो धीरे-धीरे अखिल भारतीय संगठन होनेमें भी देर न लगे।

इस परिषद्के द्वारा प्रारम्भमें निम्न कार्य होने चाहिएँ—सम्पूर्ण भारतके ज्योतिर्विदोंका एक परिचयग्रन्थ प्रकाशित किया जावे। ज्योतिषके अप्राप्य एवं दुष्प्राप्य ग्रन्थोंको प्राप्त करके उन्हें प्रकाशित किया जावे। अंग्रेजी मराठी बंगला गुजराती आदि भाषाओंमें जो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छपे हैं, उनका हिन्दीमें अनुवाद प्रकाशित किया जावे। नवीन अन्वेषणात्मक ग्रन्थों पर पुरस्कार दिया जावे। और राजधानीमें ज्योतिष शिक्षणके लिए एक महाविद्यालय खोला जावे। ऐसे ही अनेक कार्य समय और सुविधाके अनुसार किये जा सकते हैं।

ज्योतिर्विज्ञानानुरागी धनी मानी सज्जन यदि समयकी गतिको देखकर शीघ्र ही इस सत्सङ्कल्पमें अपना द्रव्य लगा देंगे तो उसका सदुपयोग होगा और साथ ही वे यश एवं पुण्यके भागी भी बन सकेंगे। धनी लोगोंको द्रव्यसे और विद्वानोंको अपनी विद्या बुद्धिसे हार्दिक सहयोग देना चाहिए। भारतीय संस्कृतिको जीवित रखने वाला यही एक ज्योतिर्विज्ञान है। इसके स्वस्थ रहने पर ही भारतीय संस्कृति जीवित रहकर संसारको प्रकाश दे सकती है। राष्ट्रकी संस्कृतिको यदि अधिक उन्नत रूपमें चमकती देखना चाहते हैं तो वेदपुरुषके नेत्र रूप इस ज्योतिर्विज्ञानको स्वस्थ एवं सुन्दर रखना ही होगा।

मेरी ये बातें आज चाहे किसीको अच्छी लगे वा न लगे, इसकी मुझे चिन्ता नहीं। समय आने पर मेरी इन बातोंके महत्त्वको समझने वाले मिल ही जायेंगे। अन्तमें निवेदनके रूपमें महाकवि भवभूतिकी यह सूक्ति भी मैं दैवज्ञप्रवरों और जनता जनार्दनको जतला देना उचित समझता हूँ—

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां जानन्तु ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी॥

—०—

आत्मविलास क्या है ?

[श्री आत्मविलासकी रजतजयन्ती पर श्री पं० गोविन्दजी मिश्रके विचार]

अन्य अनेकन ग्रन्थ पढ़ौ तिनसों नहिं एकहु ज्ञानकी आस है,
वारिद कोटिन बून्द परौ बिन मेह न स्वातिके चातक प्यास है।
पन्थ असंख्यन है जगमांहि फंसे तिनमें रहै दासको दास है,
आतम-ज्ञान प्रकाशन हेतु अहै जग एकहि 'आत्मविलास' है ॥१॥
अन्य अहै न कछू जगमें जो कछु दीखे सो आत्मविलास है,
नित्य नवीन औ है रमणीय सच्चिदानन्दको कन्द जो खास है।
आपुहि आप प्रवीन नवीन विलास सों नित्य करै उल्लास है,
मङ्गल हू को जो मङ्गल देत है अनुभूति हि जासु रहस्य विकास है ॥२॥
अहै सब उपनिषदनको सार।
शास्त्र पुराण सकल निगमागम सबहि तन्त्रको तार।
कर स्वाध्याय अहर्निश याकौ पावै ब्रह्म-विचार,
जग प्रपंच सब जान परैगो मिटि है बुद्धि विकार।
'अमृतवाग्भव' अमृत दीन्हौं पीऔ पीवनहार,
भवसागरकी चपल तरङ्गन यही लगावै पार ॥३॥

[पृष्ठ ३२ का शेष]

सार होता है, और मधुर भाषण करना खूब जानती हैं। कपट और छिपावकी भावना इनमें रहती है। सेवाभाव इन में कूट-कूट कर पाया जाता है। ये घरके प्रत्येक व्यक्तिकी सेवा करनेमें आनन्द पाती हैं। ये चतुर और चालाक भी प्रथम श्रेणीकी होती हैं। बातून भी इतनी अधिक होती हैं कि अपने सामने अन्यको बातें करने देना अपनी शानके विरुद्ध समझती हैं। इनकी बुद्धि प्रखर होती है और समय पड़ने पर बुद्धिमानीकी सलाह देती हैं।

कला और जानवरोंसे इन्हें अधिक ममत्व होता है। वस्तुओंके संग्रह करनेमें ये बड़ी प्रवीण होती हैं। लेखिका और अध्यापिका इस मासकी जन्मी नारियां बन सकती हैं। इनका कण्ठ मधुर होता है पर गाना इन्हें नहीं आता। नृत्य कलासे इन्हें घृणा होती है, भाषण और उपदेश देने में ये कुशल होती हैं, बातकी बातमें लेक्चर देने लगती हैं, इनका भाग्य अच्छा होता है, लौकिक दृष्टिसे इन्हें सारे सुख सम्मान मिल जाते हैं। उत्तरार्द्ध में इन्हें वैधव्यका दुःख भी उठाना पड़ता है। जिन नारियोंका जन्म मंगलवारको होता है वे नारियां पुरुष जैसे स्वभावकी होती हैं तथा ठोर कार्य करनेमें किसीसे पीछे नहीं रहतीं। शारीरिक श्रम भी अच्छा कर सकती हैं, पतिसे प्रेम कम करती हैं।

शुक्रवार और शनिवारको दोपहरके बाद जन्म लेने वाली देवियां अत्यन्त संवेदनशील होती हैं, करुणा, दया इनमें अत्यधिक होती हैं। इनका दाम्पत्य-जीवन भी सुखमय व्यतीत होता है। गुरुवार और बुधवारको मध्यान्हके पहले जन्म लेने वाली नारियां बहु संतानवाली होती हैं, इनका जीवन दरिद्री होता है। अन्न-वस्त्रकी चिंता इन्हें सदा बनी रहती है। इस मासके कृष्णपक्षमें ३, ५, ७ को रोहिणी या कृत्तिका नक्षत्रमें जिनका जन्म होता है वे नारियां प्रायः संपन्न घरानोंमें जाती हैं। इनका भाग्य श्रेष्ठ होता है, इस मासवाली नारियोंको १२, १४, १५, १७, १८, २०, २१, २२, २५, २७, ३२, ४७, ४६, ५०, ५१ ५४, ५५ और ६१ वें वर्ष कष्टकारक होते हैं, १७ वें वर्षमें प्रदर या अन्य रोग होते हैं। इस मासकी जन्मी देवियां अपनी संचयशीलताके कारण अपनी निजी सम्पत्ति रखती हैं। २५ वर्षकी आयुसे इनके पास अर्थ संचित होने लगता है। पिताके घरसे इन्हें धन मिलता है । मां और पिताका स्नेह इन्हें अधिक मिलता है। १३ वर्षकी आयुमें इन्हें दुर्घटनाका सामना करना पड़ता है तथा इस दुर्घटनासे बचने के लिए सतर्क रहनेकी आवश्यकता है।

कहानी—

आप मुझे भूल जाओगे

[श्री पं० सम्पूर्णदत्तजी मिश्र शास्त्री एम. ए, कविपुण्डरीक]

कुमारकी विद्वत्ताका ग्राहक जब कोई घर बैठे न आया तो उन्होंने प्रदर्शन करनेकी सोची और समर्थन किया अपने संसारकी इस सचाईसे कि जब तक व्यापारी अपने पदार्थोंको खोल कर न दिखायेगा तब तक उनका ग्राहक कोई कैसे बनेगा ? एक बात और भी थी, जो परिचित थे वे ग्राहक नहीं थे और जो ग्राहक थे वे परिचित नहीं थे, इसलिए परिचय बढ़ाना और भी आवश्यक हो गया। यह काम रुचिके प्रतिकूल होते हुए भी उन्होंने कुछ सोच समझ कर स्वीकार कर लिया और एक दिन वे घरसे निकल पड़े।

रेलगाड़ी चलते ही एक बार फिर यह बात उनके मन में उमड़ आई कि भला मैं जा कहां रहा हूँ, पर फिर उनकी उदासीन दृष्टि खिड़कीके बाहर जा पड़ी। उनके डिब्बेमें लोग अनेक विषयों पर अपनी वाणीको व्यायाम करा रहे थे। इधर कोई चाय पीता हुआ नेहरू और पटेलकी राजनीतिका रहस्य खोल रहा था तो उधर कोई रावण की मां का नाम पूछ रहा था। कुमारने दृष्टि घुमाई और भांप गये कि पूछने वाला स्वयं रावणकी माँ का कुछ भी नाम जानता है परन्तु अपनेको पण्डितोंका शिरोधार्य सिद्ध करनेकी तात्कालिक आकांक्षासे फूलकर वह लोगोंको चुनौती दे रहा है। उधर दो धोबी लोगोंको सुना सुना कर कह रहे थे कि हमने दिल्ली देखी है। कुमारने उनके भी दर्शन करके अपनेको पवित्र किया, क्योंकि वे दिल्लीकी तीर्थ-यात्रा करके अपने जीवनको सफल जो बना चुके थे।

उतरनेका स्टेशन पास आया और कुमारकी आंखें फिर किसी गहराई में उतरने लगीं। वे यहीं तकका टिकिट ले सके थे।

वे उतर कर जा रहे थे कि एक प्रथम श्रेणीके डिब्बे में से किसी युवतिने पुकारा—'ओ कुली !'

उन्होंने मुड़कर देखा तो युवती ठिठक कर बोली—

O, sorry, please.

कुमार ने कहा—'But, madam, I would be pleased to be your coolie, for I am in need'

'What is your need, sir !'

'Whatsoever you pay me for carrying the load.'

युवती उनको कुछ देना चाहती थी पर यह भी ताड़ गई कि इनको कुली बनाये बिना कुछ देना कठिन है। वह बोली—

Then, you may·······sir, I do not know what I should say.

बस, कुमारने उसका बोझ संभाल लिया। तांगेमें बैठते बैठते उसने कहा—'मैं चाहती हूं कि आप भी मेरे साथ चलें। मैं आपसे कुछ बातें करना चाहती हूँ।'

'हाँ, कर लीजिए, क्या बात है ?'

'चलिये, आपको जहाँ उतरना हो वहां उतर जाना। आइये, शरमाइये नहीं। आप देखते हैं मेरे साथ कोई नहीं है।'

'तो आप यहाँ करती क्या हैं ?'

'जी, मैं यहाँ पढ़ती हूं।'

'किस कक्षामें ?'

'बी० ए० में। वैसे आपको यहाँ जाना कहाँ है ?'

'यही मैं सोच रहा हूँ। देखिए, जहाँ भी भगवान् ले जाये।'

'तब तो आपका भगवान् आपको मेरे साथ ले जायगा, बैठिए।'

'अच्छा, चलो।'

तांगा चल दिया। दोनों चुपचाप बैठे रहे। फिर लड़की हँसीके बीच बोली—'देखिये, माफ कीजिए, मैं

हँस रही हूं पर आप भी बड़े अजीब आदमी हैं। You travel without destination !'

'No, no, my destination being so clear, simply I do not know the way.'

'Sir, I shall tell you everything. The way is called Drummond Road and you are on your way to a decent hotel. That is your destination.'

'ओ, यह आप क्या कर रही हैं, मैं होटल न जाऊंगा।'

'क्यों, क्या आपत्ति है ? डरते हैं ?'

'नहीं, डरता नहीं।'

'तो फिर क्या ?'

'मुझे अभ्यास नहीं।'

'अभ्यास तो करनेसे होता है, मैं सब करा दूंगी।' और वह मुसकानको आंखोंमें पी गई।

'अच्छा, आप रहती कहाँ हैं ?'

'होस्टल में।'

फिर दोनों चुपचाप रहे। होस्टल आया और लड़की ने १००) रु० कुमारको दिये। हाथ जोड़कर बोली—'अच्छा, नमस्ते, फिर मिलूंगी। इनसे आप अपने ठहरनेका प्रबन्ध कीजिए और मुझे इसकी सूचना दीजिए।'

(२)

कुमारने जमना किनारे अपना ठहरनेका प्रबन्ध कर लिया था। दशहरेकी छुट्टियाँ बीत गई थीं और स्कूल कालिज खुल जानेके कारण नगरमें चहल पहल बढ़ गई थी। सांझका समय था और कुमार अपने कमरेमें बैठे सोच रहे थे कि यदि वह लड़की न मिलती तो यहां ठहरने की भी कौन पूछता। यह उसीकी कृपा है कि मैं यहां इतने दिनसे सुखपूर्वक रह रहा हूँ, कपड़े भी बनवा लिये हैं। उफ्, मानवका शिष्टाचार और नम्रता सब क्रूरता और नीचताका ही मुखपृष्ठ है। अशक्तोंको सदा यही पढ़नेको मिलता है। लोगोंका आकर्षक अनुभाव अवधीरणकी मलिनतामें ऐसे परिणत हो जाता है जैसे स्नेहमें घुले सिन्दूरका रंग आग पर चढ़ते ही देखते देखते बदल जाता है, काला पड़ जाता है। पर वही घावोंके भरनेके काम आता है। फिर भी सिन्दूर दोनो रंगोंमें पाया जाता है यहींसे मनुष्यकी शक्तिका आरम्भ होता है। जिसने जितनी वस्तुओंके जितने रूप देखे हैं उसने सचमुच संसार में उतनी अपने जीवनकी क्षमता बढ़ाई ही है। यही विज्ञान है, यही अनुभव है। इसके बिना मनुष्य ठोकर खाता है, टकराता है। और तो और किसीकी बात भी नहीं समझ सकता। इसीलिए काव्यमें व्यंजनाको उत्तम स्थान प्राप्त है, पर इससे लाभ उठानेके लिये विकासकी एक विशेष कोटिकी अपेक्षा है और विकास होता है अनुभवसे। इस अनुभवके प्रवर्तकने संसारमें आज तक क्या क्या नहीं देखा। इस सोच विचारमें वे कुछ गुनगुनाने लगे। सोचा चलकर जमना किनारे थोड़ा घूम आऊँ। इसी भूमिकामें बैठे थे कि सहसा जीने पर किसीके चढ़नेका शब्द हुआ, परन्तु कुमारने कोई उत्सुकता न दिखाई और वे वैसे ही बैठे रहे जैसे बैठे थे।

'नमस्ते' और वही लड़की सामने हाथ जोड़े खड़ी थी।

'आइये' कुमारने ओढ़नेके वस्त्रसे जांघोंको ढकते हुए कहा और वह विस्तरके एक किनारे आ बैठी।

'कहिए, क्या सोच रहे थे ? आपको अब किसी बात की कमी तो नहीं ?'

'नहीं, आपकी कृपासे सब ठीक है।,

'ओह, आप तो ऐसी पण्डिताई भाषामें बोलते हैं, हम लोगोंको तो यह सुनने की आदत नहीं।'

'क्यों, पण्डिताई भाषा बुरी लगती है ?'

,नहीं, बुरी नहीं, अच्छी लगती है पर हमको सुनने को मिलती कहां है ?'

कुछ देर सन्नाटा रहा। फिर लड़की ही बोली—'अच्छा, अब तो बताइये क्या सोच रहे थे।'

'क्या करोगी जानकर। यही घूमने जानेकी सोच रहा था।'

'बस, इतनी सी बातके लिये इतना बड़ा मिज़ाज़।,

नहीं, और भी कुछ था।'

'और आपकी सोच रहा था।'

'ओह, भला मेरी क्या सोच रहे थे ? अच्छा, यही कि कितनी ढीठ लड़की है। एक भले आदमीको कुली बना डाला। आपके स्थानकी सूचना पाकर भी शर्मके मारे

इतने दिन घुला कर आई हूं और फिर भी वही बात सोच रहे हैं। सचमुच, संस्कृत वालोंकी स्मरण शक्ति बहुत तेज होती है। अच्छा तो महाराज! आपके किसी शास्त्र या पुराणके अनुसार अपने इस अपराधका प्रायश्चित्त करनेको मैं तैयार हूँ। कहीं चान्द्रायण व्रत तो बता मत देना। क्योंकि मैं खाने पीनेकी बहुत शौकीन हूं।

'नहीं, मैं सोच रहा था कि आप कितनी अच्छी हैं।'

'हाय, राम! कितने बड़े शब्द सुननेको मिले हैं। मेरे तो कानोंमें भी नहीं समाते।'

'आप ठीक बैठ जाइये।'

'बिलकुल ठीक बैठी हूँ।'

'उस दिन आप न मिलीं होतीं तो मैं कहां जाता। व्यापारी अपने ग्राहककी सुनता है, वकील अपने मुवक्किल की और मास्टर अपने घर पर आने वाले लड़के की, पर मुझ भिखमंगेकी कौन सुनता। क्या धनी और क्या निर्धन सबकी यही दशा है।

लड़कीने एक फुरफुरी सी ली और चुपचाप सुनती रही।

कुमार कहते गए—'यदि कोई सुनता भी तो सीख देता, टाल खोल लो। अपने ठोठ बच्चोंको ऊंचे पदकी लालसासे पढ़ने भेजने वाले मुझसे कहते कि लकड़ीकी टाल खोल लो। कुछ लोग मूढ़े पर बैठकर अंगड़ाई लेते हुए कहते कि माना कि आप शंकराचार्यके अवतार हैं, पर संसार असुन्दर है। और यदि मैं बीचमें ही बात काटकर चलता न बनता तो वे अपने उस दिनके मनोरंजनके समयका सदुपयोग मुझको भाषण देनेमें ही कर लेते।'

फिर वे रुककर बोले—'अच्छा, छोड़िये इन बातोंको। आप कहिए किधरसे आ रही हैं?'

'कालिजसे होस्टल पहुँची, किताबें रखीं, मन नहीं लगा आपके पास चली आई।' लड़कीने मुँहसे रूमाल लगाकर कहा।

'चलो, अच्छा किया। कुमार ने भी मुस्कराकर कहा। 'मैं भी आपके दर्शनको आतुर था।'

'आह! ऐसी मैं बड़ी देवता जो हूँ।'

'हम पर आपके अनुग्रहमें कमी क्या है? अच्छा, यह तो बताओ कि आपने कौन विषय ले रखे हैं।'

'यही इंगलिश, हिस्ट्री, पोलिटिक्स। मैं तो संस्कृत लेना चाहती थी, पर कुछ लो ही नहीं।'

'क्यों नहीं ली?'

'अब आप अलगसे पढ़ा दीजिए। मैं बहुत चाहती हूँ संस्कृत पढ़ना। संस्कृत पढ़े लिखे लोग अच्छे होते हैं। आप ही कितने अच्छे हैं।

अच्छा, तत्काल ही भार उतार दिया। मेरा आपने क्या अच्छापन देखा?

लड़की कुछ कहना चाहती थी परन्तु कुमारने अवकाश न देते हुए कहा—'मैं समझता हूँ आपका घर तो·········

'जी हां, मेरे पिता दिल्लीमें डाक्टर हैं। आप तो टहलने जा रहे थे न?

'हां जाऊंगा।'

'तो चलिए न, मैं भी उधरसे ही निकल जाऊंगी।'

(३)

जमना किनारे दोनोंका साथ साथ घूमने जाना एक नियम हो गया था। और इसी भांति छः महीने बीत गये। कुमार उसे मृच्छकटिक पढ़ा चुके थे और पंचतन्त्र चल रहा था। कालिज बन्द हो गया और सब लोग छुट्टियोंमें घर चले गए। लड़की भी होस्टल बन्द हो जानेके कारण कुमार के ही पास आ बसी थी। इससे पहले कुमार बाजारसे भोजन खरीद लाता और कमरेमें आकर खा लेता। लड़की ने आते ही सबसे पहले यह व्यवस्था समाप्त की।

एक दिन कुमार बोले—'घर पर डाक्टर साहब चिन्तित होंगे।'

'नहीं' मैंने उनको लिख दिया है। तब तक मैं यहीं रहूँगी। आपकी भजन पूजामें कोई विघ्न तो नहीं होता?'

'ना, सो कुछ बात नहीं पर हमारे देशमें लड़कियों को इतनी स्वतन्त्रता है नहीं। इससे उन्हें क्षोभ न होगा?

'उन्होंने क्षोभ करना छोड़ दिया है। आप ही बताइये मैं किधरसे भली लड़की हूं जो मेरे लिए कोई चिन्ता करे।'

'मेरे लिए तो कई ओरसे हो। मेरे साथ तो आपने उपकार ही किया है। यदि उन्होंने रुपया भेजना बन्द कर दिया तो?'

'इसकी मुझे चिन्ता नहीं।'

'क्यों ?'

'मैं कमाती हूँ ।'

'कैसे ?'

'वसन्तसेना कैसे कमाती थी ?'

'कौन वसन्त सेना ?'

'वही मृच्छकटिककी ।'

कुमारने आंखें नीची कर ली। वह फिर बोली—

'क्यों, अब आप भी मुझसे घृणा करने लगेंगे।'

'नहीं, यह आपकी इच्छाकी बात है - वैसे आप समझती सब हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा।'

'अब तक तो जाने कुछ जानती थी या नहीं, पर हां अब आपकी कृपासे कुछ जानने लगी हूँ।'

'चलो सब भगवानकी कृपा है। आज घूमने नहीं चलना क्या ?'

'भला आप ही तो बातोंमें लगा लेते हैं और फिर उल्टा हमें डांटते हैं।'

'क्यों, आप मुझे डांट लो मना थोड़े ही करता हूँ।

'ना, आपको डांटनेकी सामर्थ्य हममें नहीं है।'

'क्यों रोटी तो आप देती हैं। आज मत देना। हमारे यहां एक कहावत है—'जिसके हाथ लोई, उसके हाथ सब कोई।'

'अच्छा, अभी आई, आपकी रोटी बना लूं, तब बात करूँगी।'

यह कह कर लड़की साड़ीका पल्ला मुँह पर दबाये रसोईघरमें चली गई। इस बीच कुमार फिर अपनी आंखों की गहराईमें खोयेसे बैठे रहे। दिन छिपते छिपते दोनों घूमने निकल पड़े। आज कुमारका मन विशेष रूपसे भारी हो उठा था। ऐसा आज बहुत दिन पीछे हुआ था।

'क्यों, घरकी याद आ रही है क्या ?' लड़कीने पूछा।

'किसको नहीं आती ? आप भी तो अब दो चार दिनमें घर जाओगी ही।'

'किसने कहा ?'

'इसमें कहनेकी क्या बात है ? घर न जाओगी ?

'नहीं तो।'

'तो फिर ?'

'बम्बई जाऊँगी।'

'क्यों ?'

'अभिनेत्री बनूँगी। यह नाम भी बदल लूँगी।'

अन्धकारकी वलियां गाढ़ी हो चली थीं। दोनों घूमते घूमते आकर एक कदम्बके पेड़के नीचे पत्थर पर बैठ गये। जमना बह रही थी। कुछ गम्भीर होकर लड़की बोली—देखिये समय कैसे बीत जाता है। श्रीकृष्णके समयमें भी जमना ऐसे ही बहती थी। कहां वे गोपियां गईं और कहां वे गायें! स्वयं कृष्ण ही न रहे।'

कुमारने जी भर कर उसके मुखकी ओर देखा और क्षणिक वैराग्यसे प्रभावित उसके मुखकी सौम्यतामें खो गये। वह भी बीच बीचमें यह लक्षित कर लेती थी कि कुमार मेरी ओर देख रहे हैं। सहसा वह बोली, मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आपसे परिचय हुआ।'

'मुझे भी आपसे मिलकर हर्ष हुआ है।'

'मैं कल ही बंबई क्यों न चली जाऊं? हां, कल ही जाऊँगी, नित्य यह आयु ढलती ही है।'

'चलो तो चलो, फिर देर ही होती है।'

वैशाखी पूर्णिमाका चांद आकाशमें आ चुका था। धीरे धीरे दोनों लौट आये। खा पीकर जब दोनों लेट गये तो कुमार बोले—'कल आपका कुली और बनना है।'

'मुझ दुश्चरित्राको आप क्यों लज्जित करते हैं।

'नहीं अब तुम मेरी शिष्या हो। क्या मन भी न बहलाऊं ?'

'ओह, यह तो मेरा सौभाग्य है। मैं आपको अपने विवाहमें बुलाऊं तो आप आओगे ?'

'देखा जायगा।'

'नहीं आओगे, मैं बुरी लड़की जो हूँ। कुछ ठहर कर बोली—'आज हमारी यहां अन्तिम रात है। फिर हम यहां कभी क्यों आयेंगे। आप भी एक दो दिनमें घर चले जायेंगे और इस प्रकार हमारा यह मिलन एक स्वप्नकी सी घटना हो जायगी। क्या आपके मनमें ऐसी बातें कभी नहीं आतीं ?'

'आती हैं, पर संसारकी असारता और दुःखोंका अनुभव करके मनुष्यकी गति कुछ और हो ही जाती है। हम खेलते हैं, खाते हैं, सब कुछ करते हैं; भोगोंसे हमारा द्वेष नहीं, पर हमने जो कुछ देखा है, अनुभव किया है उसे हम कैसे

भूल सकते हैं; वह हठात् हमारी आंखोंमें उतर आता है और आंखोंका अर्थ है जीवन। संसारमें मोहके अनेक प्रसंग आते हैं, हम उनका स्वागत भी करते हैं, जैसे अभी आप कर रही हैं, पर उन सबका स्वागत करनेकी शक्ति हममें नहीं। भला, आप ही सोचो, है क्या? क्या करें जो कुछ बन पड़े, सब ठीक है। मनुष्यको उत्साह नहीं छोड़ना चाहिए। देखता हूँ आपमें मुझसे अधिक उत्साह है। दिशा चाहे कुछ भी हो, मुझे आपसे बहुत कुछ सीखना है क्योंकि उत्साहका नाश होना बहुत भयंकर बात है।

दूसरे दिन कुमार उसे स्टेशन पहुँचाने गये। टिकिट हाथमें दिया तो देखा कि लड़की की आंखें डबडबा आई हैं। उन्होंने स्नेहसे कहा—'देखो, भली भांति जाना।'

कुछ देर मौन रहकर बोले—'अच्छा तो मैं चलूँ?'

लड़की उनके चरण छूने झुकी और झुकीकी झुकी रह गई। कुमार उसकी दोनों बांहें पकड़कर उठानेको झुक गये पर वह उठती ही न थी। सिसक सिसक कर कह रही थी—'मैं बहुत बुरी लड़की हूँ।'

'क्या करती है पगली, अपनेको हीन मत समझ।'

'आप मुझे अवश्य भूल जाओगे।'

'नहीं भूलूंगा।'

'तो वचन दीजिए कि फिर मिलूंगा, तभी छोड़ूंगी।'

'हां, मिलूंगा।'

कुमारने जैसे तैसे उसे समझा बुझाकर गाड़ीमें बैठाया और अपनी धोतीसे उसके आंसू पोंछे।

लौटते समय मार्गमें उनके कानोंमें मानों ये शब्द गूंज रहे थे कि मैं बहुत बुरी लड़की हूँ और आप मुझे भूल जाओगे।

हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा?

[कवयिता—श्री पं० भगवानदासजी त्रिपाठी व्याकरणाचार्य]

हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा?
होता था सुरभित नभ जिससे वह यज्ञ धूम अब कहीं नहीं।
होता था मुखरित जग जिससे वह वेद घोष अब कहीं नहीं॥
रघु, रन्तिदेव, अर्जुन जैसे वे युद्धवीर अब यहां नहीं।
बाल्मीकि, व्यास, नारद, वशिष्ठ से मुनि पुङ्गव भी यहां नहीं॥
अब भारत, भारत नहीं रहा हो गया है ये गारत जैसा।
हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा॥
भाई हैं नहीं भरत-से अब, भाई भाईको खाता है।
मां बाप तरसते पानीको पत्नीसे केवल नाता है॥
कर बाप बिचारा मजदूरी बच्चेको अगर पढ़ाता है।
तो सेवा दूर रही बच्चा "फादर"को "फूल" बताता है॥
तब ही तो दर दर फिरता है मिलता है जैसेको तैसा।
हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा॥
अब वह त्रेता है नहीं कि जब गुरु ईश्वर समझा जाता था।
वह शिष्य नहीं गुरु आज्ञा पर जो काट अंगूठा देता था॥
अब तो जो खाते खड़े-खड़े और मूछ सफाचट करवावे।
पढ़ने लिखनेसे दूर रहे पर गीत सिनेमाके गावे॥
वह पक्का छात्र जो मास्टरको समझे बस भाड़ेका भैंसा।
हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा॥
गुरु वृद्धोंका अब ध्यान नहीं, देवोंका भी गुणगान नहीं।
अब है कुलीनकी शान नहीं, गुणियोंका भी सम्मान नहीं॥
अब तो बस वह ही सब कुछ है जिसके पल्लेमें है पैसा।
हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा॥
हिन्दू-बिल पास हुआ नारी अधिकार बराबर पायेगी।
अब तो सेनामें भर्ती हो रणमें बन्दूक चलायेगी॥
बन पुलिस वही पहरा देगी अब पुरुष तो खाकर सोयेंगे।
स्त्रियां बनेंगी आफीसर अब खाना पुरुष पकायेंगे॥
वे तो जायेंगी आफिस पति बच्चोंको दूध पिलायेंगे।
आफिससे आ वे सोएंगी, पति उनके पैर दबायेंगे॥
अब सती नहीं सत्ता होंगे युग आने वाला है ऐसा।
हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा॥
भारतकी सत्य अहिंसाकी है नीति यही बतलाते हैं।
पर कैसी रही अहिंसा जब बूचड़खाने खुलवाते हैं॥
गोरक्षाका तो नाम लिये झट त्यागपत्र दिखलाते हैं।
मुर्गी, अण्डे, बकरे, मछली खाओ उपदेश दिलाते हैं॥
नरसे अब नहीं बचेगा पशु खानेसे खर कूकर जैसा।
हा राम! कहें हम क्या तुमसे यह समय न जाने है कैसा॥

—ॐॐ—

हिंसाका अकाण्ड ताण्डव

[लेखक—भक्त श्री रामशरणदासजी]

पहिले हमारे इस धर्मप्राण अहिंसा-प्रधान देवभूमि भारतमें प्रति मंगलवार और शनिवारके दिन करोड़ों हिन्दू बन्दरोंको श्रीहनुमान् मानकर लड्डुओंसे जिमाते थे, गुड़ और चने खिलाते थे, मीठे रोटका भोग लगाते थे और यदि बन्दर गाँवमें नहीं मि ते थे तो कई कई मील पैदल चल कर जंगलोंमें जाकर उन्हें तलाशकर खिला पिलाकर ही बड़ी प्रसन्नताका अनुभव करते थे। यह कोई सुनी सुनाई बातें नहीं हैं, हमने अपनी आंखोंसे पिलखुवामें यह सब कुछ देखा था कि जब पचासों व्यक्ति बन्दरोंको जिमाने जाते थे। पूज्य ब्राह्मणोंमें, ज्योतिषियोंमें बड़ी श्रद्धा भक्ति रखते थे और तनिक भी रोग शोक होने पर, विपत्ति आने पर दौड़े हुए इनकी शरणमें जाते थे और पूज्य ब्राह्मण, ज्योतिषी यही शास्त्रानुसार जीव मात्रके उपकारकी बातें बताते थे कि—"मंगलवारको बन्दरोंको जिमा देना, घी बूरासे अमुक दिन चींटियोंको जिमा देना, अमुक दिन कुत्तेको दूध पिला देना, संध्याको गायोंको लोई खिला देना, पीपलको, तुलसीको जल देना" आदि २। ब्राह्मणोंके बताये अनुसार यह सब किये जाते थे तो तत्काल ही सब रोग शोक भागते दृष्टि पड़ते थे और सब चैनकी बंशी बजाते थे। पौने दो अरब वर्षके इतिहासमें आज तक भी किसी हिन्दू राजाने बन्दर नहीं मरवाये और न उन्हें खेतीका नुकसान करने वाला ही बताया। भूलसे भी कभी यदि किसीके हाथसे बन्दर मर जाता था तो सारे गांवमें एक दमसे तहलका मच जाता था, और सारा गांव मिलकर उसे बन्दरोंका हत्यारा मानकर जातिसे च्युत कर देता था, उसे बन्दरोंको मारनेका पाप दूर करनेके लिये चारों धामकी पैदल यात्रा करनी पड़ती थी और 'मैं हत्यारा हूँ—मैं महान् दोषी हूं' यह बता बता कर दर-दरकी खाक छाननी पड़ती थी। गोभक्षक मुसलमानोंका भी यहां पर ७०० वर्ष तक राज्य रहा और उन्होंने खूब गोहत्यायें कीं, मन्दिर ढाये, स्त्रियाँ भगाईं, सब कुछ जुल्म पर जुल्म ढाये, पर उन्होंने भी कभी निरपराध बन्दरोंको नहीं मारा, और नाहीं सताया। अंग्रेजोंका राज्य आया पर उन्होंने भी कभी बन्दरोंको नहीं मरवाया। बन्दरोंको मरवानेकी सबसे पहिले बात गांधीजीके दिमागमें आई और उन्होंने उड़ीसा में ६ हज़ार बन्दर, फी बन्दर ६) रु० के हिसाबसे मरवाना प्रारम्भ किया, जिसका सनातनधर्मियोंने खूब घोर विरोध किया। मैं स्वयं एक पंजाबके स्वर्गीय गोस्वामीजीके साथ गांधीजीसे मिला और उन्हें खूब समझाया पर जो गांधी भगवान् श्रीराम श्रीकृष्णको काल्पनिक मानते थे वह भला हमारी बातों पर क्यों ध्यान देने लगे! आज उसीका भयंकर दुष्परिणाम सबके सामने है कि जो आज खुले रूपमें लाखों करोड़ों निरपराध बन्दर, मोर, नीलगाय, चूहे सभी अन्नकी बरबादी करनेके नाम पर धड़ाधड़ मौतके घाट उतारे जा रहे हैं, यह कितना घोर अनर्थ किया जा रहा है। मेरे देशमें एक राजा थे शिवी, जिन्होंने कबूतरकी भूख शांत करनेके लिये अपने हाथों अपना मांस काट काट कर दे दिया था और एक राजा थे मोरध्वज जिसने शेरके लिये पुत्रको चीर डाला था। एक थे संत श्रीगुरु नानकदेवजी महाराज जिन्हें उनके घर वालोंने श्रीरामभक्तिमें तल्लीन देखकर और ठाली निकम्मा देखकर खेतमें चिड़िया उड़ानेका कार्य सौंपा। श्रीरामभक्त नानकजी महाराज सबमें अपने इष्टदेव भगवान् श्रीरामको देखने वाले भला चिड़ियोंमें अपने श्रीरामजी महाराजको कैसे न देखते? उन्होंने चिड़ियोंको मारना तो क्या उड़ाना भी घोर पाप समझा और स्पष्ट घोषणा कर दी—

रामजीकी चिड़िया रामजीका खेत।
खाओ री चिड़िया भर-भर पेट॥

यह थे दयाकी साक्षात् मूर्ति श्री नानकजी महाराज। संत मलूकदासजी तो यहां तक कहते हैं—

हरी डार मत तोड़िये लागे सूखा बान।
दास मलूका यों कहें अपनो सो जिय जान॥

अब इसके विपरीत दूसरी ओर देखिये आज इन दिन रात अहिंसा अहिंसाकी डींग मारने वालोंको जिन्होंने सबसे पहले अन्नकी बरबादीके नाम पर हजारों लाखों निरपराध बन्दरोंको मौतके घाट उतरवाकर और अण्डे मछली खानेका समर्थन कर, मोर, नीलगाय, हिरन, चूहे मरवाकर और भारतसे लाखों गायोंको कटवा कटवा कर उनका गोमांस हंगरी और कोरिया भेज-भेज कर, करोड़ों पक्षियोंको विदेशोंमें भेज-भेज कर, अहिंसाकी ऐसी मिट्टी पलीत की है कि सारे इतिहासमें ऐसा दूसरा उदाहरण ढूंढे भी नहीं मिलता। गांधी और उनके शिष्य विनोबा-भावे, आचार्य मश्रुवाला, के० एम० मुन्शी आदि २ सभी बंदरों पर बरस पड़े और सभीने बन्दर मारनेका समर्थन कर डाला और इस प्रकार लाखों बंदर, मोर, नीलगाय मौतके घाट उतारे जाने लगे। पौने दो अरब वर्षोंके इतिहासमें यह बन्दर और गायोंके मारे जानेकी सबसे पहली पाप पूर्ण घटना थी। इससे पहले किसीने भी इन बन्दरों पर जुल्म नहीं ढाया। पापी रावणने बन्दरोंके साथ छेड़ छाड़ की थी सो वह अपने सोनेकी लंकाको धूलीमें मिला बैठा और बरबाद हो गया। धर्मप्राण भारतमें ऐसा घोर जघन्य पाप हो और वह भी अहिंसाकी डींग मारने वालोंके द्वारा हो इससे बढ़कर और घोर दुःख और शोककी बात क्या होगी। बन्दर श्रीहनुमान्‌जी महाराजके प्रतीक हैं, माध्यम हैं, यदि आपको श्रीहनुमान्‌जी महाराजकी प्रसन्नता प्राप्त करनी है तो इन बन्दरोंको प्रसन्न करना ही होगा। जिस प्रकार पूज्य ब्राह्मणोंको खिलाने पिलानेसे भगवान् प्रसन्न होते हैं, अग्निमें आहुति देनेसे देवी देवता प्रसन्न होते हैं, कुत्तेको खिलानेसे श्री भैरव भगवान् प्रसन्न होते हैं, कन्याओंको जिमानेसे श्रीदुर्गाजी प्रसन्न होती हैं और श्री नागपंचमीके दिन नाग पूजासे श्री शेष भगवान् प्रसन्न होते हैं, इसी प्रकार बन्दरोंको खिलाने पिलानेसे श्रीहनुमानजी महाराज प्रसन्न होते हैं। आज बन्दरोंको मार-मार कर देश पर श्री हनुमान्‌जी महाराजका कोप लाया जा रहा है कि जो सारे देशको गरक करके रहेगा। आज हिन्दुओंका कैसा घोर अधःपतन किया गया है कि जो हिन्दू कभी भूलसे भी बन्दर मारना घोर पाप समझता था वही हिन्दू आज १॥) रु० २) रु० की बन्दर ले लेकर धड़ाधड़ मार मार कर ला रहा है। आज लाखों बन्दरोंको पकड़ पकड़ और उन्हें इङ्गलैण्ड, अमेरिका भेज-भेज कर मौतके घाट उतारा जा रहा है और बदलेमें डालर कमाये जा रहे हैं।

दहल उठा घोर हिंसकोंका भी वज्र हृदय

इन अहिंसाके पुजारियोंने इङ्गलैण्ड अमेरिकाको भेज भेज कर बन्दरों पर जो जो जुल्म ढाये हैं और बदलेमें डालर कमाये हैं—इस घोरातिघोर अत्याचारोंको देखकर बड़े बड़े घोर हिंसकोंके बज्र हृदय भी दहल उठे हैं। वहां पर बन्दरों पर ऐसे-ऐसे घोर अत्याचार किये जाते हैं और उन्हें ऐसी ऐसी घोर यातनायें दी जाती हैं कि जिन्हें देख बड़े-बड़े अंग्रेजोंके बज्र हृदय भी पिघल गये हैं और जो दिनरात हिंसा करते हैं उनके हृदयोंको भी बहुत बड़ी चोट पहुँची है, पर इन गांधीके चेले अहिंसाके पुजारियोंको इतने पर भी तनिक दया नहीं आई। अभी देहलीके 'नवभारत टाइम्स' ता० ६ फरवरी सन् १९५५ में निकला है कि "लन्दनमें ब्रिटिश शिष्टमंडल विजय लक्ष्मी-पंडितसे मिला है। ब्रिटेनकी पशु संरक्षण संस्थाके एक शिष्टमंडल ने भारत सरकारसे बन्दरोंका निर्यात बन्द करनेकी प्रार्थना की। उक्त प्रार्थना इण्डियाहाऊसकी एक बैठकमें भारतीय हाईकमिश्नर विजयलक्ष्मी पंडित तथा अन्य उच्च अधिकारियोंसे की गई। शिष्टमंडलके नेता ब्रिटिश संसदके मजदूर सदस्य श्री पीटर फ्रीमैन तथा पशुओं पर अत्याचार रोकने के लिए बनी रायल सोसायटीके कौंसिलके सदस्य थे। उन्होंने बताया कि "गत दो वर्षोंमें एक लाखके लगभग बन्दर अमेरिका जाते हुए लन्दन हवाई अड्डे से गुजरे। उन बन्दरों में से ७५ प्रतिशत परीक्षणात्मक कार्योंके लिए तथा शेष राकेट अनुसंधानके लिए ले जाये गए। बैठकके बाद कौंसिल के एक प्रवक्ताने बताया कि गत दो वर्षोंमें लगभग १ हजार बन्दर यात्राके दौरानमें ही मर गए।"

देखी आपने अहिंसकोंकी काली करतूतें और अहिंसा की मिट्टी पलीत। अब आपने घोर हिंसकोंकी तो बातें सुनीं अब जरा लन्दनमें रहने वाले आर्यसमाजके मन्त्री धीरेन्द्र शील शास्त्रीका इस घोर अत्याचारको देखकर ता० ३० अप्रैल सन् १९५५ के 'नवभारत टाइम्स' देहलीके पृष्ठ

४ पर सम्पादकके नाम लिखा पत्र भी देखिये। वह लन्दन से लिखते हैं।

भारत सरकारके विदेश विभागका निन्दनीय रवैया

सम्पादकजी! भारत द्वारा वैज्ञानिक प्रयोगोंके लिए बन्दरोंका निर्यात एक प्रसिद्ध बात हो चली है। गत फरवरी मासमें लन्दनकी शांतिवादी संस्था "पैसिफिस्ट युनिवर्सलिस्ट सर्विसेज" के रिलीजन कमीशनने अहिंसाके नाते इस बन्दर निर्यातके विरुद्ध एक प्रस्ताव पास कर उसकी प्रतियां भारतके प्रधानमन्त्री श्री पं० जवाहरलाल नेहरू तथा हरिजनपत्रिकाको भेजी थी। परन्तु इन प्रस्तावोंकी प्राप्तिकी सूचना तक भारत-सरकारने नहीं दी, ऐसा उक्त संस्थाके सेक्रेटरी मिस ग्लैड्स जिल्लरने मुझे बताया। भारत सरकारके विदेश विभागके लिए यह लज्जास्पद है। उस प्रस्तावका आशय निम्न है—"यह सभा महात्मा बुद्ध अशोक और गांधीके देश द्वारा पश्चिमी जगत्को वैज्ञानिक प्रयोगोंके लिए किये जाने वाले बन्दरोंके निर्यातको अमानवीय समझती है और विरोधपूर्वक आशा करती है कि भारत सरकार इस निर्यातको तुरन्त ही रोक देगी।"

चाहे हमारी सरकार इस प्रकारके आदर्शोंको भले ही स्वीकार न करे, परन्तु सरकार पर प्रस्ताव प्राप्तिकी सूचना का उत्तरदायित्व महान् है जिसकी उपेक्षा और विशेषकर विदेशी प्रस्तावकी उपेक्षा भारतके गौरवकी घातक है। आशा है हमारा विदेश मन्त्रालय इस ओर उपेक्षा नहीं बरतेगा।

—धीरेन्द्रशील शास्त्री, लन्दन

अब जरा २१ जून सन् १९५५ के 'नवभारत टाइम्स' देहलीको एक अमरीकन महिलाका अमरीकासे लिखा सम्पादकके नाम पत्र भी देखिए—

अमरीकी महिलाकी अपील और करुणाजनक पुकार

सम्पादकजी! अमरीकी समाचार पत्रोंमें ऐसे चित्र छपे हैं कि जिनसे भारतसे अमरीका आने वाले बन्दरोंकी दयनीय स्थितिका पता चलता है। इन बन्दरोंको 'साकटीके' तैयार करने के लिए मारा जाता है। कुछ वर्ष पूर्व मैंने आपके नेता महात्मा गांधीको एक पत्र लिखा था, मैंने उनसे आग्रह किया था कि वह अमरीकाकी अमानुषिक प्रयोगशालाओंसे भारतीय बन्दरोंको बचायें। गांधीजीने उत्तर दिया था कि उन्होंने स्वयं डाक्टरी पढ़ना आरम्भ किया था। पर डाक्टरको स्वयं निर्दयी बनना पड़ता है। और इसीलिए उन्होंने डाक्टरी पढ़ना छोड़ दिया था। गांधीजीने अपने जवाबमें यह भी लिखा था कि चीरफाड़ रोकनेका प्रयास करना समुद्रकी उत्ताल तरंगोंको रोकने का प्रयत्न करनेके समान है। अब भारत ग्रेट ब्रिटेनकी दासतासे मुक्त हो चुका है। क्या मैं भारतीय जनतासे यह नम्र निवेदन कर सकती हूँ कि वह अपनी आजादीकी रक्षा करें। अमरीकी अधिकारियोंका कहना है कि अमरीका में ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत पशुओंके साथ भी मानवीय व्यवहार करनेकी गारण्टी दी गई है, परन्तु इस कथनमें कोई सचाई नहीं। एक बार जब कोई पशु प्रयोगशालामें पहुंच गया तब हम लोग उसे अमानवीय व्यवहारसे बचा नहीं सकते। हमारे अमरीकाके कानूनमें ऐसी व्यवस्था है जिसके अनुसार प्रयोगशालायें, और डाक्टर उस पशुके साथ जैसा चाहे व्यवहार कर सकते हैं। वे यदि चाहे तो भूखा मार सकते हैं, बोटी बोटी काट सकते हैं, जीवित उबाल सकते हैं, बर्फमें जमा सकते हैं, और किसी भी जीवित जन्तुका वध कर सकते हैं। कानून उनके काममें किसी भी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं कर सकता। ये लोग माननीय कानून अथवा अन्य किसी कानूनकी परिधिसे बाहर है। इन लोगोंकी शक्ति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। प्रमाणके लिए आप किसी भी डाक्टरी पत्रिकाको देख सकते हैं। बन्दरोंसे बनाया जाने वाला 'साकटीका' लगाये जानेके बाद भी हमारे कई बच्चे पोलियोके आघातसे जीवनलीला समाप्त कर चुके हैं। कुछ मामलोंमें तो ऐसा हुआ है कि जिन बच्चोंके यह टीका लगाया गया वहीं पोलियो रोग फैलानेके कारण बने। एक महिलाके बच्चोंको बन्दरके रक्त सारका टीका लगाया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि माताकी मृत्यु हो गई। अब हम भारतीय जनतासे अनुरोध करते हैं कि वह भारतीय बन्दरोंको अमरीका भेजा जाना बिलकुल रुकवा दें। बन्दरों के साथ दुर्व्यवहार होता है, आप लोग अफसरोंकी मीठी बातोंके भुलावेमें न आएं और अपने अधिकारोंकी रक्षाके

लिए तत्पर हों। भगवान आपकी मदद करेगा आप लोग अपने देशके निरीह प्राणियोंकी रक्षा करें। ईश्वर आपका सहायक हो।

१८०६, कालेज एवेन्यू	मरजोरी
रेसीन विस्कांसिन	मुनरो
यू० एस० ए०	फ्लैगेल

देखी आपने अमरीकी महिलाकी करुण पुकार, क्या वह आजके इन अहिंसाके पुजारियोंसे, कांग्रेसियोंसे लाख दर्जे साक्षात् दयाकी मूर्ति नहीं है? धिक्कार है, लाख बार धिक्कार है आज भारतके हम हिन्दुओंको कि जो ऐसे घोर जुल्म ढाये जाते देख रहे हैं फिर भी हमारे कानों पर जूं नहीं रेंगती। अब जरा सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता व आर्य समाजी नेता उत्तर प्रदेशके माल मंत्री चौ० चरणसिंहका देवबन्दमें दिया भाषण भी सुनिए जो ता० १२ फरवरी सन् १९५५ के 'वीर अर्जुन' पत्रमें निकला है। आपने अपने देवबन्द एच. ए. इण्टर कालिजके मैदानमें पांच हजार किसानोंकी सभामें भाषण करते हुए कहा कि बन्दर सबसे खराब जानवर हैं यह किसी भी काम नहीं आता, और सबसे अधिक नुकसान करता है, इसे गोलीसे मार देना चाहिये। आपने बताया कि पंजाब व उड़ीसामें कानून बना दिया गया है कि बन्दरकी पूंछ लाने वालेको डेढ़ रुपया दिया जायगा इसी प्रकारका कानून उत्तर प्रदेश सरकारके विचाराधीन है।

ता० १३ फरवरी सन् १९५५ के 'नवभारत टाइम्स' में छपा है कि उत्तर प्रदेश सरकार बंदर, नीलगायों, सूअरों रीछके विरुद्ध युद्ध घोषित कर रही है। ग्राम पंचायतोंको शस्त्र सज्जित किया जा रहा है और बन्दूकोंके मुफ्त लाइसेंस दिये जा रहे हैं। लिखित साहित्यके वितरण एवं रेडियो और अन्य उपकरणों द्वारा लोगोंमें बन्दरोंको हनुमानजीका वंशज समझनेकी धारणाके भ्रान्त होनेका प्रचार किया जायगा और बन्दरको मानवका मुख्य शत्रु बताकर वानर पूजाके स्थान पर वानर वधको प्रोत्साहित किया जायगा।

देखा आपने, वानर पूजाके स्थान पर बन्दर बध करने का प्रचार किया जा रहा है और बन्दरोंको नुकसान करने वाला बताया जा रहा है। बन्दर ही नहीं ता० १३ अप्रैल सन् १९५५ के 'नवभारत टाइम्स' में निकला है कि श्री रघुनाथसिंहके प्रश्नके उत्तरमें श्री जैनने बताया कि सन् १९५४ में ४ लाख ७१ हजार ५,७५ और जनवरी सन् १९५५ में एक हजार ३४९ पक्षी भारतसे विदेशोंको भेजे गये। काशीके 'सन्मार्ग' पत्र ता० १८ जुलाई सन् ५५ में छपा है कि भारतसे प्रतिमास ३०००० चिड़िया लन्दन भेजी जा रही हैं। यह मधुर कंठसे गाने वाली रंग बिरंगी मनमोहक चिड़ियां यातायातमें अमानुषिक लापरवाही और भ्रष्टाचार एवं कुप्रबन्धके कारण आधी समाप्त हो जाती हैं। प्रतिमास इस भीषण प्राणघातके संवादसे लंदनकी रायल सोसायटीकी पशु निर्दयता निरोधक संस्थाने हालैंड और बेलजियमके तद्विषयक अधिकारियोंके नाम कड़ा विरोध पत्र लिखकर इन मूक और अबोध पशुओंके प्राणोंकी रक्षा के लिए सचेत रहनेको लिखा है। इन पक्षियोंका स्वाभाविक स्लेटी, भूरा पंख जिस पर कभी कभी लाल रंगके छींटे पड़े रहते हैं विदेशियोंको बहुत ही प्रिय लगते हैं। इनके हरे, नीले, पीले और दूसरे रंगके बंधुबांधव प्रकृति की रहस्यमय विराट कारीगरीके प्रशंसकोंको आकृष्ट कर लेते हैं। यह भारतसे भेजे जाकर हालैंड और बेलजियमको जाते हैं, वहांका प्रत्येक निवासी भारतके इन आकर्षक मनमोहक गायक विहंगोंको अपने घर रखना चाहता है। साथ ही वैज्ञानिक इन पर प्रयोग भी करते हैं और कुछ व्यक्ति इनका स्वादिष्ट मांस खाना ही अधिक पसन्द करते हैं।

ता० २४ जुलाई सन् १९५५ के 'नवभारत टाइम्स' दिल्लीमें निकला है कि—उत्तर प्रदेशकी कलावस्तुएं जहां इस देशके लिए करोड़ों रुपयेकी विदेशी मुद्राएं अर्जित कर रही हैं वहां इस राज्यके विहंगवृन्द भी स्वदेशके लिए ये बहुमूल्य मुद्राएं अर्जित करनेमें आत्म-बलिदान पर सन्नद्ध हैं। सुन्दर परों, आकर्षक रंगों और मधुर स्वरों वाले लाखों पक्षी इस राज्यके वनों, विशेष कर टिहरी गढ़वाल और नेपालकी तराईके पार्श्वसे पकड़े जाकर विदेशोंमें भेजे जा रहे हैं। इनमें तोता, मैना, बुलबुल, मोर, कबूतर, कौवा, बतख, सारससे लेकर चील, कठफोड़वा तक हैं। किस विपुल संख्यामें वे विदेश भेजे जाते हैं इसका सहज

अनुमान इसीसे लग सकता है कि गत वर्ष केवल ब्रिटिश ओवरसीज एयर कार्पोरेशन ही ७॥ लाख पत्ती भारतसे ढो ले गया।

देखा, करोड़ों जीवोंको देश निकाला दिया जा रहा है, यह स्वराज्य क्या मिला मानों भारतको गारत करनेका ठेका मिल गया। इस प्रकार सारे देशके निरपराध जीवों को धूंवाधार मारने, देश निकाला देने, वध करनेका खुल कर पाप किया जा रहा है। लाखों कछुवे जो अब तक श्री गंगा, यमुना, सरयू, गोमतीमें रहकर सुखकी सांस लेते थे, स्वराज्य मिलते ही धड़ाधड़ पकड़-पकड़ कर कलकत्ता भेजे जा रहे हैं जहां उन्हें मौतके घाट उतार कर उनका मांस खाया जा रहा है। गोमांस कोरिया हंगरीको भेज भेज कर इस प्रकार भारतके गौरवको धूलिमें मिलाया जा रहा है। एक ओर तो गांधी, विनोबाभावे, चरणसिंह के० एम० मुंशी तथा अन्य कांग्रेसी लीडर हैं जो बन्दर मारने और बन्दरों द्वारा खेतीको नुकसान पहुंचाने की बात कहते हैं और दूसरी ओर धर्मशास्त्र है, श्री महर्षि वाल्मीकि जी महाराज हैं, साक्षात् अनंतकोटि ब्रह्माण्ड नायक परात्पर ब्रह्म भगवान् श्रीराम हैं और श्रीदेवराज इन्द्र हैं—कि जो बन्दरोंको प्राणप्रिय मान उनके सुखी रहनेमें ही देशको धन धान्यसे भरपूर रहना मानते हैं, जरा ध्यानसे पढ़िये—

राम रावण युद्धके समय श्री देवराज इन्द्रजी महाराज भगवान् श्रीरामचन्द्रजी महाराजके पास आते हैं और भगवान्से कहते हैं कि—हे शत्रु विनाशी भगवान् हम लोगोंका दर्शन विफल नहीं होना चाहिए, हम प्रसन्नतासे कहते हैं कि तुम्हारे मनमें जो भी अभिलाषा हो कहो। जब इन्द्रजी महाराजने प्रसन्न होकर यह कहा तो श्रीरामचन्द्र जी अत्यन्त प्रसन्न व हर्षित होकर विनीत भावसे यह बचन बोले, जिससे सिद्ध होता है कि जहां पर बानर बध होता है वहां पर उलटे फल फूलोंकी हानि होती है। श्रीरामराज्य की दुहाई देने वाले लोगोंको श्रीबाल्मीकि रामायणमें वर्णित इन श्लोकों पर ध्यान देना चाहिए—

अकाले चापि पुष्पाणि मूलानि च फलानि च।
नद्यश्च विमलास्तत्र तिष्ठेयुर्यत्र वानराः॥
सर्ग १२२ श्लोक १०

भगवान् श्रीराम इन्द्रसे बरदान मांगते हुये कहते हैं कि हे देवराज! यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो तो मुझे यह बरदान दो कि मेरे यह बानर जिस स्थान पर रहें वह स्थान अकालमें भी कन्द, मूल, फल और पुष्पोंसे परिपूर्ण रहे वहांकी नदियाँ सब निर्मल जल वाली हों। इस पर इन्द्र श्रीरामके इस कथनको स्वीकार करते हुए कहते हैं—

अकाले पुष्पशबलाः फलवन्तश्च पादपाः।
भविष्यन्ति महेष्वास! नद्यश्च सलिलैर्युताः॥

यह वानर जहाँ भी वास करेंगे उस स्थानके वृक्ष बिना ऋतुके आये भी फल उत्पन्न करेंगे और उनमें फूल लगेंगे, व नदियोंमें सदा ही जल भरा रहेगा। लोगोंको धार्मिक ग्रन्थों पर विश्वास हो वे इन श्लोकोंको देख कर एवं नास्तिक लोग मूक हत्याकी हायसे डर कर इन प्राणियों की हत्याका अविलम्ब विरोध करें। यह व्यर्थकी हत्या हमारी खाद्य समस्याको हल नहीं कर सकती और यदि कर भी दे तो भी हमें मूक जीवोंके प्राणोंको लेनेकी अपेक्षा भूखसे अपने प्राण देना शोभनीय है। हिन्दुओं को विचारना चाहिए कि वह अपने प्राणप्रिय धर्मशास्त्र और परात्परब्रह्म श्रीराम और श्री देवराज इन्द्रकी बात मानकर बन्दरोंकी रक्षा करते हैं या इन अंग्रेजी पढ़े वकील बैरिस्टरोंकी बातोंको मानते हैं? श्रीमद्भागवतमें भी आता है—

मृगोष्ट्रखरमर्काखु सरीसृपखगमक्षिकाः।
आत्मनः पुत्रवत् पश्येत् तैरेषामन्तरं कियत्॥

हिरण, ऊंट, गधा, बन्दर, चूहा. पेटसे चलने वाले प्राणी तथा मक्खी आदि सारे प्राणियोंको अपने पुत्रके समान देखने चाहिये, क्योंकि यथार्थ दृष्टिसे देखने पर इनमें तथा अपने पुत्रोंमें अन्तर ही क्या है?

आज तो करोड़ों बंदर हिरण, चूहे, नीलगाय सभी को मौतके घाट उतारनेमें ही उद्धार समझा जा रहा है। वह बन्दर जिन्हें साक्षात् ब्रह्म राम—

मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति-नेति कह वेद।
कृपा सिन्धु सोई कपिन्ह सन करत अनेक विनोद॥

वेद भी जिन्हें नेति-नेति कहते हैं वही परात्परब्रह्म श्रीराम बन्दरोंके साथ विनोद करते थे और उन्हें लाड़-

लड़ाते थे। यहीं तक नहीं—

प्रभु तरुतर कपि डारिपै किये आप समान।
तुलसी कहूँ न रामसे सहनशील निधान॥

अपने से भी ऊंचे वृक्षों पर बैठा कर प्रसन्न होते थे। आज उन्हींको गोलीका शिकार बनाना क्या महान् घोर पाप करना नहीं है? आज तो पाप पुण्यका फतवा भी यह वकील वैरिस्टर ही देने लगे हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अभी देखनेको मिला है जो इस प्रकार है। अभी ता० ६ मार्च सन् १६५५ के 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित हुआ है कि चौ० चरणसिंहका बाराबंकीमें भाषण हुआ है। उन्होंने अपने भाषणमें कहा है कि नीलगायका बध धर्म विरुद्ध नहीं है और न पाप है, इसलिए राज्य सरकारने उसके विनाशकी अनुमति दे दी है। नीलगाय समाजकी बड़ी भारी शत्रु है, उसे मरवानेमें कोई भी पाप नहीं है।

यह चौ० चरणसिंहका फतवा देखा, अब जरा १० जनवरी सन् १६५५ के 'नवभारत टाइम्स' को देखिये जिसमें केन्द्रीय कृषि मंत्री पंजाबराव देशमुखने मुर्गी प्रदर्शनीका उद्घाटन किया और उन्होंने बताया कि सरकार १५० मुर्गी पालक केन्द्र खोलना चाहती है, इस पर ७० लाख रुपया लगानेका अनुमान है और उन्होंने यह भी कहा कि महात्मा गांधी अण्डेको भोजनमें शामिल करनेके पक्षपाती थे। इसके अतिरिक्त 'नवभारत-टाइम्स' देहली ता० ५ मार्च सन् १६५५ पृष्ठ ४ पर उर्मिला सक्सेनाका सम्पादकके नाम पत्र छपा है "उत्तर प्रदेश शिक्षा बोर्डकी हाई स्कूलकी गृह विज्ञानकी प्रयोगात्मक परीक्षाके समय परीक्षकोंने छात्राओं से अण्डे और मांस पकानेको कहा। कुछ छात्राओंने जब यह कह कर आपत्ति की कि हम ब्राह्मण हैं और इन चीजों का स्पर्श भी धर्म विरुद्ध समझती हैं तब परीक्षकोंने धमकी दी कि जो छात्रा अण्डे पकानेसे इनकार करेगी उसके नम्बर काट लिये जायेंगे।"

यह हमने ज्यूं का त्यूं दिया है जिससे सिद्ध होता है कि ये नेता धर्मप्राण भारत देशको किधरसे किधर ले जा रहे हैं? अब तक जो कुछ किसीको मारने काटने मांस अण्डे खानेमें पापका भय बना हुआ था उसे भी यह धीरे-धीरे समाप्त करने जा रहे हैं और धर्मशास्त्र और धर्माचार्योंकी जगह आप ही पाप पुण्यका निर्णय करने वाले बन गये हैं। पाप पुण्यका फतवा भी अब वकील, वैरिस्टर मंत्री, लीडर ही दिया करेंगे और पाप क्या है और पुण्य क्या है और धर्म क्या है, अधर्म क्या है, इसका निर्णय वह किसी लन्दनके गुरुके द्वारा करेंगे या इन्हें इलहाम होगा या इन्हें भी गांधीजीकी तरह बात-बातमें अन्तरात्माकी आवाज आया करेगी यह तो भगवान् ही जाने, पर इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि यह धीरे-धीरे सारे हिन्दुत्व को ही समाप्त करके दम लेंगे। देश बड़ी तेजीके साथ विनाशकी ओर जा रहा है, यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, और इस घोर पापके परिणाम स्वरूप देशका घोर विनाश होगा यह भी एक चेतावनी दे रहा है। हिन्दू विवाह बिल पास कर हिन्दू धर्मको समाप्त करना और बंदर, मोर, नीलगाय, चूहे, हिरन, लाखों चिड़िया पक्षी सब पर जुल्म ढाना मछली, अण्डे खानेका प्रचार करना, गायें काट कर विदेशों को मांस सप्लाई करना और घोर हिंसाका ताण्डव-नृत्य करना यह सब घोर विपत्ति आनेका मार्ग तैयार किया जा रहा है। किसी भी निरपराध जीवको मारना, सताना, रुलाना, छेड़ना महान् पाप है, फिर भगवान् श्रीरामके प्राणप्रिय बन्दरोंको मारना तो ऐसा घोर पाप है कि इससे बढ़कर घोर नर्कका मार्ग और कौनसा हो? भूलकर भी बन्दरोंको नहीं मारना चाहिए, नहीं सताना चाहिए और जितना बने उन्हें खिला पिलाकर प्रसन्न करना चाहिए। बन्दरोंकी प्रसन्नता ही श्रीहनुमानजी महाराजकी प्रसन्नता प्राप्त करायेगी और श्री हनुमानजी महाराजकी प्रसन्नता ही प्रभु रामचन्द्र जी महाराजसे मिलायेगी और देश जातिका कल्याण करेगी। यह धर्मप्राण ऋषियोंका देश है, इसमें ऐसी खुराफाती बातें कदापि शोभा नहीं देती।

—०—

सूचना

श्री पं० सम्पूर्णदत्तजी मिश्र शास्त्री एम० ए० को उनके निर्मित 'ऋतूल्लास' काव्य पर श्रीस्वाध्यायसदन संस्थाकी ओरसे संस्थापकजीने सं० २०१० कार्तिक शु० ८ को 'कविपुण्डरीक' पदवी प्रदान की।

ज्यौतिषका प्रारम्भिक शिक्षण

[श्री पं० रघुनाथचन्द्रजी शास्त्री वाशिष्ठ बी. ए. साहित्यरत्न]

(गतांकसे आगे)

द्वितीय पाठ

१. लग्न

ये बारह राशियां चौबीस घण्टों व साठ घटिकाओं का रात दिनमें एक चक्कर इस भूमिका लगा लेती हैं। छः राशियां दिनमें सूर्योदयसे सूर्यास्त पर्यन्त आती हैं। जैसे—वैशाख मासमें—जब सूर्य मेष राशिमें रहता है—सूर्योदय कालमें मेष राशिसे दिन प्रारम्भ होता है और सूर्यास्त उससे सातवीं राशि तुलामें होता है अर्थात् जिस समय सूर्य अस्त होता है—पश्चिम क्षितिजमें चला जाता है; उस समय पूर्व क्षितिजमें तुला राशि आ जाती है। जो राशि पूर्व क्षितिजमें जिस समय उपस्थित होती है, उस समय उसे "लग्न" कहते हैं।

२. स्वोदय—उदय काल

ये लग्न (राशियां) जितने काल तक पूर्व क्षितिजमें रहते हैं, उसे "स्वोदय" कहते हैं। इसका यह उदयकाल आपसमें एक समान नहीं होता, भिन्न भिन्न होता है। साथ ही एक ही लग्नका अपना उदय काल (स्वोदय) भी भिन्न भिन्न स्थान पर भिन्न भिन्न होता है। वह अक्षांशके अनुसार बदल जाता है। उसको जाननेकी विधि अन्यत्र सूक्ष्म गणितके प्रसङ्गमें दी जायगी।

इन राशियोंका स्वोदय आपसमें समान होता है:—

(१)	१. मेष १२. मीन	(२)	२. वृष ११. कुम्भ
(३)	३. मिथुन १०. मकर	(४)	४. कर्क ९. धनुः
(५)	५. सिंह ८. वृश्चिक	(६)	६. कन्या ७. तुला

प्राथमिक व्यवहारके लिए इनके स्थूल स्वोदय कालको इस प्रकार समझिएगा—

(१) मेष-मीन = ३ घड़ी = १ घण्टा १२ मिनिट

(२) वृष-कुम्भ = ४ घटी (घड़ी) = १ घण्टा ३६ मि.

(३) मिथुन-मकर = ५ घटी = २ घण्टे

(४) शेष सभी राशियां = ६ घटी = २ घण्टे २४ मि.

३. लग्न निर्णय (लग्न स्पष्ट)

"इस समय कौन सा लग्न है अथवा पूर्व क्षितिजमें कौन सी राशि है" यह जाननेके लिए निम्नलिखित तीन बातें जान लेना आवश्यक है:—

(क) जिस समयका लग्न हम जानना चाहते हैं, उस समय तक सूर्योदय हुए कितना समय बीत चुका है।

(ख) उस दिन सूर्यका उदय किस राशिमें हुआ है।

(ग) वह सूर्य उस राशिके कितने अंश भोग चुका है अर्थात् सूर्योदयसे पूर्व वह राशि व लग्न कितना समय पूर्व क्षितिजमें रहा और सूर्योदयके अनन्तर कितनी देर तक उसे रहना था।

इनका ज्ञान क्रमसे इस प्रकार होता है:—

(क) सूर्यका उदय-अस्त पंचाङ्ग और डायरीमें लिखा रहता है। उनमें देख लीजिएगा। उससे गिनकर आपके समय तक जितने घण्टे मिनिट हों, उनकी घटी पल बना लीजिए। इसका नाम इष्टकाल है।

ज्ञातव्य—अढ़ाई २॥ घटी = एक घण्टा।

अढ़ाई २॥ पल = एक मिनिट।

२४ सैकण्ड = एक पल।

२४ मिनिट = एक घटी।

सौर मास—

यह पहिले बताया गया है कि सूर्य एक राशिमें एक मास रहता है। वह कब किस राशिमें रहता है इसका विवरण इस प्रकार है:—

(१) वैशाखमें सूर्य मेषमें	(४) श्रावणमें सूर्य कर्कमें
(२) ज्येष्ठमें ,, वृषमें	(५) भाद्रपदमें ,, सिंहमें
(३) आषाढ़में ,, मिथुनमें	(६) आश्विनमें ,, कन्यामें

(७) कार्तिकमें सूर्य तुलामें (१०) माघमें सूर्य मकरमें
(८) मार्गशीर्षमें ,, वृश्चिकमें (११) फाल्गुनमें ,, कुम्भमें
(९) पौषमें ,, धनुमें (१२) चैत्रमें ,, मीनमें

ये नाम वास्तवमें चान्द्र मासोंके हैं। सौर मासोंके नाम तो मेषार्क, वृषार्क (मेषका सूर्य, वृषका सूर्य) आदि हैं। पंचाङ्गमें मास-संक्रान्तियोंका संकेत इन्हीं शब्दोंमें मिलता है परन्तु जन साधारणके व्यवहारमें तो वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ आदि नामोंका ही व्यवहार सौर मासोंके लिए भी होता है। इसलिए इन्हीं मासोंके द्वारा सूर्यकी राशिका ज्ञान हो सकता है।

(ग) इसका ठीक पता तो पंचांग (Ephemeris) से ही चलेगा। स्थूल रूपसे जाननेके लिए आप राशियोंको ३० भागोंमें बांट लीजिए। इस प्रकार सब राशियोंका ३० वां भाग स्थूल रूपसे ऐसा होगा :—

१. मेष-मीन = ६ पल या २ मिनिट २४ सैकण्ड
२. वृष-कुम्भ = ८ पल या ३ मिनिट १२ सैकण्ड
३. मिथुन-मकर = १० पल या ४ मिनिट
४. शेष सभी राशियाँ = १२ पल या ४ मिनिट ४८ सैकण्ड

राशियोंके ठीक उदयमानका गणित भू-रेखाओं पर आधारित है। उसका गणित अन्यत्र ग्रन्थोंमें देखिए।

जिस दिनका लग्न हम जानना चाहते हैं, उस दिन संक्रान्तिका जो दिनाङ्क हो, उसकी संख्या से उपरिलिखित ३० वें भागको गुणन कर मिनिट व घण्टे बना लें। उतना समय सूर्योदयसे पूर्व लग्न रहा।

जिस राशिमें सूर्य हो, उसी के ३० वें भाग की संख्या से गुणन करें और वही राशि सूर्यसे पूर्व उतना काल पूर्व क्षितिज में रही। उस कालको उसके पूर्ण मानमें से कम करने पर शेष काल भोग्य होगा, अर्थात् सूर्योदयके अनन्तर उतना काल वह राशि पूर्व क्षितिज में रहेगी।

इसके अनन्तर उस राशिके आगे वाली राशियोंके स्वोदय काल जोड़ते जाइए, जब तक आप दिन भुक्तकाल—इष्टकाल—तक न पहुँच जाएँ। यह अन्तिम राशि लग्न होगी।

उदाहरणः—सं० २००७, श्रावण शुक्ल १५, रविवार भाद्रपद प्रविष्टे ११—तदनुसार २७-८-१९५० को ३।३० बजे दोपहर देहली में लग्न जानना है।

गणित प्रकार यह है :—

(१) सूर्योदय काल ६ बजकर ६ मिनिट

```
        ३ । ३०
        ६ । ६
      ————    घटी. पल
        ९ । २४ = २३।३० इष्ट काल
        घं.  मि.
```

(२) भाद्रपदका दिनाङ्क ११ है।
भाद्रपदमें सूर्य सिंहमें रहता है।

३. (क) सिंह शेष राशियों में है, इसका ३० वां भाग (दैनिक ध्रुवक) हैं १२ पल।

(ख) १२ × ११ = १३२ = २ घटी १२ पल
(सूर्योदयके पूर्व भुक्त)

सिंहका स्वोदय	६ । ०	
सिंहका भुक्त	२ । १२	
सिंह	३ । ४८	सूर्योदयके अनन्तर रहने का काल
कन्या	६ । ० =	९ । ४८
तुला	६ । ० =	१५ । ४८
वृश्चिक	६ । ० =	२१ । ४८
धनुः	६ । ० =	२७ । ४८

हमारा इष्टकाल २३।३० वृश्चिककी समाप्ति २१।४८ से अधिक और धनुःकी समाप्ति २७।४८ से कम है। इस लिए ३ बजकर ३० मिनिट पर हमारे इष्टकाल २३।३० में धनुः लग्न हुआ।

ज्ञातव्य —(१) रात्रिके समय आप सारी गणना सूर्यास्त कालसे करें। सुविधा रहेगी।

(२) सूर्योदयकी राशिसे ७ वीं राशिमें सूर्यास्त होता है।

उदाहरण—उसी दिन ११ प्रविष्टेको रात्रिके ७ बजकर ४५ मिनट पर लग्न देखिए —

(१) सूर्यास्त ७।२ पर है, इसलिए—
घण्टा मिनिट
७ । ४५

दी पा व ली

[ले० श्री पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी साहित्याचार्य, राजपण्डित-काशीनरेश]

समय--कार्तिक (दक्षिणात्योंकी गणनासे आश्विन) कृष्णा अमावस्या।

काल निर्णय—जिस दिन सूर्यास्तके बाद एक घड़ी अधिक तक अमावस्या रहे उस दिन दीपावली मानी जानी चाहिए। दोनो दिन सायंकालके समय हो तो दूसरे दिन और केवल पहले दिन ही सायंकाल के समय अमावस्या हो तो पहले दिन दीपावली मानना उचित है। यदि दोनों ही दिन सायंकालके समय अमावस्या न हो तो कुछ लोगोंके मतसे पहले दिन और कुछ लोगोंके मतसे दूसरे दिन दीपावली मानना चाहिए। इस उत्सवके साथ स्वाति नक्षत्रका योग प्रशस्त माना गया है। दीपावलीके साथ धनत्रयोदशी और नरकचतुर्दशी भी मानी जाती है।

विधि—इस उत्सवमें त्रयोदशीके सायंकालके समय यम दीप दान, चतुर्दशीके प्रातःकाल अभ्यंगस्नान और अमावस्या के दिन सायंकालके समय दीपावली और लक्ष्मी पूजन होते हैं।

काल-विज्ञान

भारतवर्षकी सर्वोत्तम ऋतुएँ दो ही हैं—शरद् और वसन्त। इनमेंसे बसन्तकी शोभा भारतवर्षके जलप्राय और वृक्षावलियोंसे शोभित प्रदेशोंमें ही उल्लसित होती है। किन्तु शरद्ऋतु भारतवर्षके कोने-कोनेमें चाहे वह मरुभूमि हो अथवा जलप्लावित भूभाग हो सर्वत्र ही शोभादायक होती है। सुभिक्षके समय इस ऋतुमें निर्जल मरुस्थल तकमें सबको अन्न तथा निर्मल जलकी प्राप्ति होती है फिर कृषि प्रधान भारतवर्षके लिए इससे श्रेष्ठ कौन ऋतु लक्ष्मी-विलासकी आधार भूमि हो सकती है। अतएव ऐसी ऋतमें राजा और रंक सभी प्रमुदित होकर लक्ष्मीपूजन करें तो यह आध्यामिकताके आदर्श भारत

—०७ । २२

————

०० । २३=०० घटी, ५७ पल, ३० विपल, यह रात्रिशुक्र काल हुआ।

अब देखिए, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, "सूर्योदय जिस लग्न में होता है, सूर्यास्त उससे ७ वें लग्न में होता है।" यहां ११ भादों के दिन सूर्योदय सिंह लग्न में हुआ है, अतः सूर्यास्त कुम्भ लग्न में हुआ।

कुम्भ का स्वोदय ४ घटी है, इसका दैनिक ध्रुवक (तीसवाँ भाग) ८ पल बना। इसलिए ८×११=८८ पल=१ घटी २८ पल।

अब—

कुम्भ का स्वोदय	४।००
कुम्भ का भुक्त	१।२८
कुम्भ का शेष	२।३२

अब स्पष्ट हो गया कि हमारा रात्रि भुक्त काल ५७ पल ३० विपल कुम्भ के शेष २।३२ घट्यादि से कम है और उसी के अन्तर्गत है। अत: उस समय कुम्भ लग्न ही रहा।

विशेषः—(१) यह ० घटी, ५७ पल, ३० विपल व्यवहार में इष्टकाल नहीं कहा जायगा। इष्टकाल बनाने के लिए पहले की तरह सूर्योदय से ही गिनना होगा अथवा इसमें दिनमान (दिन के घड़ी पल) जोड़ना होगा। परन्तु लग्न ज्ञान तो इतने से ही सरलतासे हो जाता है।

(२) जब कभी लग्न समाप्त होने वाला होगा अथवा आरम्भ हुआ ही होगा, तब सम्भवतः लग्न में कुछ अन्तर अथवा भ्रम हो जावे, क्योंकि यह बताई गई विधि स्थूल और अंगुलियों पर ही गिन कर लग्न का बोध करा देती है।

प्रेषक—

शशि भूषण वासिष्ठ "शशी"

(क्रमशः)

—०—

वर्षके लिए सर्वथा समुचित ही है।

मास—इस ऋतुमें आश्विन और कार्तिक दो मास होते हैं। इनमेंसे कार्तिक मास ही लक्ष्मी पूजनके लिए इस कारण उपयुक्त समझा गया कि कृषि द्वारा अन्नकी प्राप्ति पर्यवसित रूपसे कार्तिकमें ही होती है। आश्विनमें यत्र-कुत्र भले ही धान्यका परिपाक हो जाय, सर्वत्र नहीं होता और जब तक सर्वत्र धान्य रूप लक्ष्मी, जो कृषि-प्रधान भारतवर्षका एक मात्र आधार है, न पहुंच जाय तब तक लक्ष्मी पूजन कैसा? अतः लक्ष्मी पूजनके लिए कार्तिक मास अभ्यर्हणीय है।

तिथि—अमावस्याके विषयमें तो किसी विशेष उपपत्ति की वैसे भी आवश्यकता नहीं है। क्योंकि दीपावली के लिए चांदनी वाला दिन उतना उपयोगी नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त एक मुख्य कारण यह भी है कि शरद् ऋतुमें मलेरिया आदि रोगोंकी उत्पत्तिकी सम्भावना अधिकतर रहती है और रोगके कीटाणु सूर्य और चन्द्रके प्रकाशमें या तो पनपते ही कम हैं और यदि पनप भी गए तो उनका प्राचुर्य्य या प्राबल्य प्रकाशमें उतना नहीं हो पाता जितना अन्धकारमें हो सकता है। इसलिए दीपावलीका प्रकाश अमावस्या के अन्धकारमें ही करना उचित है। क्योंकि उस समय पुञ्जीभूत कीटाणु इस प्रकाशके द्वारा अनायास ही विनष्ट किए जा सकते हैं। सायंकालका समय भी इसी-लिए उपयोगी होता है कि उस समय शीत और उष्ण दोनों प्रकृतिके कीटाणु संगृहीत रूपमें प्राप्त हो सकते हैं। अन्यथा रात्रिमें उष्णताप्रधान कीटाणुओंका और दिनमें शीतप्रधान कीटाणुओंका संग्रह प्रकृति विरुद्ध होनेके कारण सहसा एकत्र प्राप्त नहीं हो सकता।

विधि-विज्ञान

भारतवर्षके चार प्रधान राष्ट्रीय त्यौहारोंमें से यह त्यौहार भी एक है। इस त्यौहारमें लक्ष्मी-पूजनकी मुख्यता के कारण यद्यपि वैश्योंकी प्रधानता है, क्योंकि प्राचीन भारतीय समाजमें धनार्जन और धनसे संचयका काम प्रायः वैश्यों के ही अधीन था। तथापि वर्ण विभागको समाजके अंग विभाग के समान सहयोगी विभाग ही माना जा रहा है, अतः किसी भी वर्णका त्यौहार राष्ट्रीय त्यौहार ही माना जाता था, जैसे कि हाथ पैर आदिके द्वारा किया जाने वाला कार्य शारीरिक कार्य ही समझा जाता है और सभी त्योहारोंको सब लोग आज भी राष्ट्रीयरूपमें ही मनाते हैं। वर्णाश्रमोंके कारण भिन्नप्राय भारतीय समाजकी इसी विशेषताने उसमें ऐक्य बनाये रक्खा। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, इस त्यौहारमें यद्यपि लक्ष्मीपूजनकी ही प्रधानता है तथापि चतुर्दशी और अमावस्याका अभ्यङ्ग स्नान दीपावली और दीप-दानादिक ये सब भी अत्यन्त वैज्ञानिक हैं।

यम-दीपदान—त्रयोदशीके दिन चौराहे में या घरके द्वार पर यह दीपक जलाया जाता है। चातुर्मास्यके सञ्चित कीटाणुओंकी निवृत्ति ही मुख्यतया इस दीपदानका हेतु प्रतीत होता है। इसी कारण इसको यम-दीप-दान भी नाम दिया गया है। यम मृत्युका अधिष्ठाता देवता है और रास्ते, चौराहे आदिमें प्रायः मलिनता, कूड़ा आदिका संसर्ग होनेसे उसमें खासकर मार्गकी धूलिमें रोगोंके अनेक कीटाणु विद्यमान रहते हैं। तैलके जलनेसे जो तीव्र गंध पैदा होती है उससे अधिकांश धूलिगत कीटाणुओंका नाश संभव है। इसी कारण निर्णयसिन्धुमें यम-दीप-दानका वर्णन करते हुए स्कन्द पुराणका यह वचन उद्धृत किया गया है कि—

कार्तिकस्यासितपक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।
यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति ॥

अर्थात् कार्तिककी त्रयोदशीको सायंकालके समय घरसे बाहर दीप-दान करना चाहिए, इससे अपमृत्यु नष्ट होती है, अतः यह दीप-दान दीपावलीका आरम्भिक रूप है। वास्तवमें दीप-दान कीटाणु-विनाश-द्वारा अपमृत्यु-विनाशमें सहायक हो। यह उचित ही है।

इस तरह त्रयोदशको बाहरके कीटाणुओंकी शुद्धि करने के बाद चतुर्दशीको अभ्यङ्ग स्नान द्वारा शरीरगत कीटाणुओंकी निवृत्ति की जाती है और तब दीपावलीका मुख्य उत्सव आरम्भ होता है।

दीपावली

भारतवर्षका यह उत्सव सचमुच लक्ष्मीके आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक तीनों स्वरूपोंका उल्लासमय प्राकट्य करने वाला है। लक्ष्मीका आधि-भौतिक रूप धन-सम्पत्ति अर्थात् सोना-चांदी, मणि, रत्न आदि हैं, आध्यात्मिक स्वरूप शोभा है और आधि-दैविक रूप भगवती पद्मा या महालक्ष्मी, जो विष्णुकी प्रिया कहलाती हैं। अतएव

संस्कृत भाषाके कोषोंमें लक्ष्मी और श्री शब्दके उक्त तीनों अर्थ माने गये हैं—

"शोभासंपत्तिपद्मासु लक्ष्मीः श्री रि व कथ्यते।"

भारतीय पद्धतिके अनुसार प्रत्येक आराधना, उपासना या अर्चनामें आधि-भौतिक, आध्यात्मिक और आधि-दैविक इन तीनों रूपोंका सम्मिलित रूपमें ही व्यवहार किया जाता है। तदनुसार इस उत्सवमें भी चांदी, सोने, सिक्के आदिके रूपमें आधि-भौतिक लक्ष्मीका आधि-दैविक लक्ष्मीसे सम्बन्ध स्वीकार करके पूजन किया जाता है। घरोंका सम्मार्जन, उपलेपन और सुधासेचन (कलई आदिसे पोतना) प्रभृति परिष्कार (सजावट) और दीपमाला आदिसे अलंकृत करना इत्यादि कार्य लक्ष्मीके आध्यात्मिक स्वरूप शोभाको आविर्भूत करनेके लिए किये जाते हैं। इस तरह उत्सवमें उक्त त्रिविध लक्ष्मीका समाराधन किया जाता है।

वास्तवमें सभी उत्सवोंमें दीपावलीका उत्सव घर-घर, गांव-गांव और नगर-नगरमें बालकसे लेकर वृद्ध तक, मूर्खसे लेकर पण्डित तक और रंकसे लेकर राजा तक सर्वत्र ही आमोद-प्रमोद और आनन्द-विनोदका उल्लासक सबसे मुख्य त्यौहार है।

इसलिए इसकी आनन्द जनकतामें तो कोई संदेह है ही नहीं, किन्तु इसका केवल इतना ही महत्त्व नहीं है। इसके अतिरिक्त इस उत्सवका वैज्ञानिक महत्त्व भी है। वह यह है कि-चातुर्मास्यमें सभी भूमि-भागके भीगे रहनेके कारण अनेक प्रकारके जीव जन्तु और रोगोंके कीटाणु पर्याप्तसे अधिक रूपमें फैल जाते हैं, उनमेंसे मोटे-मोटे कीट-पतङ्गादि तो शरद् ऋतुके आने पर भगवान् भास्करके अति तीव्र आतपसे सन्तप्त होकर अथवा शरत्कालके अनन्तर तत्काल ही आने वाले हेमन्तके अतिशीत द्वारा नष्ट अथवा लुप्त हो जाते हैं, किन्तु साधारण दृष्टिसे तिरोहित रहने वाले अति सूक्ष्म कीटाणु न तो सूर्यतापसे ही और न शीतसे ही सर्वथा निवृत्त हो सकते हैं। अतः उनको निवृत्त करनेके लिए कच्चे मकानोंको शुद्ध गोबर, खड़ी आदिसे और पक्के मकानोंको चूना, कलई आदिसे वर्ष भरमें एक बार साफकर देना आवश्यक होता है। इतने पर भी जो कीटाणु बच ही रहें—उनको निवृत्त करनेके लिए सारे घरमें तैलके दीपकोंकी तीव्र गंध अत्यन्त उपयोगी होती है। इससे रहे-सहे सभी चातुर्मास्यके कीटाणु विनष्ट हो जाते हैं और निवास स्थान रोगाणुओंसे रहित और स्वास्थ्यरक्षामें सहायक हो जाता है।

इस दृष्टिसे विचार करने पर आजकलकी बिजलीकी रोशनी शोभा जनक भले ही कही जा सके, किन्तु कीटाणु-विनाशकके रूपमें उतनी उत्तम नहीं मानी जा सकती जितनी कि तैल-दीपकोंकी रोशनी मानी जा सकती है। गोबर और चूनेकी कीटाणुनाशकता तो प्रसिद्ध ही है। सो इसका व्यर्थ विस्तार यहाँ करना अनुपयुक्त ही है।

दीपावलीकी कथा

नारदने कहा—अब मैं दीपावलीके महोत्सवका वर्णन करता हूँ। इस उत्सवको दीपमाला, कौमुदी और सुख सुप्तिके नामसे कहा जाता है। इस दिन प्रदोषके समय लक्ष्मीका पूजन करके जो स्त्री या पुरुष भोजन करते हैं उनके नेत्र वर्ष भर निर्मल रहते हैं। कार्तिक मासकी अमावास्याके दिन विष्णु भगवान् क्षीर-समुद्रके तरङ्गों पर सुखसे सोये और लक्ष्मी भी दैत्यके भयसे विमुक्त होकर कमलके उदरमें सुखसे सोई, इसलिए मनुष्योंको सुख-सुप्ति-का उत्सव विधि पूर्वक करना चाहिए।

उस दिन बालक, वृद्ध और रोगियोंके सिवाय दिनमें भोजन नहीं करना चाहिए। सायंकालके समय देवी (लक्ष्मी) का यथाविधि पूजन करके देवालयोंमें शक्तिके अनुसार दीपकों के समूह जलाने चाहिए। राजा उस दिन दीपमालासे युक्त प्रदोषके समय ब्राह्मणोंको भोजन करवाके एवं श्राद्ध करके पितरोंको पिण्डोंसे सन्तुष्ट करे और दीप-दान करे। फिर भूखोंको प्रेष्ट पिण्डों (प्रिय भोजन) को दान करके स्नेही मोही सुखी और चतुर बान्धवोंके साथ राजा दीपावलीका महोत्सव करें। सायंकालके समय राजा नगरमें घोषणा करे कि सारी राज्यकी सेना और प्रजा यथेष्ट चेष्टा करे। प्रजाको भी नगरके सुन्दर प्राङ्गणको कलईसे सफेदी करके वृक्ष और चन्दनकी मालासे युक्त करना चाहिए और प्रत्येक घरको खूब सजाना चाहिए। द्यूत (जुआ) पान Drinking आदि सुखोंसे युक्त हो और स्त्री-पुरुष सब मनोहर बने। नाच और बाजोंके घोषसे सब नगरको गुंजा दे। दीपक जलाये जावें। दीपकोंकी सुन्दर पंक्तिसे अन्धकारका समूह नष्ट हो जाय। तब निर्दोष प्रदोषके समय रात्रिके शुभ आरम्भकी बेलामें स्वस्ति और मंगल करने वाली वेश्याएँ

और विलासिनियोंके समूह सुख देते हुए एक घर से दूसरे घर तक फिरें। फिर अर्ध-रात्रीके समय राजा सुन्दर नगरको अवलोकन करनेके लिए धीरे-धीरे पैदल ही घरोंमें जाय।

इस दिन यथाशक्ति ब्राह्मणोंके घरोंमें, मंत्रियोंके घरोंमें, देवालयोंमें, चौराहोंमें, श्मशानमें, पर्वत पर, गायोंके खिड़कोंमें दीप-दान करना चाहिए। सायंकालके समय पितृ-भक्त लोगोंको श्राद्ध भी करना चाहिए और दीपमाला करनी चाहिए।

तब दीप-दानके पश्चात् सोई हुई लक्ष्मीको जगाना चाहिए। पहले असुर विनाशक विष्णु भगवान्‌को क्षीर सागरमें सोया हुआ जानकर डरी हुई लक्ष्मी ब्राह्मणोंसे अभय प्राप्त करके कमलमें रहने लगीं, उस लक्ष्मीको आज स्त्रियां भगवान्‌के जगनेसे पहले जगाती हैं।

हे ब्राह्मणों ! दीपक हाथमें लिए स्त्रियां देवी कमला को—

त्वं ज्योतिः श्रीरविश्चन्द्रो विद्युत्सौवर्णतारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषाँ ज्योतिर्दीपज्योतिः स्थिते नमः ॥

इस मंत्रसे जगावें और उसके बाद भोजन करें। जैसे पतिव्रता नारी ब्राह्म-कालमें पतिके पहले जगती हैं वैसे ही लक्ष्मी भी अपने पति विष्णुसे बारह दिन पहले जगती हैं। इस कारण सायंकालके समय लक्ष्मीको जगाकर जो भोजन करता है उस पुरुषको वर्ष भर लक्ष्मी नहीं छोड़ती।

दूसरे दिन प्रातः काल गोवर्धनकी पूजा करनी चाहिए और रात्रिमें द्यूत-क्रीड़ा करनी चाहिए, वर्ष भरका फल जाननेके लिए द्यूत-क्रीड़ा अवश्य करनी चाहिए। दीपावली की रात्रिमें जय हो तो वर्ष भर अवश्य ही जय रहती है और पराजय हो तो वर्ष भर अपकर्ष रहता है। जुआ खेलने वालों को—

या लक्ष्मीर्दिवसे पुण्ये दीपावल्याश्च भूतले।
गवां गोष्ठे च कार्तिक्यां सा लक्ष्मीर्वरदा मम ॥

इस मंत्रसे विजयाकी पूजा करनी चाहिए। शिव और पार्वतीने द्यूत-क्रीड़ा की थी। किन्तु पार्वतीजीने लक्ष्मीका पूजन किया था इसलिए शिवजीको जीत लिया।

इस दिन अर्द्ध रात्रिके समय लक्ष्मी भ्रमण करती हैं और घरोंमें निवास करती हैं। इसलिए बड़े उत्सवके साथ घरोंको धूप, दीपोंसे खूब सजाना चाहिए और कलईसे पुतवाना चाहिए तथा पुष्पमालाओंसे सुशोभित करना चाहिए। लक्ष्मीजीको भी दक्षिणा-सहित चन्दन माला भेंट करनी चाहिए।

उस दिन स्त्री-पुरुष नवीन वस्त्र और भूषणोंसे अलंकृत होवें और उस रात्रिको गीत और हास्यरस एवं भोगों से बिताना चाहिए। ब्राह्मण सम्बन्धी और बान्धवोंका नवीन वस्त्रोंसे सत्कार करना चाहिए, और सम्पूर्ण रात्रिमें दीपक रखना चाहिए। अन्धकार उचित नहीं है।

हे तपोधनों ! उस रात्रिमें जो घर अन्धकारसे युक्त होता है वह लक्ष्मीसे छोड़ दिया जाता है और उस घरमें अलक्ष्मी आश्रय लेती हैं। इस तरह जब दीपावली सहित अर्द्ध रात्रि बीत जाय और सब मनुष्य आमोद-प्रमोदमें मग्न हों, उस समय चौथे प्रहरमें स्त्रियोंको सूप और डिम-डिम बजाते हुए प्रसन्न होकर अपने घरके आंगनसे अलक्ष्मी को निकालना चाहिए। भगवान् कृष्णके सोते रहते हुए ही हितैषिणी लक्ष्मी जग जाती हैं, किन्तु निरालम्ब होनेके कारण बहुत समय तक प्रकाशयुक्त भवनमें आश्रय लेती है। इस विषयमें धनकी इच्छा रखने वाले किसी सत्य शर्मा कृष्ण भक्त ब्राह्मणके द्वारा एक गाथा वर्णन की गई है।

शौनक पूछते हैं कि हे नारद ! यह सत्य शर्मा नामक ब्राह्मण कौन था ? गाथा क्या थी ? और प्रकाश सहित भवनमें लक्ष्मी किस तरह सहारा लेती हैं इसका कृपाकर वर्णन करिए।

नारदजीने कहा—शूरसेन देशमें एक सत्य शर्मा नामक ब्राह्मण रहता था। उसका चित्त तृष्णासे व्याकुल था और धनके लिए चेष्टा किया करता था। वह सोचता यदि मेरे धन हो जाय तो मैं सुख पूर्वक धर्म करूं, स्त्री और पुत्रों को अलंकृत करूं और मनोहर घर बनाऊं, इस तरह मनोरथसे युक्त होकर सब देवताओंमें हरिको सर्वश्रेष्ठ जानकर भक्ति पूर्वक उनकी पूजा करने लगा। इस प्रकार विष्णु पूजा करते हुए कभी कुछ धन आ जाता तो वह बीचमें ही नष्ट हो जाता, संचय न हो पाता। इससे वह बहुत विरक्त एवं दुःखी हुआ और धनके लिए बड़े प्रयत्नके साथ उसने किसी ज्ञान-विज्ञानसे युक्त विद्वान्‌से प्रश्न किया—उस विद्वान्‌ने कहा—कि तुमको धनकी कामना है, इसलिए अब तुम शिवजीकी आराधना करो, विष्णु तो कामीकी कामना

पूरी नहीं करते, जैसे कि रोगीको कुपथ्य नहीं दिया जाता। जो लोग निष्काम हैं, और भजनानन्दसे ही सुखी हैं तथा सब जगह जिनको वैराग्य हो गया है उनको ही विष्णुकी पूजा करनी चाहिए। हे ब्राह्मण! तुम वैसे नहीं हो। यह सुनकर वह ब्राह्मण यमुनाके तट पर स्थित शिव लिंगकी संयम सहित प्रतिदिन पूजा करने लगा। वर्ष भरमें भगवान् शिव प्रसन्न हुए और ब्राह्मणका रूप धारण करके उस सत्य शर्माको हँसते हुए लक्ष्मी प्राप्तिका उपाय बतलाया। उन्होंने कहा—तुम जाओ और राजासे यह छोटा-सा वचन मांगो कि दीपावलीकी रात्रिके आरम्भमें मेरे सिवाय कोई भी नगर-वासी अपने-अपने घरमें दीपक न जलावे। ब्राह्मणने इस बातको स्वीकार करके राजासे यही वचन कहा। राजाने उस वचनको अत्यन्त तुच्छ जानकर हँसते हुए कहा क्या इतनी-सी छोटी चीज मांगी। राजाने उसको यह वर दे दिया और ब्राह्मण हर्ष-युक्त अपने घर चला गया।

नारदजी ने कहा—जब वह रात्रि आई तब उस दिन सत्यशर्माने अपने याचना किए हुए वचनकी राजाको फिर याद दिलाई। उसी समय राजाने अपने पुरमें घोषणा करवा दी कि—आज सायंकालके समय किसीको दीपक नहीं जलाने चाहिए। इसके बाद उस सत्यशर्माने अपने घरको सुशोभित किया, रात्रिमें दीपमाला सजाई, और हर्ष, गीत आदि कौतुक किया।

लक्ष्मीको कहीं आश्रय नहीं मिला, वह अन्धकारसे विरक्त होकर ज्योतिसे प्रकाशमान उसके अलंकृत भवनमें प्रविष्ट हो गई। हाथमें नीला कमल लिए हुए, कान्तिसे मनको प्रसन्न करने वाली, मधुर हास्य युक्त मनुष्यकी स्त्रीके समान आकृति वाली लक्ष्मी उसके घरमें प्रवेश करने लगी। उसको घरमें प्रवेश करती देख सत्यशर्माने मना किया। उसने कहा—हे भद्रे! तुम्हारा पति बड़ा कठोर है। किसी पर शीघ्र प्रसन्न नहीं होता और तुम भी संसारमें चपल हो। तुम दोनों ही स्त्री पुरुष दोष युक्त हो। तुमको यहाँ नहीं रहना चाहिए। जाओ, जो इस बातको नहीं जानते उन लोगोंको धोखा दो।

लक्ष्मीने कहा—विष्णु सोये हुए हैं, तुम्हारा घर ही अच्छा आश्रम है और कोई नहीं। मैं तुम्हारे घरमें निश्चल हो जाऊँगी। मुझको तुम घरमें प्रविष्ट होने दो। सत्यशर्माने कहा—यदि तीन पीढ़ी तक तुम मेरे यहाँ रहो तो शपथ करो और मुझको मदान्ध मत करना। यदि ये शर्तें स्वीकार हों तो मेरे घरमें रहो, अन्यथा चली जाओ।

नारद जी कहते है—लक्ष्मी ने 'तथास्तु' कहकर उसके घरमें प्रवेश किया। उसके बाद उसके घरमें संपत्तियाँ बढ़ने लगीं और दारिद्रय दूर हो गया। उस दिनसे उस ब्राह्मण ने यज्ञ दान, व्रतके कर्म किए और विष्णुकी पूजा की तथा वृद्धावस्थामें वैराग्य प्राप्त किया।

इस कारण इस रात्रिमें हे ब्राह्मणो! घरमें अखण्ड दीपक जलाकर लक्ष्मीकी कामना वाले गृहस्थियोंको अलं-कृत होकर रहना चाहिए। उस ब्राह्मणकी यह निम्न गाथा मैं तुम्हें वर्णन करता हूँ।

सत्य शर्मा ने कहा—

सर्वाश्रमेषु गार्हस्थ्यं धन्यं च सबलं तथा।
अत्र स्थित्वाहि कामादीन् दुर्जयान् जयते पुमान्
अन्येषामुपकाराय त्रयाणामेष एव हि।
स गृहस्थो धनमृते किं करोत्युचितां क्रियाम्॥
श्राद्धं चातिथिपूजां च यज्ञदान व्रतादिकम्।
विप्रेण धनहीनेन कथं साध्यं भवेदिह॥
धनं धर्ममबाधित्वा समुत्पाद्यं पुनर्नरैः।
धर्ममेवाग्रतः साध्यं नान्यथा तद्व्ययो गुणः॥
ऋणत्रपाया करणे वैराग्ये च दृढ़े सति।
धनाशां च गृहाशां च त्यक्त्वैकान्तं समाश्रयेत्॥
यावद् गृहस्थस्तावद्धै कर्म कुर्वन् हरिं स्मरत्।
धनमीहेत कृष्णस्य पूजनैश्च व्ययं नयेत्॥
नमो लक्ष्म्यै महादेव्यै जगन्मात्रे हरिप्रिये।
त्वां बिना शून्यतां याति जगद्यज्ञैर्विवर्जितम्॥

अर्थात् सब आश्रमोंमें गृहस्थाश्रम ही धन्य है और बलवान् है, क्योंकि मनुष्य इस आश्रममें रहकर दुर्जय काम आदिको जीतता है। अन्य तीन आश्रमोंके उपकार के लिए भी यही आश्रम है।

वह गृहस्थ बिना धनके क्या उचित क्रिया कर सकता है। धनहीन ब्राह्मणके द्वारा श्राद्ध, अतिथिसत्कार, यज्ञ, दान, जप, आदिक किस तरह सिद्ध किये जा सकते हैं? मनुष्योंको धर्म-बाधित न करके धनोपार्जन करना चाहिए। धनोपार्जन करनेके बादमें भी धर्म ही सिद्ध करना चाहिए।

पाकिस्तानके भविष्यकी एक झलक

[ले०—श्री पं० मदनगोपालजी शर्मा ज्योतिषाचार्य]

पाकिस्तानका जन्म वृश्चिक लग्न और वृश्चिकके नवांशमें हुआ था, लग्नस्थिर है और वर्गोत्तमी भी है। लग्नेश भौम षष्ठस्थ होकर अपने घरका है, भौमका दृष्टि सम्बन्ध लग्न पर है, नवमांशमें मंगल मित्रराशिका होकर सबल बन गया "बृहत्पराशर होरा" के अनुसार-षष्टेश मंगल जो कि लग्नेश भी है और वह लग्नको देखता है इसका तात्पर्य यह हो जाता है कि आधारको (नींव को) सबल बनाये रखता है। उसका यह इंगित (इशारा) आज भी हम देख रहे हैं अन्यथा ग्रहोंकी जैसी परिस्थिति इसके जन्म नवमांशमें पाई जाती है उसके द्वारा तो यह अब तक विनष्ट हुआ रहता। कारण--पाकिस्तानका भाग्य स्वामी चन्द्रमा यद्यपि (चन्द्र पूर्ण है) नीच राशिमें गुरु और केतु के संग सूर्य राहुकी प्रतिस्पर्द्धामें है परस्पर सक्षम योग करते हैं।

यद्यपि सूर्यचन्द्रका परस्पर दृष्टि सम्बन्ध "राज्येश भाग्येशका सम्बन्ध" कुछ काल तक इसके अस्तित्वको बनाये रक्खेगा, परन्तु इस कुण्डलीके नवांश चक्रमें राज्यकी अन्तर्गत व्यवस्थाके लिये खोखलापन और उपहास भरा पड़ा है।

नवांश कुण्डलीमें—राज्येश सूर्य द्वितीयेश गुरुके साथ अष्टमस्थानमें और अष्टमेश बुध द्वितीयमें हैं, उपरोक्त ग्रह विवादास्पद परिस्थितिमें स्थित हैं, गुरु बुध परस्पर शत्रु भी हैं अष्टमस्थ सूर्य गुरु द्वितीयस्थ बुधसे सक्षम होने के कारण विरोधी हैं, इधर भाग्येश चन्द्र भी नीचमें व्ययेश शुक्रके साथ बैठा है।

सम्प्रति पाकिस्तानको बुधमहादशामें चन्द्रान्तर चल रहा है, कुण्डलीमें बुध अष्टमेश बनकर अष्टममें मृत्युस्थानमें अपने घरका है तो भी वह नवमांशमें विरोधी है, बुध चन्द्रमें परस्पर "षडष्टक" योग है एतदर्थ प्राप्त बुध महादशा में चन्द्रान्तरसे ही पाकिस्तान शासन सूत्र डांवाडोल चल रहा है। संवत् २०१२ के पश्चात् पाकिस्तानका भविष्य अन्धकारसे परिपूर्ण होगा। वृश्चिकके राहु शनिमें (जो गोचरसे इसके लग्नमें रहेंगे) पाकिस्तानका अस्तित्व विषम-परिस्थितिमें (खतरे में) पड़े बिना नहीं रहेगा। तुला राशि के शनि और धनुराशिके राहु मंगलके गोचर भ्रमणकालमें गतवर्ष पूर्वी पाकिस्तानकी क्या दशा हुई वह किसीसे छिपी हुई नहीं, उस समय बाध्य होकर गवर्नरी राज्य स्थापित करना पड़ा था।

ग्रह योगोंके दृष्टिकोणसे परस्परकी फूट स्वार्थान्धता और वैमनस्य ही इसके ध्वस्त होनेका कारण बनेगी, अन्य शक्तियोंके बल पर ही वह भारतके साथ अपने कटु सम्बन्ध बढ़ायेगा।

हाँ इस समय इसके लग्नसे गोचर ग्रहोंकी कुछ परिस्थिति अनुकूलसी चल रही है और उधर लग्नेश मंगलके सबल रहते यह भौमान्तर तक प्रारंभिक चालू परिस्थितिमें निभ जा सकता है, क्योंकि पाकिस्तानके स्थायित्व प्रदान

दूसरी प्रकारसे धनका व्यय गुण नहीं है। जब तीनों ऋण (देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण) निवृत्त हो जायं (अर्थात् यज्ञ, अध्ययन, और पुत्रोत्पादन हो चुके) और वैराग्य दृढ़ हो जाय तब धनकी आशा और और घर की आशाको छोड़कर मनुष्यको एकान्तका आश्रय ले लेना चाहिए, किन्तु जब तक गृहस्थ है तब तक कर्म करता रहे। हरिका स्मरण करता हुआ धनकी चेष्टा करे और कृष्णके पूजन में व्यय करे।

महादेवी जगन्माया लक्ष्मीको नमस्कार। हे हरि प्रिये! तुम्हारे बिना जगत् यज्ञोंसे रहित होकर शून्य हो जाता है।

नारद जी कहते हैं—इस तरह कह कर वह ब्राह्मण श्रेष्ठ घर छोड़कर विरक्त बुद्धिसे सन्यास लेकर मथुरा पुरीमें गया और शुद्ध चित्तसे समाधि द्वारा भगवान् हरिका आराधन करके हरिशरणको प्राप्त हुआ और उसके वंशके पुरुष धनवान् हुए।

(व्रतार्कमें पद्मपुराणके उत्तरखण्डसे)

—

करनेमें भौम सूत्तम बना हुआ है। परन्तु भाग्येश सबल चन्द्र नीच राशिमें गुरु संग केतु के सहयोगमें समाधान प्रद नहीं रह सका। यह इसको परमुखापेक्षी ही बनाये रक्खेगा।

दृश्यगणितके अनुसार दिनाङ्क १२ नवम्बर सन् १९५५ से गोचर शनि वृश्चिक राशिमें इसके जन्म लग्न पर आ रहे हैं और राहु लग्न पर पहुँच चुके हैं, उधर बुधमें भौमान्तर प्रारम्भ हो जायगा। फल यह होगा कि शासन उग्र बनता चला जायगा, जिसके कारण आन्तरिक विद्रोही भावना चिन्ताका विषय बने बिना नहीं रहेगी। वैसे तो अशान्तिका सूत्रपात प्रारम्भ हो चुका है, परन्तु व्यापक रूप से नवम्बरके पश्चात् ही जन्म लेता दिखलाई पड़ेगा। वहां की जनतामें व्यापक क्षोभ असन्तोष और विरोधी भावनाओं के बढ़ जानेके कारण प्रतिकूल वातावरण बनता हुआ दृष्टिगोचर होने लगे तो असम्भव नहीं। दिनाङ्क ३ जनवरी ५६ से १८ फरवरी ५६ तक शनि राहु मंगलकी एकत्रित युति कालमें पाकिस्तानका शासन सूत्र पुनः डगमगा जायगा।

तदनन्तर फर्वरी सन् १९५७ से पाकिस्तानके लिये ग्रहयोग श्रेयस्कर नहीं। सम्भव है कि पूर्वी पाकिस्तान इसके अधिकारसे निकल जाय—राहुअन्तरके प्रारम्भकालमें गोचर भ्रमणसे इसके जन्म लग्नसे व्ययमें राहु और द्वितीय में शनिके होनेसे यह क्रूर कर्त्तरिमें चला जाता है अतः आने वाले सन् १९५७ से ६१ तक पाकिस्तानका यदि नाम मात्र ही अस्तित्व अवशेष रह जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। अपने अनुभवके आधार पर ज्योतिःशास्त्रके द्वारा पाकिस्तानके भविष्यकी रूपरेखा पाठकोंके समक्ष रक्खी है। आगामी समय इसके लिये इतना कठिन आ रहा है कि यह अपनेको भी पूर्णतः नहीं सम्हाल सकेगा। सन् १९५६ में पाकिस्तानमें अप्रत्याशित घटनाओंके कारण महत्वपूर्ण परिवर्तन होने सम्भव हैं। इस वर्षमें भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, कई एक कारणोंको लेकर वहाँ की राजनीतिमें उलट फेर होगा। वहांकी जनतामें सैनिक क्रिया कलापोंका समन्वय होकर जनता युद्ध प्रेमकी ओर अधिक आकर्षित होगी, अतः ५६-५७ ई० पाकिस्तानके लिये सतर्क दृष्टि रखनेकी अपेक्षा करता है, अतएव भारतको भी सचेत रहना चाहिये।

ज्योतिष-शास्त्रके आधार पर हम यही कह सकते हैं कि इसके अस्तित्वको मिटानेमें यह स्वयं ही अथवा सजातीय यवनादि राष्ट्र कारण बनेंगे।

एक झलक दशाकी ओर

[ले०—श्री पं० चिमनलालजी शर्मा ज्योतिषी गणितमार्तण्ड]

'श्रीस्वास्थ्याध्याय' के वसन्तांकमें इस शीर्षक पर श्री शारदाशरण शास्त्रीजीका लेख मेरे लेखके उत्तरमें छपा है और श्री हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्यके मत पर मेरी आलोचना थी। पं० शारदाचरणजीने जो यह लिखा है कि आलोचना करते करते कपिलजीके सिद्धान्तकी पुष्टि कर दी और बाद में हेय कह दिया। शारदाचरणजीने मेरे लेखको आद्योपान्त नहीं पढ़ा। यदि पढ़ा होता तो पुष्टि शब्द न लिखते। मैंने तो कपिलजीके नूतन मतका खण्डन किया है, जो कि अक्षांश २६।४० पर मानते हैं। विंशोत्तरीका भुक्त भोग्य ठीक है। जो प्रथा चल रही है इसके आगे २७-२८-२९-३०-३१ आदि अक्षांशों पर जो बखा उत्पन्न हो उसमें जो उन्होंने भेद दशाके भुक्त भोग्य वर्षों में किया है वह मत हेय है ऐसा लिखा है।

कृत्तिका नक्षत्रके विषयमें 'श्रीस्वाध्याय' हेमन्तांक सं० २०११ में वेद, वेदांग, स्मृति पुराणादिके प्रमाणोंसे और युक्तिसे भी सिद्ध कर चुका हूं, इस पर यहां विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु फिर भी श्री वराहमिहिराचार्यजीका और मार्कण्डेयपुराणके कूर्म चक्रानुसार लिखता हूं कि कृत्तिका नक्षत्र ही वहां प्रथम माना है।

दुर्जन तोष न्यायसे यदि कपिलजीका मत कुछ समयके लिए ठीक भी मान लिया जाय तब पाराशरीमें लिखी अन्य दशायें षोडशोत्तरी अक्षांश ६६।२० पर, अष्टो-

त्तरी ६६।४० अथवा २६।४० पर, पंचोत्तरी अक्षांश २१३।२० पर, शताब्दिका ३४६।४० पर, चतुराशीति अक्षांश १८६।४० पर, योगिनी अक्षांश ६६।४० पर, यह दशायें क्रमसे पुष्य, आर्द्रा या कृत्तिका, अनुराधा, रेवती, स्वाति, आर्द्रासे प्रारम्भ मानी है। क्या आप बतायेंगे कि संसार में २१३ १८६, ३४६ अक्षांश हैं? यदि नहीं तो जैसे इन दशाओंका क्रम है, भुक्त भोग्य लानेका वैसे ही विंशोत्तरीका क्रम मानना उचित है।

अभिजित् नक्षत्रकी संख्या पृथक् है जो कि २८ नक्षत्रों में आता है, इसकी पुष्टि वेदादि वचनोंसे प्रथम लेखमें की जा चुकी है। फिर भी सायणभाष्यके शब्द लिखता हूं।

"अभिजित् अभिनयसाधनं ब्रह्मदेवत्यं नक्षत्रं मे मम पुण्यमेव रासताम् प्रयच्छतु।"

ब्रह्मा है स्वामी जिसका अभिजित् नक्षत्र मेरे लिए पुण्य देवे। उत्तराषाढ़ा और श्रवण नक्षत्रके स्वामी भी अन्य हैं। इन तीनोंकी तारा संख्या भी पृथक् पृथक् है इसको विशेष देखना हो तो नारदसंहिता, मुहूर्तचिन्तामणि आदि देखें। भागवतपुराणमें भी स्पष्ट लिखा है—

मासानां मार्गशीर्षोऽहं नक्षत्राणां तथाऽभिजित्।"

मेरे भेद शब्द लिखने पर भी शास्त्रीजी आलोचना करते हुए लिखते हैं कि भेद और अन्तर शब्दमें बहुत फर्क है। शारदाचरणजी! आप कोशोंका अवलोकन करें तो आपके मनमें जो फर्क आता है वह दूर हो जायेगा। "शब्द कोश" भार्गव प्रेस काशीके पृष्ठ २६ = ४०१ को देखें। हीराहिन्दी कोश पृष्ठ १६ अन्तर [अव्यय] मध्य, बीच, प्रान्त, फर्क, भेद, भिन्न, यह सब पर्याय नाम है इससे भी विशेष देखना हो तो अमरकोषादि कोष देखें।

चर संस्कार करनेके बाद ही तो शुद्ध चन्द्र स्पष्ट होता है, उसी से ही तो दशाके भुक्त भोग्य वर्षादि शुद्ध आते हैं। चर संस्कार तब किया जाता है कि जिस देशका आपके पास पंचांग है, उससे भिन्न देशमें तिथ्यादि ज्ञानके वास्ते अक्षांशों और सूर्यकान्त्यादिसे चर ज्ञान होने पर अभीष्ट नगरके तिथ्यादि मान शुद्ध होते हैं, उसीसे भयात् भभोग बनाकर चन्द्र स्पष्ट होता है, और फिर दशा वर्षोंका भुक्त भोग्य प्राप्त किया जाता है। इस चरसे आपके सिद्धान्तकी पुष्टि नहीं होती, इससे तो मेरा मत ही पुष्ट होता है।

अन्तमें विशेष न लिखता हुआ इतना ही लिखता हूं कि हंसराजजी कपिलके मतका समर्थन करते हुए श्री शारदाचरण शास्त्रीजीने जो भाव दर्शाये हैं, दशाके भुक्त भोग्य वर्षों विषयक वह हेय हैं। क्योंकि अक्षांशोंका सम्बन्ध चन्द्रस्पष्ट और नक्षत्रमानादि प्राप्तिके वास्ते है, जबकि जन्म देशीय चन्द्रस्पष्ट शुद्ध हो गया तब उसीके अनुसार दशाके भुक्तभोग्य वर्ष उस नक्षत्रके अनुसार ठीक हो जाते हैं, यही प्रथा प्राचीनकालसे चली आ रही है जोकि शास्त्रसम्मत है। जैसे पंचशालाका, सप्तशलाका, सर्वतोभद्रादि वेध है, इसमें प्रत्येक वेधको अपने अपने कार्यमें ग्रहण किया जाता है। ठीक इसी प्रकार यहां पर विंशोत्तरी दशा विषयक नक्षत्र देखना है। अन्य बातोंसे प्रयोजन विशेष नहीं है। आपका मत निर्मूल है एतदर्थ हेय है।

—

सदुपदेश

जो लोग यह कहते हैं कि 'हमारे मतमें आनेसे ही मुक्ति मिलेगी, हमारे भगवान् ही मोक्ष देते हैं, दूसरोंके नहीं, हमारे यहां आकर ही सब पापोंकी क्षमा होती है, हमारा गुरु ही बड़ा है, बाकी कुछ नहीं।' ऐसे लोगोंसे मानव-समाजको सावधान रहना चाहिए। मानव-समाजमें धर्मके नाम पर ईश्वरद्रोह, जातिद्रोह तथा व्यवहारद्रोह फैलाने वालोंसे सावधान रहना चाहिए। जबसे मत मजहबोंके आधार पर राजनैतिक स्वार्थ साधनका प्रचार चालू हुआ है, तबसे मानव-जगत्में अविश्वास और विरोध बढ़ा है। जो पाखण्डी गुरु अपने चेलोंको यह सिखलाते हैं कि 'दूसरोंकी बात मत सुने, दूसरोंको कुछ मत दो, दूसरेके भगवान्से नरक जाओगे' समझ लो कि वह एक पन्थका ढोंगी दलाल है, मानव समाजको हानि पहुंचाने वाला है। मुक्ति या मोक्षका सर्वप्रथम द्वार साधन पूर्वक धर्मपालन है। इसके अनन्तर जीव, माया और ईश्वरका ज्ञान (आत्मा-अनात्माका वस्तुविवेक) लोक-वैराग्य और प्रभु-प्रेम (भगवान् के प्रति ऐकान्तिक भक्ति) ये ही सार वस्तु हैं।

——

भारतीय वास्तु विद्या और उसका विकास

[ले०—श्री पं० राजेन्द्र झा 'विमल' शास्त्री ज्योतिषाचार्य साहित्याचार्य बी. ए.]

वास्तु—निवास स्थान, हमारे जीवनकी समग्र सुखोपलब्धियोंमें महत्त्वपूर्ण है। संसारमें जो कुछ श्रेय, प्रेय और ध्येय पदार्थ हैं, उन सबके लिए प्रवृत्त होनेकी प्रेरणा और शक्ति हमें 'गृहाश्रम'से ही प्राप्त होती है। आचार्योंने—

स्त्रीपुत्रादिक भोग-सौख्यजननं धर्मार्थकाम प्रदं
जन्तूनामयनं सुखास्पदमिदं शीताम्बुघर्मापहम्।
वापी देव-गृहादि पुण्यमखिलं गेहात्समुत्पद्यते
गेहं पूर्वमुशन्ति तेन विबुधाः श्रीविश्वकर्मादयः॥
—वा० रा० व०

यह सर्वथा मनोवैज्ञानिक तथ्य कहा है। ऐसी परमोपयोगी-सुख-सामग्रीका नवनिर्माण देश-काल-पात्रानुसार, सुखद सुन्दर और शान्तिप्रदरूपमें करनेकी जिन विधियोंका भारतीय ज्योतिर्दृष्टि सम्पन्न विद्वानोंने अन्वेषण और अनुसन्धान किया उन्हींके समुदायका नाम 'वास्तुविद्या' है।

वास्तु-विद्याकी उद्‌भावनाओं पर ध्यान देनेसे पता चलता है कि प्राचीनकालमें, इस विद्याका मौलिक अर्थ था भारतीय भवन-निर्माण-विज्ञान। पर, काल-गतिसे उसमें शनैः शनैः चित्रकला, स्थापत्यकला आदि तत्व भी सम्मिलित होते गये। इतना ही नहीं, बागवानी, बावली, पोखरे, कुँआ, पुल आदि बनाना, राज सिंहासन तैयार करना, अश्व लक्षण, गज लक्षण इत्यादि तक वास्तु विद्याके अङ्ग समझे जाने लगे। किन्तु वैदिक ऋचाओंमें वास्तु सम्बन्धी जो उल्लेख मिलता है, वह केवल निर्माण-विज्ञान मूलक नियमों से ही सम्बद्ध है। इस विषयको लेकर, भारतमें अनेक ग्रन्थोंकी रचना हुई है। सर्वप्रथम ये ग्रन्थ दक्षिण भारतमें लिखे गये और उनके आधार पर उस समयके राज-मिस्त्री गण काम करने लगे। उत्तरभारतमें विशेषकर धर्मशास्त्रों और पुराणोंमें वास्तु विद्याका उल्लेख मिलता है। इन शास्त्रोंमें धार्मिक दृष्टिकोण से गृह-विधि सम्पादित करनेकी विवेचना की गई है। तदनुसार अब भी यहाँ गृहारम्भ और गृहप्रवेशके अवसर पर धर्म-शास्त्रानुमोदित विधि की जाती है। धार्मिक आचार्योंने बड़ी दूरदर्शितासे भवनके बनाने या बनवा देनेको एक महान् पुण्य कार्य कहा है:—

कोटिघ्नं तृणजे पुण्यं मृण्मये दश-संगुणम्।
ऐष्टिके शतकोटिघ्नं शैलेऽनन्तं फलं भवेत्॥

ग्रन्थोंके रचनाकाल

वास्तु विद्या पर लिखे गए अनेक ग्रन्थोंका हाल ही में उत्तरभारतमें विद्वानों द्वारा अनुसन्धान हुआ है। जिससे पता चलता है कि आरम्भसे लेकर १९ वीं शताब्दी तक भारतमें वास्तु-विद्याका किस प्रकार विकास हुआ। दक्षिण भारतमें इस विषयमें जो ग्रन्थ लिखे गये, उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है "मानसार"। इसी तरह उत्तर भारतमें "समराङ्गण सूत्र" है जिसकी रचना ११वीं शताब्दीमें मालवाके राजा भोज द्वारा की गई थी। इस ग्रन्थमें हमें भारतीय यन्त्र-विज्ञानका परिचय मिलता है साथ ही वायुयान सम्बन्धमें भी कुछ महत्वपूर्ण चर्चा है। 'मानसार' ग्रन्थकी रचनाका ठीक समय ज्ञात नहीं होता। इलाहाबादके डा० पी० के० आचार्यने इसका सम्पादन किया है। उनके मतानुसार यह ग्रन्थ 'गुप्तकाल'में लिखा गया। किन्तु, डा० तारापद भट्टाचार्य नामक विद्वानने नई खोजसे प्रमाणित किया है कि जिस रूपमें यह ग्रन्थ आज उपलब्ध है, उससे इसका जन्मकाल १०वीं-११वीं शताब्दी ठहरता है। 'मानसार'के लेखकका नाम पहले लुप्त था, पर अब डा० भट्टाचार्यने प्रकाशित किया है कि इसके मूल लेखक थे "अगस्त्य"—जिनकी चर्चा ऋग्वेदके ग्रन्थोंमें आई है। प्रसिद्धि रही है कि अगस्त्य वास्तु विद्याके प्रवर्तकोंमें से थे।

भ्रान्त धारणाका निराकरण

अनुसन्धानके आरम्भमें कुछ विद्वानोंकी धारणा थी कि भारतीय वास्तु विद्या पर उस समय ग्रन्थ लिखे गए, जब कि भारतीय-निर्माण कला, स्थापत्यकला और चित्र-

आदि अन्य कलाओंका विकास रुक गया था—ये ह्रासकी ओर हो गई थीं। किन्तु अब वैदिककालसे ही इस विज्ञानका इतिहास लिखकर डा० भट्टाचार्य जैसे विशेषज्ञोंने यह प्रमाणित कर दिया है कि वास्तवमें इस विज्ञानका—वास्तुविद्याका—विकास बुद्ध-कालसे पहले ही हुआ। इस मतकी पुष्टि बौद्ध-ग्रन्थोंसे भी हो जाती है। जिनमें कहा गया है कि वास्तु विद्याके १८ प्रवर्तकोंने मूलरूपसे इस विषय पर ग्रन्थ रचे। खेद है कि उन प्रवर्तकोंके ग्रन्थ अब हमें नहीं मिलते हैं। अस्तु इस विद्याका महत्त्व इनता बड़ा था कि प्राचीन अर्थ-शास्त्रोंमें भी इस विषयके पूर्ण उल्लेख मिलते हैं। छठी शताब्दीसे पहले वास्तु विषयक बहुतसे ग्रन्थ लिखे गए। जिनके नामोंकी जानकारी पीछे लिखे गए ग्रन्थोंके मध्य उद्धरणोंसे होती है।

शैली-भेद

इस युगसे पहले भी वास्तु विद्याके शैलीगत दो भेद थे—एक दक्षिण भारतीय शैली और दूसरा उत्तर भारतीय शैली। फिर भी दोनों ही में भारतीय-निर्माणकलाके विशिष्ट नियम आधार रूपसे विद्यमान थे। इन नियमोंको भली-भांति हृदयंगम करनेसे ही भारतकी निर्माणकला, स्थापत्य कला और चित्रकलाकी सुन्दरता एवं महत्ता समझ में आ सकती है। यह विद्या भी ज्योतिषका ही एक प्रमुख अंग है; पर इसका प्रचार ज्योतिषके अन्य—सामुद्रिक आदि—अंगोंकी भांति नागरिक स्तर पर (आधुनिक समयमें) नहीं हो पाया है! देहातमें गृहस्थजन अब भी ज्योतिषियोंसे परामर्श लेकर गृहनिर्माण करते हैं—यह दूसरी बात है। उक्त उपेक्षाका कारण यहांके प्रधानतः वास्तु सम्बन्धी ग्रन्थोंमें ऐसे पारिभाषिक (टेकनिकल) शब्द हैं जिनकी व्याख्या अथ च मूल भावनाओंकी स्पष्टता डाक्टर पी० के० आचार्यकृत हिन्दू निर्माणकला सम्बन्धी शब्द कोषके होते हुए भी ठीकसे नहीं की गई है। हां, मार्ग प्रशस्त हो चला है, कुछ और अनुसन्धान करनेकी आवश्यकता है।

तत्व और नियम

भारतीय वास्तु निर्माणके कला-तत्व और उसके नियम देशके भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय गणित भारतीय दर्शन और कलात्मक एवं रहस्यवादी विचारोंसे इतने घुले-मिले हैं कि उन्हें उनसे अलग नहीं किया जा सकता। निर्माण चाहे किसी प्रकारका हो; परन्तु वह होता है किसी 'मनोभाव' का प्रतीक। मनोभाव भले ही सम्प्रदाय, रहस्यवादी विचार या गणितसे अनुप्राणित हो। किसी भी भवन-निर्माणके लिए स्थान, नींव डालना, ऊपरका अंश बनाना, सजावट करना, दरवाजे और खिड़कियां खोलना, मन्दिरोंके शिखर बनाना, अलिन्द और प्राङ्गणकी स्थिति एवं वास्तु क्षेत्र के भीतर दिग्विभागके अनुसार पाकगृह, स्नानगृह, अध्ययनगृह आदिका निश्चय करना—इत्यादिके नियम, वास्तु विद्याके ग्रन्थोंमें वर्णित हैं और उन्हींके अनुकूल निर्माण करनेका निर्देश किया गया है। यद्यपि ये नियम—विधान बड़े कठिन जान पड़ते हैं, तथापि इनसे भारतीय निर्माण कलामें गतिरोध हुआ हो—ऐसी बात नहीं। बल्कि उसमें सर्वदा ताजगी और गतिशीलता बनी रही। इन नियमोंसे बौद्ध-कालीन निर्माण-कला भी प्रभावित हुई—ऐसा भी कहा गया है।

वास्तु विद्याके ग्रन्थ

वास्तु विद्या पर लिखे गए मूल ग्रन्थ तो अधिकांशमें अब नहीं मिलते हैं। बहुत प्रयास करने पर कुछ संस्कृत और मलयालम भाषाके ग्रन्थोंका पता चला है। सम्प्रति वास्तु विषयक ये ग्रन्थ उपलब्ध हैं :—शिल्परत्नम्, मानसार, समराङ्गना-सूत्र; वास्तुराजवल्लभ; मायामतम्; ईशान शिवगुरुदेव पद्धति; काश्यपशिल्परत्नम्; वैखानसागम; अत्रिसंहिता; विश्वकर्मा शिल्प और हयशीर्ष पञ्चरत्नम्। बृहत्संहिता भी एक प्राचीन ग्रन्थ है जिसमें वास्तु विचार आंशिक रूपमें आया है। इसके अतिरिक्त कुछ आधुनिक संग्रह ग्रन्थ भी प्रचलित हुए हैं। जहां-तहां कुछ हस्तलिखित पुस्तकें भी मिली हैं, जिन्हें प्रकाशित करनेकी आवश्यकता है।

उपसंहार

इस प्रकार हम देखते हैं कि वास्तु-विद्या भारतके महत्वपूर्ण भौतिक शास्त्रोंमेंसे रही है और प्राचीन युगमें तो इसकी बड़ी ही श्री-वृद्धि हुई थी। इसके क्रमिक विकासका ऐतिहासिक अनुसन्धान करना अध्ययनका विषय है। यदि इसका आधुनिक भवन-निर्माण-कलाके साथ यथासंभव सामञ्जस्य भी स्थापित किया जाय तो सोनेमें सुगन्धि। निसन्देह इस ओर प्रतिभाशाली और परिश्रमी विद्वानोंकी आवश्यकता होगी।

वायदा-व्यापारका मौलिक विवेचन

[ले०—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

भविष्यकी कल्पनाके सूत्रमें बन्धकर मनुष्य क्षण-भरमें ही शिखरारूढ़ हो जानेके हेतु वायदा-व्यापारमें प्रवेश होता है, किन्तु अनायास ही निष्फलताकी भावी आशंका कर उसका अस्थिर हृदय तुरन्त ही सिहर उठता है। उसकी परिस्थिति उस नौकाके समान हो जाती है जो अथाह सागरके वक्षमें पहुँच कर अपने खिवैयाको खो बैठी हो। नौका स्वयं पार लगना चाहती हो किन्तु उसे तनिक भी साहस नहीं, स्वयं पर ही नियंत्रण नहीं। अस्तु।

वर्तमानके वैज्ञानिक युगने सट्टेको पिघला कर व्यापारके ढांचेमें ढाल दिया है, अतः वायदा-व्यापार एक विज्ञान है और विज्ञानोंकी भांति उसके भी दो पार्श्व हैं-सैद्धान्तिक और क्रियात्मक। किसी भी व्यापारमें सफलता प्राप्त करनेके लिए उसके दोनों ही पार्श्वोंसे परिचित होना अनिवार्य है। वायदा-व्यापारके फलाफलका सीधा और पूर्ण उत्तरदायी स्वयं होना पड़ता है अतः वायदा-व्यापारकी सम्यक् जानकारी हमारे लिए जितनी आवश्यक है उतनी आवश्यकता हमें अपने आपको समझने जाननेकी है। अपनी योग्यता क्षमता तथा कार्य विशेषके बारेमें अपनी जानकारी और अनुभवका विचार रक्खे बिना यदि वायदा-व्यापारमें हाथ डाल दिया जाए तो उसका परिणाम हमारे भावी जीवनके प्रवाहको ही बदल सकता है। हमारी स्थितियोंमें इतना उलट-फेर हो सकता है कि हमें अपने जीवनका उद्देश्य तक बदलना पड़ जाए तो कोई आश्चर्य नहीं।

स्मरण रखो वायदा-व्यापारमें प्रवेश होनेका उद्देश्य उन पूंजीपतियों या सटोरियोंसे टक्कर लेना है जिनके पास बड़ी पूंजी, पता लगानेके बड़े-बड़े उपाय, और राज्याधिकारियों तक पहुंच है, जो आपकी किंचित्मात्र पूंजी हड़पने पर उतारू रहते हैं, परन्तु आप इस आशा पर इधर प्रवेश करते हो कि अपनी पूंजीको अधिक करके अपनी आवश्यकता पूर्ति करें। स्मरण रखो सटोरियोंके पास मोटी पूंजीके कारण अधिक उलट फेर देखनेकी सामर्थ्य होती हैं, हाजर मालका संग्रह करने या बेचनेकी सामर्थ्य होती है। भावोंमें परिवर्तन करने वाले राजनैतिक प्रभावोंका पता लगानेके उपाय प्राप्त होते हैं, उपज और उत्पादन आदिके नियमोंको समझने वाले-बड़ेसे बड़े जानकारकी सेवा इनके पास होती है, उच्च कोटिके अनुभवी ज्योतिर्विदोंकी भविष्यवाणी प्राप्त करनेकी सामर्थ्य इनमें होती है। सबसे बड़े बाजारमें होने वाले परिवर्तनको सर्वप्रथम पता करनेके उपाय इनके पास होते हैं, और अधिक हानि उठानेके कारण दिवाला निकलने, बाजार-बन्द करने और हेर-फेरके अन्य उपाय वर्त्तनेकी शक्ति भी इनमें होती है। इन सटोरियोंकी पैंतरा-दार चालोंके हेर-फेरके जालके अन्दर प्रवेश कर अपनी किंचिन्तमात्र पूंजीसे रुपये प्राप्त करनेका प्रयत्न करना है अतः आवश्यक बातोंका ध्यान रख कर इस मार्गमें जानेके लिए पांव रखोगे तो आप अपने मंतव्यमें सफल होनेकी सामर्थ्य प्राप्तकर सकते हैं। आप अपने विरोधीको इतना शक्ति शालि देख कर डर न जाएँ अपितु इसके साथ यह भी स्मरण रखें कि सटोरिये कई होते हैं और आपसमें एक दूसरेके साथ मिलकर इस वास्ते टक्कर लेते रहते हैं कि दूसरेकी पूंजीको अपने आधीन कर सकें। सबसे बड़ा सटोरिया-छोटे सटोरियोंकी पूंजीको अपने आधीन करना चाहता है, छोटे सटोरिये अपनेसे निचलोंको दिवालिया बनाना चाहते हैं, वह इसी प्रकार अपनेसे थोड़ा सौदा करनेकी सामर्थ्य रखने वालोंकी जेबें खाली करानेकी टोहमें रहते हैं, कारण यह कि पूंजीपति पूंजीसे टक्कर लेता रहता है और इनकी आपसकी टक्करके समय आप अपना मंतव्य पूरा कर सकते हैं, जब प्राकृतिक, राजनैतिक और आर्थिक व संवाद विवादादिकी घटनाएँ अचानक घटती हैं उस समय सटोरिये मिल जाते हैं और घबराहटमें एकट्ठे ही एक मार्गसे चल निकलते हैं, यह दूसरा समय आपके लाभ प्राप्त करनेका है; जब एक बड़ा सटोरिया अपने विरोधी शक्तिशालि सटोरियेको परास्त करनेमें सफल हो जाता है, तब मुंहकी खा कर एकको अपने शस्त्र फेंकने पड़ते हैं, यह तीसरा समय आपके लाभ

प्राप्त करनेका है। इसके साथ ही सरकार और सटोरियोंकी आपसमें टकर चलती है, सटोरिया समय आने पर एक दम माल अपने आधीन करना चाहता है कि भावोंमें तेजी आ जाए और सस्ते भावका लिया हुआ माल तेज भावोंमें बेचा जा सके, जिससे लाभ प्राप्त किया जा सके। किन्तु सरकार यह प्रयत्न करती है कि देशमें गड़-बड़ व अराजकताको रोकनेके लिए वस्तुओंके मूल्य अधिक तेज न हों, क्योंकि मंहगाई बढ़नेसे प्रजामें अशान्ति उत्पन्न होती है, अशान्ति उत्पन्न होनेसे सरकार खतरेमें पड़ जाती है, तब राज्याधिकारी वर्गके लोग अपने पदोंको बनाए रखनेके लिए इस प्रकारके कई प्रयत्न करते हैं कि मूल्य ऊंचे भावों पर न रह सकें या मूल्य अधिक गिर न जाएँ जिससे औद्योगिक विकासमें बाधा उपस्थित हो जाए। इसलिए सरकार और सटोरियोंकी आपसी टक्करसे उत्पन्न स्थितिसे लाभ उठानेका चौथा समय आपको मिल सकता है; इसलिए अपनेसे कहीं अधिक शक्तिशाली विरोधीके होते हुए वायदा-व्यापारके द्वारा रुपया प्राप्त किया जा सकता है; यदि इसके हर प्रकारके सिद्धान्तों पर दृष्टि रखी जाए और अपने आपके अधान रख कर अच्छे मंतव्यके लिए लाभ प्राप्त करनेका सत्प्रयत्न किया जाए न कि रुपया कमानेका मंतव्य लेकर अमीर बन कर स्वयं सटोरिया बनना हो, जिससे दूसरोंकी जेबें खाली कराई जाए, तब थोड़ी पूंजी वालोंके लिए अपनी पूंजीसे हाथ धोनेके अतिरिक्त और कोई अन्तिम निर्णय नहीं निकलेगा।

लोभकी कोई सीमा नहीं होती, अधिकसे अधिक लाभ प्राप्त करनेका लोभ अपने हाथसे थोड़े लाभको भी खो देता है और अपने ऊपर अंकुश न रहनेके कारण अपनी शक्तिसे अधिक सौदा हो जाता है, जिसका प्रभाव यह होता है कि वक्र (रीएक्शन) को उलट न देख सकनेके कारणसे सौदा खड़ा रखनेकी शक्तिमें कमीके कारणसे हानिमें ही सौदा काटना पड़ता है। इसलिए यदि वायदा व्यापारको रोजगार के रूपमें या अपना और अपने कुटुम्बका पेट पालनेके रूप में या सच्चाईसे किसी शुभ काममें रुपया लगानेके मंतव्यसे किया जाएगा तो आज इस पूंजीवादी समयमें इस व्यापार से सुन्दर और सहल कोई दूसरा साधन नहीं है, यदि इसके सभी उपयोगी सिद्धान्तोंको समझ कर इसमें पांव रखा जावे। केवल मंदा-तेजी लगाकर व्यापार करना या शक्तिसे अधिक सौदा करना व्यापार नहीं है, जिसका अन्त सदा बुरा होता है। परन्तु अपनी शक्तिके अनुसार समय पड़ने पर सौदा करना और अपने अनुकूल बाजार चलने पर सौदा बढ़ाते जाना और लाईन बदलने पर सौदा बराबर करके फिर अपनी शक्तिके अनुसार समय पड़ने पर सौदा करना और अपने अनुकूल बाजार चलने पर सौदा बढ़ाते जाना और लाईन बदलने पर सौदा बराबर करके फिर अपनी शक्तिके अनुसार ही सौदा प्रारम्भ करना ही इसका ठीक प्रकार है। उलट समय पर सौदा होनेसे यदि बाजार भी उलट चलने लगे तो अपनी शक्तिसे सौदा खड़ा रखा जा सकता है, और वक्र (रीएक्शन) आने पर बाजारसे निकल सकते हैं या सौदा डबल किया जा सकता है, इस प्रकारसे अपनी पूंजी सुरक्षित रह सकती है। नित्य प्रति सौदेकी उलट फेर करना या बाजारका किंचिन्मात्र अपने अनुकूल चलने पर एकदम सौदेको बढ़ा देना या लाभ प्राप्त कर जाना अधिक ना समझी है। अपितु साप्ताहिक औसत रख कर अपने सौदेका लाभ लेना या लाभका किंचिन्मात्र हिस्सा लेना अधिक उपयोगी है। इसलिए इस व्यापारका सबसे प्रथम और उपयोगी सिद्धान्त यह है कि अपनी शक्ति के अनुसार खुला सौदा किया जावे। मंदा तेजीकी उलझन में फंसनेसे और लाईन या बाजारका अपने अनुकूल चलनेका शत-प्रतिशत विश्वास होने पर भी अपनी शक्तिसे अधिक सौदा करनेसे सर्वदा परे ही रहना चाहिए, क्योंकि इस प्रकारसे एक बारमें कमाया हुआ अधिक रुपया मन को अपने अधीन रखनेकी शक्ति क्षीण कर देता है और इस व्यापारके उपयोगी सिद्धान्तोंसे नीचे गिरा देता है, जिसका अन्तिम परिणाम सर्वदा ही अधिक हानिके रूपमें निकलता है। दूसरे यह ख्याल मत करो कि जिस दिन मार्केटमें जाओ उस दिन सौदा अवश्य ही करना है, अपितु बाजार की चालको भलि भांति समझ कर जिस दिन आपको लाइन पलटनेका वक्र पड़नेका पूर्ण विश्वास हो जाय उस दिन ही सौदा प्रारम्भ करना चाहिए। थोड़ा सा लाभ प्राप्त कर सौदा प्रारम्भ करना चाहिए। थोड़ा सा लाभ प्राप्त कर सौदा बराबर करनेका स्वभाव नहीं डालना चाहिए, इस प्रकार सौदा करने पर अपने कुटुम्बके पालनार्थ लाभ हो

सकता है। मुख्य बात यह भी स्मरण रखनी चाहिए कि बाजारमें अच्छी घटा-बढ़ी नित्य-प्रति नहीं चला करती, अपितु कई दिनों तक या सप्ताहों या कई महीनों तक भाव एक सीमाके अन्दर घूमते रहते हैं, अतः यदि दस या पंद्रह दिनमें आप पांच सात सौ रुपया लाभ प्राप्त कर लेते हैं, तो इसका उद्देश्य यह न निकालें कि आपकी आमदनीकी औसत इसी प्रकार रहा करेगी; इस लिए अपने रहन-सहन के ढङ्गमें बढ़ोत्तरी न करें और न ही फिजूल खर्चीमें पड़ जायें, नहीं तो बादमें पछताना पड़ेगा। क्योंकि यह हो सकता है कि मार्केट पन्द्रह-बीस दिन एक महीना खूब चले और इसमें हजार-पांच सौ रुपया प्राप्त कर लेवे, फिर दो-तीन मास तक बाजार पड़ा रहे या आप बाजारकी चाल को न समझ सकें और इस वास्ते आमदनी न हो सके; इस लिए रुपया प्राप्त करने पर अपने मनको अधीन रखना, अहंकारको अपने पास फटकने नहीं देना, फिर आवश्यकता पूर्तिके लिए अत्यावश्यक खर्च करके अपने जीवनके मंतव्य को पूरा करनेके मार्ग पर चलना ही इस व्यापारसे सर्वदा लाभ प्राप्त करनेका श्रेष्ठ मार्ग है। बाजारके चलनेके बारेमें दूसरोंकी राय पर ध्यान नहीं देना चाहिए अपितु अपनी राय पर पक्का रहना चाहिए। यदि बाजार अपने विचारके उलट चले तो अपने विचारको फिर दोबारा ठीक करना चाहिए, किसी बड़े सटोरियेकी लिवाली या बिकवालीकी ओर ध्यान देना किसी मोटे लाभ प्राप्त करने वाले व्यापारी के सौदेकी ओर ध्यान देना, किसीकी सर्वदा ठीक निकलने वाली सुघाईसे अपना विचार बदलना सर्वदा हानि देने वाला होता है, इससे बाजारको समझनेकी स्वयंकी समझ-दारी उत्पन्न नहीं होती, अपितु दूसरेके अधीन होकर हानि उठानी पड़ती है, अन्तमें आम लोगोंकी तरह यही कहना पड़ता है कि वायदा-व्यापार बुरी वस्तु है, इससे दूर रहना ही अच्छा है।

वायदा-व्यापारमें मंदा या तेजी चलनेके सिद्धान्तोंके बारेमें लिखनेसे पहिले एक बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि आजके समयमें लाभ प्राप्त करनेके दो ही बड़े साधन हैं। एक है-सांसारिक वस्तुओंका उत्पन्न करना जिनसे सांसारिक लोगोंकी आवश्यकता पूर्ति होती है या इन वस्तुओंको उत्पन्न करने वालोंकी सहायता करना। दूसरा प्रकार है दूसरोंकी विवशतासे लाभ उठाना, इसीमें व्यापार भी सम्मिलित है, क्योंकि व्यापारसे लाभ दूसरोंकी विव-शतासे ही मिला करता है। यदि वस्तुकी मांग होगी तो उस वस्तुको प्राप्त करने वाला अपनी विवशताके कारण ही अधिक मूल्य देने पर विवश होगा। यदि मांग नहीं होगी तो मंदे भाव पर भी खरीदनेको कोई उद्यत नहीं होगा। इस लिए वस्तुओंके मूल्य अधिक या कम होते रहते हैं, यदि व्यापारी लोग दूसरेकी विवशतासे लाभ न उठाएं तो वह लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। आवश्यकता वालोंको आवश्यक वस्तुयें न देकर उनको नाश कर देना ही व्यापारका वर्तमान युगमें सुवर्ण सिद्धान्त है। अमेरिकामें गेहूँ इसलिए इंजिनोंमें कोयलेके स्थान पर फूंक दिया जाता है कि संग्रह अधिक न होकर भाव गिर न जायें, ब्राजीलमें कई बार कपासकी फसल खड़ी इसलिए जला दी गई कि रुईके भाव गिरनेसे बचाए जा सकें। अतः मंतव्य यह है कि व्यापार करनेके लिए सबसे सुन्दर प्रकार वायदा-व्यापारका है, इसमें न तो वस्तुओंमें मिलावट करनेकी आवश्यकता है न झूंठ बोलनेकी, न थोड़ा तोलनेकी आवश्यकता है,न किसीको उत्कोच(रिश्वत) देने कि आवश्यकता है अपितु एक बार इसके मंदा-तेजी चलनेके सिद्धान्तोंको सन्मुख रखकर समझ कर हृदयङ्गम करनेकी है जिससे मामूली पूंजी वाला साधारण पढ़ालिखा व्यक्ति अपना और अपने कुटुम्बका पालन कर दूसरोंकी सेवा करनेके लिए अधिक समय निकाल सकता है। परन्तु यह तभी हो सकता है जबकि वायदा-व्यापारको व्यापार समझा जाए। किसी भी श्रेष्ठसे श्रेष्ठ वस्तुकाका दुरुपयोग होनेपर वह अधिक हानि कर सिद्ध हो सकती है; अच्छाई बुराई किसी वस्तु या सिद्धान्तमें नहीं है अपितु उसके उपयोग करनेके ढङ्गमें है; अतः वायदा-व्यापारका सदुपयोग किए जाने पर यह कभी बुरा नहीं हो सकता।

प्रत्येक व्यापारका आधार पूंजी है, पूंजी किस प्रकार लगाना चाहिए, यदि वायदा-व्यापारसे आनन्द प्राप्त करना है तब आप स्मरण रखिये जितनी पूंजी आपने वायदा-व्यापारके लिए सुरक्षित रखी है उसके पांच बराबर विभाग कर लिजिए और एक बारमें एक विभागकी सीमासे अधि-कका व्यापार भूल कर भी न करिये चाहे आपको ब्रह्माने ही स्वप्नमें क्यों न कोई चांस बता दिया हो। स्मरण

रखिये जितनी भी असामियां फैल हुई या जिनने भी अधिक हानि होनेसे दिवाला घोषित किया, वे ऐसे ही व्यक्ति थे जिन्होंने इस पांचवे भागकी परिधिसे अधिकका सौदा किया। एक ही दिनमें लक्षाधीश होनेकी मत सोचिये। सावधानी पूर्वक पांव रखिये।

बाजारको भली प्रकार समझ बूझकर सौदा करिये और उसके निपटानेके लिए सतर्क होकर बैठ जाइये। वायदा-व्यापारके द्वारा लाभ प्राप्त करनेका एक मात्र मन्त्र है सतर्कता। जो आलसी या ढीले होते हैं और भाग्यको प्रधान मानकर इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते, वे सदा खोते ही देखे गए हैं। अतः सदैव सावधान रहिए। अफवाहोंसे अपना विचार मत बिगाड़िये। शान्त मस्तिष्कसे बाजारके रुखका अध्ययन करते रहिये। कुछ व्यक्ति अपने मित्रकी रायसे व्यापार करते हैं। उन्हें यह जांच करना आवश्यक है कि उनके मित्र इकतर्फा दिमागके तो नहीं हैं? यदि मित्र इकतर्फा दिमागके होंगे तो अनेक प्रकारकी दलीलें देकर आपके मस्तिष्कमें वही विचार कूट कर भर देंगे, अतः अपना सलाहकार चुननेमें भूल कर भी धोखा मत खाइये। ऐसा सलाहकार चुनिये जो सामयिक घटनाओंका निष्पक्ष निचोड़ दे सके। यदि आपको मित्रसे नहीं ज्योतिषीसे सलाह लेनी है तो एक दो विश्वास पात्र उच्च-श्रेणीके अनुभवी विद्वान् ज्योतिषी चुनिये और पहली रिपोर्ट हर नये ज्योतिर्विदकी केवल मिलाकर ही देखिये। उससे पत्र-व्यवहार कर उसकी विद्वत्ताकी थाह ले लेना आवश्यक है। क्योंकि यह क्षेत्र भी इस समय अधिक ही संकीर्ण हो चुका है, जिसे देखो दे रहा है स्वर्ण चांस-अचूक चांस।

व्यापारीके लिए एक समाचार-पत्र अत्यावश्यक साधन है, जो उसकी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करता रहे, और उसे भविष्यके लिए मार्ग सुझाता रहे। पत्र ऐसा हो जिसमें दो मंडियोंके एक ही समयके भाव अवश्य हों और उन पर आवश्यक टिप्पणी हो; साथ ही उसमें सच्चे समाचार हों। उपरोक्त सभी बातोंके सम्मिश्रणसे अपना एक स्वतन्त्र मत बना लीजिये। अपना मत दूसरों पर अभिव्यक्त करनेकी आवश्यकता नहीं। इस विषयमें शान्त मस्तिष्क और कल्पना शील बनकर खूब सोचिये। यह बात तो सत्य है कि जब किसी वस्तुका उत्पादन कम होता है और मांग अधिक होती है, तब उसका भाव तेज होता है। जब पैसा असुरक्षित घोषित हो जाता है तब भी वस्तु महंगी होती है। जब पैसेका मूल्य वस्तुके मूल्यसे कम हो जाता है तब हर वस्तु तेज हो जाती है। जब किसी वस्तुकी माँग कम होगी तथा माँगकी अपेक्षा माल अधिक होने पर वस्तुका भाव गिर जाता है। पैसा सुरक्षित हो जाने पर मंदेके धमाके होते हैं। जब पैसेका मूल्य वस्तुके मूल्यसे अधिक हो जाता है तब वस्तु मात्रमें मंदीका वेग चालू हो जाता है। अभी तक भारतकी उपज वर्षा पर अवलम्बित है; यहाँ कपास, एरण्डी, अलसी, गेहूं आदि सभी फसलें होती हैं। उचित समय पर यदि वर्षा नहीं हुई या होनेके चिन्ह दृष्टि गोचर न हुए तो भाव एक दम तेजीकी ओर अग्रसर होने लगते हैं।

यदि उसी समय तुरन्त वर्षा हो जाय तो भाव गिरने भी लगते हैं। जब नई फसलें बाजारमें आने लगती हैं तब बाजारों पर उनके दबावका प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देने लगता है; यदि कच्चे मालके निर्यातक कोटे फसलोंसे कम या अधिक होंगे तो उनका प्रभाव भी प्रत्यक्ष रूपसे बाजरों पर पड़े बिना नहीं रहेगा। अतः उपरोक्त रहस्योंको हृदयङ्गम कर लेनेसे आप वायदा-व्यापारमें कभी हानि नहीं उठा सकते।

मंदा-तेजी

किसी वस्तुके वायदा-व्यापारमें तीन बातें होती हैं। प्रथम तेजी चलेगी, द्वितीय मंदा चलेगा, तृतीय घटा-बढ़ी होती रहेगी, और किसी एक सीमाके अन्दर ऊपर या नीचे भाव अधिक दिनों तक घूमते रहेंगे। घटा-बढ़ीके दिनोंमें अधिक लाभ प्राप्त करना बहुत कठिन होता है; आम लोगों को मंदा आने पर मंदेकी लाइनका विचार होता है और तेजी आने पर तेजीकी लाईनका विश्वास हो जाता है, फिर घटा-बढ़ीसे सौदेकी कांट छांट करने पर हानिमें रहना पड़ता है, इस समय में विशेष वह ही व्यापारी कमा सकते हैं जो उस भाव पर ध्यान रखकर सौदा करते हैं, जिसके पास भाव चक्कर काटते हैं, घटा-बढ़ी विशेषतया उसी समय पर चलती है जब एक लाइन चलकर ठहर जाती है। इसमें आम तौर पर मध्यस्थ अन्तर निकालनेका प्रकार यह है कि यदि तेजी चली है तो किस भाव तक तेजी गई है, वहांसे यहां तक वक्र(रीयेक्शन)आया है, इन दोनों भावोंकी औसत निकाल लेवें तो आपको उस भावका पता चल जायेगा जिसके

ऊपर या नीचे बाजार घूमता रहेगा । मंदेकी लाईन जब चलती है, लाभ प्राप्त करनेका सबसे श्रेष्ठ समय यह होता है । लाइन कब चलती है इसका ज्ञान होना आवश्यक है । विशेषतया लाइन चलनेके दो समय होते हैं, एक वह जब बाजारमें दोनों ओर खूब झटके आते हैं, जिस ओर लाइन चलनी होती है इस ओर बाजार एक दम तेज गतिसे जाता है और फिर एक दो दिन भाव रुक कर भाव उल्टी ओर को जोरदार तेजीसे जाकर चलने वाले भावोंको स्पर्श कर एकदम अपनी लाईनकी सीधमें चल निकलते हैं । लाईन चलने पर पहिले एक इङ्गित (ईशारा) दृष्टि गोचर होता है कि सावधान हो जाओ मैं चलने वाली हूँ । यदि आपने लाईनके उलट सौदा किया है तो आप घबराएँ नहीं अपितु प्रतीक्षा करें और जब वक्र (रियेक्शन) आने लगे तो उतना ही सौदा लाइनके उलट और करके अपना दड़ा मिलाएं । यदि बाजार उस सौदेसे उलट जाने लगे तो शीघ्र ही उस सौदेको काट दें । वक्र (रीयेकशनका ठीक अन्दाजा होने पर यह आपको उलट देखनी पड़ेगी) और वक्राङ्क (रियेक्शन प्वाइण्ट) का ठीक हिसाब देखें, इस वक्र (रियेक्शन) में दड़ा मिलाकर जब फिर वक्र (रियेक्शन) आए तब आप बिना हानि उठाए अपना सौदा बराबर कर सकते हैं और फिर चलती लाईनके अनुकूल सौदा कर सकते हैं, यदि आपका सौदा लाइनके अनुकूलमें किया हुआ है तो वक्राङ्क (रियेक्शन प्वाइण्ट) की प्रतीक्षा करके लाभ प्राप्त करें, भाव एक बार हानि किए हुए सौदेको बराबर करनेका समय अवश्य देते हैं, उस समयकी सीमाकी प्रतीक्षामें रहो और वहाँसे जो सौदा करो उसको खड़ा रहने देना चाहिए । फिर आगे सौदा बढ़ाते जाओ, लाइन मंदेकी हो या तेजी की दोनों स्थितियोंमें प्रथम आगाही होगी, फिर जोरदार वक्र (रीयेक्शन) आकर लाइन प्रारम्भ हो जाएगी । इसकी पूरी जानकारी पिछली चली हुई लाइनोंको देखकर सुगमतासे हो सकती है ।

लाइन चलनेका दूसरा प्रकार यह है कि बाजारसें घटा-बढ़ी बहुत कम हो जाती है, ऊपर और नीचे दोनों ओरके भावोंको छोड़कर इसकी सीमा बहुत कम हो जाती है और कई दिनों तक बाजार कतई सुप्तावस्थामें पड़ा सा ही दृष्टि-गोचर होता है, ऐसे समय पर बाजार एकदम झटका मारता है, जिस ओर को जाना होता है उस ओरको एक दम खिंच जाता है, एक दो दिन या कम समय वहां भाव पड़े रहकर फिर एक लाईन प्रारम्भ हो जाती है, ऐसी स्थितिमें भी उलट सौदा किए हुए व्यापारीको समय मिलता है कि वह अपना सौदा हानिसे काटकर डबल कर सके और लाइन के अनुकूल अपना सौदा बढ़ाता जावे ।

लाइन समाप्त होनेका समय

लाइन प्रारम्भ होने पर लाभ प्राप्त करनेकी ओर उतना अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए, जितना अपना सौदा बढ़ानेकी ओर । ज्यों ज्यों लाइन आगेकी ओर बढ़ती जाए उतना सौदा बढ़ाते जाओ, इस बातका विचार मत करो कि आपका सौदा अधिक होता जा रहा है, केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भाव जिस तीसरे भावको छोड़-कर आए हैं आपके सौदेका कुल दड़ा इस सीमाके अन्दर तक रहना चाहिए, इसका खास चिन्ह यह है कि जिस सीमा पर जाकर लाइनने रुकना है वहाँसे एक जोरदार वक्र (रीयेक्शन) आवेगा । परन्तु आपके कुल सौदेको हानि नहीं पहुँचायेगा, केवल आपके अन्तिम सौदेको हानि दिखा सकता है, किन्तु यहां आपको घबराना नहीं चाहिए, अपितु सौदा बढ़ानेको छोड़कर सारे सौदेका लाभ प्राप्त करनेके लिए उद्यत हो जाना चाहिए, भाव एक बार उस लाइनके अन्तिम भावके आस-पास इस दिन या दूसरे-तीसरे दिन अवश्य टक्कर मारेंगे, यही समय अपना सौदा बराबर करनेका है, बाजारके भाव सर्वदा राजपथ (सड़क) या मार्ग बनाकर चलते हैं, और जब केवल मात्र घटा-बढ़ी चलती है तब भाव अपना घर बना लेते हैं, उसी सीमाके अन्दर घूमते रहते हैं, राजपथ (सड़क) या मार्ग के दोनों छोरका ठीक-ठीक ज्ञान होने पर आपको बड़ी सुगमतासे एक आने तक लाइनके ऊंचे निचले भावका सम्यक्तया पता लग सकता है और इसकी पूरी जानकारी उस समय आ सकती है, जब पिछली लाइनोंके हिसाबको समझ कर बाजारमें चलने वाली थोड़ी-या अधिक घटा-बढ़ी या लाइनका अध्ययन किया जाए, क्योंकि लाइन चाहे छोटी हो चाहे बड़ी, सर्वदा कुछ नियमित सिद्धान्तोंके अनुसार ही चला करती है और इसकी पूरी जानकारी बाजारमें बैठकर ही सीखी जा सकती है ।

———

तीन मासका व्यापार भविष्य

[ले०—श्री प्रो० बी० सी० महता एम. आर. एस., म्युनिसिपल कमिश्नर]

विजया दशमीसे "श्रीस्वाध्याय" अपने १५ वें वर्षमें प्रवेश करता है, गत १४ वर्षोंमें इसने किस प्रकार सफलता पूर्वक ज्योतिष-संसारमें अपनी प्रगतिका दिग्दर्शन किया तथा पाठकोंकी इसने कैसी अच्छी सेवा की है यह आपने भली प्रकार अनुभव किया है। आजके संसारमें इस प्रकारका "त्रैमासिक पत्र" जिसने पाठकोंके हृदयमें इतना आदरका स्थान प्राप्त कर लिया हो दूसरा दिखाई नहीं आता, आज भारतके प्रत्येक बड़े व छोटे नगरमें इसके प्रेमी पाठक आपको अवश्य मिलेंगे तथा सैंकड़ों ही नहीं बल्कि हजारोंकी संख्या में लोग इसको अत्यन्त रुचिसे पढ़ते हैं और अनेकों व्यापारी इसके आधार पर अपना लाखों रुपयोंका व्यापार भी करते हैं। इन सबका श्रेय श्री पंडित हरदेव शर्मा त्रिवेदी जी को है जिनके अथक परिश्रम तथा सतत प्रयाससे यह पत्र इतना उन्नति पर पहुँचा है। हमें अब यह आशा करनी चाहिए कि यह पत्र शीघ्र ही त्रैमासिकके स्थानमें मासिक हो जावेगा। मासिक होनेके बाद तो यह निश्चय ही एक उच्च श्रेणीका पत्र होगा इसमें दो मत नहीं होसकते। हम इसके सम्पादक महोदयको इस नूतन वर्षके उपलक्षमें हार्दिक बधाई देते हैं।

प्रिय पाठकोंके सामने हमारा लेख लगभग दो वर्षों के बाद प्रस्तुत किया जा रहा है, हमारे माननीय सम्पादक जी ने भी हमें कई बार लेख भेजनेका आग्रह किया किन्तु अपने कुछ ज्योतिषके बहुमूल्य प्रकाशनमें इतने संलग्न रहे कि हम आपकी सेवामें दो वर्ष तक अपने लेख उपस्थित नहीं कर सके जिसका हमें हार्दिक पछतावा है, परन्तु हम आपको अब विश्वास दिलाते हैं कि इस पत्रमें आगेको बराबर हम अपना लेख प्रस्तुत करते रहेंगे।

आजकल तेजी-मन्दीका चान्स बताने वाले बोगस ज्योतिषीयोंकी संख्या इतनी बढ़ गई है कि व्यापारी वर्ग परेशान है, यह ज्योतिषी कहलाने वाले उलटे सीधे विज्ञापनोंसे व्यापारीवर्गका केवल पैसा ही नहीं लेते बल्कि उनके चान्सोंसे व्यापारीवर्ग हजारोंरुपयेके नुकसान में पड़कर बरबाद व दुःखी हो गए हैं और यही कारण है कि भारत में ज्योतिषके प्रति भी लोगोंकी अश्रद्धा बढ़ती जा रही है।

हमारा व्यापारी भाइयोंसे सादर अनुरोध है कि वे ऐसे धोखेबाजोंसे सदा सावधान रहें. दैनिक चान्स व सिद्ध चांस आदिके विज्ञापनोंसे सदा बचते रहें, तथा उन्हीं ज्योतिषियों से चान्स व सलाह मंगवावें जो वास्तवमें इस विद्याके विद्वान् तथा अनुभवी हों तथा जिनके लेख व भविष्यवाणी आये दिन आप समाचारपत्रोंमें पढ़कर उनकी सत्यताका व उनके ज्ञान तथा विद्वत्ताको आपने आजमा लिया हो. उन्हींकी बात आपको माननी चाहिए तथा उनके सम्पर्कसे ही आपको निश्चय लाभ हो सकता है।

ग्रह नक्षत्रादिका बाजार पर यथेष्ट प्रभाव है, तथा जितनी भी बड़ी व छोटी घटा-बढ़ी बाजारोंमें होती है वह सब ग्रह योगोंके आधार पर बराबर सिद्ध होती है। हम २० वर्षोंसे इस पर बराबर (*Research*) अनुसन्धान करते आ रहे हैं, हमने अपने अनुसन्धान तथा अनुभवके आधार पर सन् १९४३ से अब तक कई पत्रोंमें वायदा बाजारोंका भविष्य प्रकाशित किया है। (*Astotifical-Magazine*) जो भारतमें ज्योतिष विषयका सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजीका मासिक पत्र है उसमें हमारे व्यापार भविष्य सम्बन्धी लेख १२-१३ वर्षोंसे बराबर निकलते हैं, जिनकी सत्यता ही प्रत्यक्ष प्रमाण है।

'श्रीस्वाध्याय' में भी हमने कई बार लेख व व्यापारिक भविष्यवाणियाँ प्रकाशित की हैं जो व्यापारियोंके लिए अत्यन्त उपयोगी व लाभप्रद सिद्ध हुई हैं। अब हम फिर से अपने लेख इस पत्रमें देना प्रारम्भ कर रहे हैं, हमें पूर्ण विश्वास है कि पाठक मित्र इनसे लाभ उठावेंगे। हमने यह भी तय कर लिया है कि 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लिए हमारे यहांसे ज्योतिष सम्बन्धी प्रत्येक कार्य आधी फीससे किया जावेगा, पत्र व्यवहार करें।

अक्टूबर नवम्बर

यह अंक प्रिय पाठकोंके पास अक्टूबरके अन्तिम सप्ताह तक अवश्य पहुंच जावेगा, उस समय ग्रहोंकी स्थिति निम्न प्रकारसे होगी— शनि ग्रह अपने २७ वें अंशमें तुला राशिमें प्रसार करता है, जबकि तुला राशिमें नेपचून और सूर्य भी अपने ४ व आठ अंशमें प्रसार करते हैं, तुला राशि व्यवसाय व बाजारोंके लिए बहुत महत्वकी राशि है और इसमें शनिका प्रसार जब होता है तो शनि उच्चका बन जाता है। प्रायः २। वर्षसे शनि इस राशिमें प्रसार कर रहा है और अब यह अपने नवांश मिथुनमें प्रसार करके इस राशिको छोड़ देगा, जब तक यह ग्रह इस राशिके अन्तिम नवांशमें रहेगा, व्यापारमें विशेष व उल्लेखनीय घटाबढ़ी होगी और खासतौर से रुई, कपास. तेल वाना, गुड़, मटरा, शेयर, जूट आदि बाजारोंमें इस ग्रह योगका तेजीका प्रभाव रहेगा, शनि अपने अन्तिम नवांशमें ता० १५,१६ अक्टूबरको आता है। यहांसे तेजीका फोर्स बढ़ेगा, शनिके बाद दूसरा नं० व्यापारिक ज्योतिषमें गुरुग्रहका है, इसका प्रसार सिंह राशिके ५ अंशोंमें हो रहा है जो शनि की वर्तमान राशिसे ११ वीं राशि है तथा इस राशिसे गुरु शनिको तीसरी दृष्टिसे देखता है, तथा नेपचून ग्रहको जो शनिके साथ ही तुला राशिमें ४ अंशका बढ़ता है उससे सम्पूर्ण सेक्सटायल योग बनाता है। यह योग भी बड़ी तेजीकी लाइन बताता है. इस प्रकार यह पीरियड जनरलमें तेजीका पीरियड ही समझना चाहिए, और प्रत्येक व्यापारी महाशयको जो रुई, कपास, गुड़, गुवार, तेलवाना, जूट, बारदाना, सरसों आदि वस्तुओंके व्यापारमें रुचि रखता है, उसे तेजीका ध्यान रख कर ही व्यापार करना चाहिए, यद्यपि तेजी सदा रिएक्शनके साथ ही आती है फिर भी व्यापारीको सिद्धान्त पहले खरीदो फिर बेचो या तेजियें लगादोका ही बना लेना चाहिए ।

यह तेजीका ट्रेंड हमारे विचारसे ता० १२ या १३ नवम्बर तक चलेगा और फिर बाजारमें से तेजीका फोर्स धीरे २ कम होता जावेगा। तारीख १३ नवम्बर व ३० नवम्बरके बीच एक मन्दीका झटका उपरोक्त सब बाजारोंमें आवेगा, क्योंकि शनि अपनी उच्च राशि छोड़ता है तथा वृश्चिक राशिमें प्रवेश करता है जहां राहु महाराज पहले ही शनिकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस प्रकार शनि राहुका साथ व गुरुका इन दोनों ग्रहोंसे "स्क्वायर योग" बनाना एक बार प्रत्येक बाजारमें झटकेकी मन्दी लाता है सो बहुत ध्यानसे व बहुत सावधानीसे व्यापार करें।

दिसम्बर

दिसम्बर मास भी कम महत्वपूर्ण नहीं है दिसम्बरमें वृश्चिक राशिमें ५ ग्रह इकट्ठे हो रहे हैं- सूर्य, बुध, शनि, राहु, चन्द्रमा, इन पांच ग्रहोंका इकट्ठा होना बहुत महत्व की बात है जब कि गुरु सिंह राशिमें प्रसार हो रहा है तथा शनि ता० ११-१२ को सिंह नवांशमें प्रवेश करता है। वृश्चिक राशिमें इन पांच ग्रहोंका योग बाजारोंमें तेजीका फोर्स बढ़ाता है तथा चारों ओर तेजीका वातावरण पैदा कर देता है जबकि गुरु सिंह राशिमें इन पाँचों ग्रहोंसे स्क्वैयवर योग बनाता है यह उठी हुई तेजीको मन्दी के रूपमें परिवर्तित करता है। इस प्रकार पहले तेजी और फिर मन्दीका वातावरण पैदा हो जावेगा। ता० १५ दिसम्बर तक तेजीका फोर्स रहकर फिर बाजारोंमें नर्माई आवेगी सो तेजीसे निकल कर उक्त तारीख तक मन्दीमें आ जावें।

जनवरी १९५६

जनवरी मासके प्रारम्भमें ही ता० ३ को मंगल ग्रह अपनी शत्रु क्षेत्री तुला राशिको छोड़कर अपनी स्वगृही राशि वृश्चिकमें प्रवेश करता है, जहां इसका सम्बन्ध राहु और शनि ग्रहसे होता है। वृश्चिक राशिमें राहु मंगल और शनिका योग तेलवाना, अरंडा तथा गुड़, गुवारमें तेजी करता है, जबकि रुई, कपास, सोना, चांदी शेयर आदिमें मन्दीका ट्रेंड पैदा करता है। यह मन्दी ता० १४ तक चलती है और फिर गुरु ग्रहका नेपचून ग्रहसे "सेक्स्टायल" योग तेजीका फोर्स पैदा कर देता है। इसलिए ता० १४ पहले इन बाजारोंमें मन्दी खेलनी चाहिए और फिर तेजीमें आ जाना चाहिए यहांसे बाजार धीरे २ सुधरेगा। तारीख २० को बुध मकर राशिमें अस्त होता है जो बाजारमें फिर नरमाई लावेगा। सो २० ता० से तेजीके धन्धेसे निकलकर मन्दीका व्यापार करना चाहिए। इसके आगेके लिए आगामी अंककी प्रतीक्षा करें।

त्रैमासिक-भविष्य-विमर्श

[लेखक :—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

ता० ११ नवम्बर रात्रौ ३।२१ पर वृश्चिक राशिमें शनि प्रवेश होनेसे कुरुक्षेत्र-इन्द्र प्रस्थादिमें राजनैतिक उलझनें उत्पन्न होकर शासन सम्बन्धी अड़चनें उत्पन्न होंगी जिससे सामाजिक जीवन उग्र रूप धारण करे, कई प्रान्तोंमें अनावृष्टिके कारण दुर्भिक्ष जैसी स्थिति उत्पन्न होवे, पश्चिम दिशामें निरंतर पांच वर्ष तक राजनैतिक वातावरण उग्ररूप धारण करता जाय, जिसके कारण रक्तोपद्रव भी उत्पन्न हो जावे तो कोई आश्चर्य नहीं। वृक्षों तथा चोरों का नाश हो, शासकीय वर्ग और प्रजामें मनोमालिन्य दिन दिन उग्र-रूप धारण करे; जिस समय शनैश्चर राशिके अन्तिम भागमें जायगा उस समय पर सुवर्णादि धातुओं को बेचकर उसी मूल्यका अन्न खरीद लेना चाहिए क्योंकि हिम (बर्फ व ओले) तथा चूहों आदिके उपद्रवसे खेतीका नाश तिलहन व तैलादिमें विशेष रूपसे महर्घता होवे।

मंगलके क्षेत्रमें शनि और राहु दोनों विराजें तो ताम्रादि धातुओंमें तेजी और सर्वप्रकारके अनाजोंमें भी तेजी तथा राज-विग्रह हो। यथा—

भौमक्षेत्रे शनौ राहौ ताम्रादीनां महर्घता।
तथा वै सर्व धान्यानां महर्घं राजविग्रहम्॥

ता० १६ नवम्बरको बुधवासरे दिनके १२ बजकर ५६ मिनट पर मीन लग्न, ज्येष्ठा नक्षत्र, कौलव करणमें मु० १५ भिक्षान्न भद्र-रज्जी हुई वृश्चिक संक्रान्ति लग रही है। लग्नको मंगलकी पूर्ण दृष्टि है, लग्नेश षष्ठमें है अतः लग्न हीन बली होनेसे तेजी कारक हैं "बलेन हीने तनुभे महर्घम्" वित्तेश भौम मध्यबली है अतः भावोंमें समानता रहे, सप्तममें पापी भौमका जाना उत्पन्न हुए धान्यों का नाशक है (संक्रान्तिका लग्न मीन होनेसे कपालसे उत्पन्न होने वाले मोती-कस्तूरी) जलसे उत्पन्न होने वाले रत्न वज्र (हीरे आदि) अनेक प्रकारके स्नेह (समस्त प्रकारके तैल बैजीटेबल घी आदि) में तेजी होवे।

मु० १५होनेके कारण राजा-प्रजामें मनोमालिन्य अनाज का भाव तेज, पुरुषोंको पीड़ा, मामूली वर्षा रसों (गुड़-खांड-शक्कर-घी-तैल) में तेजी कारक है। यह संक्रान्ति बुधवारी होनेके कारण सुपारी आदि फलमें तेजी हो। ता० १६ नवम्बरको पांच ग्रह वृश्चिक राशिमें एकत्र हो रहे हैं, अतः महारोगका भय, राजयुद्धका भय, संसारके राजनैतिक मंच पर अनेक प्रकारकी अघटित घटनाएं घटें, जनोंका नाश, मन्त्रियोंका नाश, अतिवृष्टि और अनावृष्टिसे हानि, पर चक्रभय, अनेक प्रकारके उत्पातादि हों जगत्‌में संकीर्णता व्यापे, प्रलय सदृश स्थिति उत्पन्न हो, भूकम्पादि महोत्पात हों, जगत् अनेक प्रकारके दुःखोंसे व्याप्त हो, पशुओं को पीड़ा इत्यादि अनेक प्रकारके उपद्रव होवें।

ता० २२ नवम्बरको रात्रिसे वृश्चिक राशिमें बुध आ जाता है जो ११ दिसम्बर तक रहता है, जिसके कारण पशुओं और पुरुषोंका नाश, राजनैतिक मंच पर वाग्युद्ध उग्ररूप धारण करे। यथा—

कुजर्क्षे राहुमंदज्ञै र्नश्यन्ति पशवो नराः।
तदा भूपक्षयो युद्धं सर्व खेटैः फलं शुभम्॥

ता० २९ नवम्बरको कार्तिककी पूर्णिमामें रोहिणी नक्षत्र आ जाता है. जिसके कारण पृथ्वीके जन्तु क्लेशमें निमग्न हों "यदि चेद्रोहिणी युक्तो जंतवः क्लेश भागिनः" तारीख २९ नवम्बरको रात्रिके ९ बजकर ५१ मिनट पर चन्द्रग्रहण होगा इसका मोक्ष ११।७ पर होगा, फल यह है कि तीसरे मासमें चौपाये महिषादि पशुओंकी तेजी हो तथा चांदी, जसद, राई, मेथी आदिका संग्रह कर चार मास पीछे लाभ हो। वर्षा समयानुकूल हो जिससेखेतियोंकी वृद्धि, स्त्रियोंको सुख, राजा-प्रजामें आनन्द घृत-खांडका भाव तेज। वृश्चिकके सूर्यमें ग्रहण होनेसे फल-कन्द-मूल अनेक प्रकार के रत्न दो वर्ष उपरांत तेज हों। यदि कार्तिक मासमें सूर्य चन्द्रका ग्रहण आ जावे तो धनकी इच्छा रखने वालोंको हर प्रकारके अनाजोंका संग्रह करना चाहिए क्योंकि ग्रहणसे पांचवें मासमें बेचने पर श्रेष्ठ लाभ होवे, पांचवा मास २९

मार्चसे २६ अप्रैल तक है।

ग्रहणको दृष्टि मंगल बुध शनैश्चरकी है, अतः लाल रंगके समस्त पदार्थ गुड़, मक्की, मसरी, गेहूं, तांबा, सोना केशर आदि तथा शहद घी तैल और समस्त काले रंगकी वस्तुएं सरसों अल ी तैल बीजादि तेज होवे।

ता० १४ दिसम्बरको दिनके ११ बजकर २२ मिनट पर सूर्यग्रहण स्पर्श होकर १४-३२ पर मोक्ष होगा। फल रस, कल तेज, चावल आदि सार धान्योंका नाश। सोना, पितल तांबादि धातु तेज, सुपारी तथा लाल वस्त्रके संग्रह करनेसे लाभ, ज्वार बाजरे मोठ चने आदि धान्य, सुपारी, कपास, कपड़ा, लौंग, अफीम आदिका संग्रह करनेसे दो मास पीछे लाभ हो। दो मास १४ फरवरी तक होंगे। ज्येष्ठा नक्षत्रमें ग्रहण होनेके कारण गुड़ खांडका संग्रह करके पांचवे मासमें बेचनेसे लाभ होवे। पांचवां मास १४ अप्रैल से १४ मई तक है। चन्द्रमाके ग्रहणके उपरान्त यदि सूर्य ग्रहण आ जाय तो प्रजा में परस्पर वैमनस्य स्त्री पुरुषों में परस्पर वैर हो जिसके कारण संसार संतप्त रहे।

ता० १५दिसम्बरको मूल नक्षत्र धनुराशि गुरु वारको नव चन्द्रोदय हो रहा है। इस चान्द्रमासमें पाँच गुरु और शुक्र वार हैं, यह दोनों विरोधी भावनाओंके होनेके कारण वायदा व हाजिरके मालों पर दोतरफा रुख बनानेके लिए तत्पर रहेंगे, यह नव चन्द्रोदय बुध और शुक्रके मध्यमें है। अतः समस्त श्वेत वस्तु रस धान्य, सूत, कपड़ा चावल, सैन्धा नमक, कपास, रुई, सोना चांदीमें मंदीका वेग आवे।

किन्तु इसी दिन रात्रिके पाँच बजकर ५२ मिनट पर वृश्चिक लग्नमें पू० षा० नक्षत्र बालवकरण पायसभक्षी धनुःसंक्रान्तिका प्रवेश हो रहा है जिसके लग्नमें राहु शनि और सप्तममें केतु विराजमान है। यह तेजीकारक है। धनेश गुरु बलशाली है अतः तेजी हो। सप्तममें क्रूर ग्रहोंका होना, भी तेजीकारक है। पायस भक्ष होनेके कारण रसों गुड़, खांड, तिलहन तैलादि में तेजी अनाजमें मन्दी हो।

इस मासमें विशेषकर ईखसे उत्पन्न वस्तुएं (गुड़, खांड, शक्करादि) लोह जातीय (समस्त लोह-शेयर) ऊन, एरंडा तिल, समस्त काले रंगकी वस्तुओंमें तेजी के उछाले अच्छे रूपसे आवें। मार्गशीर्ष शुदी एकादशी रविवारी है, अतः मंदी होने पर रुई कपास खरीदने वाले बैसाख मासमें अच्छा लाभ प्राप्त करें।

पौष वदी अमावसको पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र है। षष्ठांश उत्तराषाढ़ा भी है। पूर्वाषाढ़ा होनेसे खेती उत्तम जिससे दुगुना मंदा आगामी वर्ष तक आ जावे, उत्तराषाढ़ाके कारण दुर्भिक्ष, कई प्रांतोंमें फसलकी हानि और राजनैतिक तंत्रमें हल चल, जिससे प्रजामें क्षोभ उत्पन्न हो। अमावस्या गुरु और शुक्रवारी है, अतः कई प्रान्तोंमें अन्नका भाव मृत्तिका तुल्य हो जावे। यथाः—

"यदि भवति शशांको मंडलं चोष्णरश्मेः।
बुध गुरु भृगु सोमे मृतिकातुल्यमन्नम्॥

ता० १४ जनवरीको प्राचीन सौरमानसे घट्यादि २६-१६ पर कर्कलग्न श्रवणनक्षत्र बालवकरणमें पायसभक्षी मकर संक्रान्तिका प्रवेश हो रहा है। कर्क लग्नको बुधकी पूर्ण दृष्टि है बुधोदय है, सप्तम भावमें है। अतः मन्दीकारक है। "सप्तमस्था यदा सौम्या धन धान्य विवर्धकाः" "विलग्नसे वीर्य युनं समर्थम्" वित्तेश सूर्य स्पष्टोंमें षष्ठ भावमें चला जाता है, अतः हीन बली होनेसे मंदी कारक है। "समर्घता निर्बल वित्त नाथे।" विशेषतथा मंदी कन्द मूल फल पत्र किराणेका सामान चांदी पारा मोटे अन्न (मोठ, बाजरा मक्की ज्वार चने अरहर ग्वार. कोदों आदि) तथा घासमें मंदी आवेगी।

इसी दिन श्रवण नक्षत्रमें सायं नव चन्द्रोदय हो रहा है, जो बुध युक्त है। मंदी कारक है। अखरोट मघा सुपारी आदि किराणेका सामान, तुष वाले अन्न (चावल गेहूँ चना मसूर आदि) चांदी और रुईमें मंदी हो।

किसी भी मासके स्पष्ट जाननेके लिए जवाबी पत्र द्वारा फीसका निश्चय कर लेना चाहिए।

सदुपदेश

आजकलके शिक्षित लोग प्रगतिको अच्छा मानते हैं। किन्तु प्रगतिका लक्ष्य निश्चित नहीं कर पाते हैं। लक्ष्य-हीन प्रगति विनाशका ही नामान्तर है। वास्तवमें नरकी प्रगतिका लक्ष्य नारायण है। जीवकी प्रगतिका लक्ष्य परमात्मा है। उससे बिछुड़ जाना ही पतन या नरक है। थोड़ा थोड़ा परिवर्तन प्रति १० वर्षमें करते रहोगे तो कुछ वर्षोंमें आर्य जाति न मालूम क्याकी क्या बन जाएगी। अपने सिद्धांत पर अटल रहो।

गुड़, सरसों, रुई, शेयर, मटर, गवार, अलसी, आदिके

❀ अनुभूत चांस ❀

[ले०—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

गुड़

ता० २५ अक्टूबर से ता० २६ तक तेज रहेगा।

ता० ३० अक्टूबर से ता० २ नवम्बर तक घटा-बढ़ी।

ता० ३-४ नवम्बर तेजीका रुख रहेगा।

ता० ५ से ८ तक मन्देके झटके लगेंगे।

ता० ६ से १५ तक मार्केट तेज रहेगी।

ता० १६ से १९ तक उतार चढ़ाव, रुख तेजी।

ता० २० से २४ तक मन्देकी लहरें चलेंगी।

ता० २५ से २६ तक घटा-बढ़ी, रुख मन्दा।

ता० ३० नवम्बर तथा १ दिसम्बर मार्केट तेज।

ता० २ से ५ दिसम्बर तक मन्दा होगा।

ता० ६-७ घटा-बढ़ी रहेगी।

ता० ८ से १५ तक मन्देकी लाइन चलेगी।

ता० १६ से २० तक काफी उतार चढ़ाव।

ता० २१-२२ तेजी साधारणतया रहेगी।

ता० २३ से २४ तक तेजीकी खेल होगी।

ता० २६ से ३० तक प्रथम मंदा फिर तेज।

ता० ३१ दिसम्बर से ता० ५ जनवरी तक तेजीकी तूती बोल उठेगी।

ता० ६ से १५ तक घटा-बढ़ी, रुख तेज।

ता० १६ से १८ जनवरी तक साधारण मन्दा।

ता० १९ जनवरीके पश्चात् तेजीकी ज्योति खूब जगमगा उठेगी।

सूचना—ग्रहस्थित्यनुसार आकस्मिक दुर्घटनाओंके हेतु ता० २८ दिसम्बरसे देखा-देखी समस्त पदार्थोंमें महर्घताकी संभावना पाई जाती है। अतः उपरोक्त तिथि क्रमानुसार मटर, गवारा, बाजरा, अलसी, चने आदिमें भी ऐसी ही विचार-धाराका संचार कर लेना चाहिये, तथा यह भी बात भुलाने योग्य न होगी, कि ता० २६ दिसम्बरसे ता० १५ जनवरी तक १॥) २) तेजी आने की संभावना है।

सरसों

ता० २६-२७ अक्टूबरको मार्केट तेज होगी।

ता० २८ से १ नवम्बर तक मन्दी रहेगी।

ता० २ से ६ ,, तक तेज।

ता० ७ से ९ ,, तक घटा-बढ़ी।

ता० १० से १४ ,, तक तेज।

ता० १५ से १९ ,, तक मन्दी।

ता० २० से २६ ,, तक तेज।

ता० २७ से २८ ,, को मन्दी।

ता० २९ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक घटा-बढ़ी।

ता० ५ से ७ दिसम्बर तक तेजी।

ता० ८ से १० दिसम्बर तक मार्केटमें घबराहट।

ता० ११ से १६ दिसम्बर तक मन्दी।

ता० १७ से २० दिसम्बर तक तेजी।

ता० २१ से २५ दिसम्बर तक मन्दी।

ता० २६ दिसम्बर से १ जनवरी तक तेजी।

ता० २ से ४ जनवरी तक मन्दी।

ता० ५-६ जनवरी घटाबढ़ी रहेगी।

ता० ७ से १२ जनवरी तक उतार चढ़ाव, रुख तेज।

ता० १८ से २१ जनवरी तक मन्दी रहेगी।

ता० २२ जनवरीके बाद मार्केट तेजीका ही चलेगा।

मार्केटमें १६ दिसम्बरके पश्चात् २३ जनवरी तक २॥) ३) तेजी आनेकी संभावना है।

रुई शेयर्ज

ता० २६ से ३० अक्तूबर तक मार्केटमें काफी उतार चढ़ाव रहेंगे, परन्तु भाव बाजारका रुख तेजीकी ओर ही रहेगा।

ता० ३१ अक्तूबर से ५ नवम्बर तक मार्केटमें तेजी की तूफानी लहरें भाग निकलेंगी।

ता० ६ से १३ नवम्बर तक मन्दीके झटकोंकी भरसक भरमार रहेगी।

ता० १४ से १८ नवम्बर तक उतार चढ़ाव काफी जोरों पर रहेंगे। रुख तेज रहेगा।

ता० १९ से २३ नवम्बर तक मन्दीकी कोयल बोलेगी। तेजीका नाम मात्र रहेगा।

ता० २४ से ३० नवम्बर तक मार्केटमें तेजीकी बिजली चमक उठेगी।

ता० १ से ४ दिसम्बर तक घटा-बढ़ी होने पर भी रुख तेज ही होगा।

ता० ५ से ६ दिसम्बर तक मन्दीका बोल-बाला रहेगा।

ता० १० से १५ दिसम्बर तक तेजी अस्थायी रहेगी, मार्केट मन्देके बहावमें बह निकलेगा।

ता० १७ दिसम्बर से ४ जनवरी १९५६ तक मार्केट में तेजीकी ज्वाला भड़क उठेगी।

ता० ५ से १२ जनवरी तक मन्दीका साम्राज्य छा जावेगा।

ता० १३ से २४ जनवरी तक दोनों ओर से खूब जोर लगेगा, परन्तु अन्तिम विजयकी पताका तेजीके हाथ ही दिखाई देगी।

सावधान--रुई शेयर्जके व्यापारियोंको इस सुनहले चांसके लिए सर्वथा सावधान हो जाना चाहिए। क्योंकि ऐसे चांस बार-बार हाथ नहीं आया करते। प्रत्युत कई वर्षों में एक आध बार ही हाथ लगते हैं। हमारे विचारमें ऐसे सुनहले चांसमें १०० टकेकी तेजीका आ जाना भी कोई अतिशयोक्ति न होगी।

भविष्यवाणीके कसौटी पर उतारु होने से पत्र-व्यवहार संपादक "श्रीस्वाध्याय" सोलन द्वारा करना होगा।

❀ रुई सोना चांदीकी अनुभूत रिपोर्ट ❀

[ले०—ज्योतिर्भूषण श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा]

(१) पहला सप्ताह—

सम्वत् २०१२ आश्विन शुक्ला १० बुधवार ता० २६ अक्टूबरसे ३१ अक्टूबर तक साधारण तेजी रहेगी, परन्तु सब दिन नहीं रहेगी। ता० २६-२९ और ३१ तेज। ता० २७-२८ को घटबढ़ या मन्दी रहेगी।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता० १ से ६ नवम्बर तक घटबढ़ रहेगी क्योंकि यहां पर जगत्में उत्पात रहेगा, इसलिए दुतरफा लगाना अच्छा है। पूर्व दक्षिणमें भूकम्प या अति वृष्टिसे जन धनकी हानि होगी। ता० १ को घटबढ़ ता० २ को तेजी, ता० ३-४ को दोतरफा लगावें। ता० ५ को तेजी १२ या २ बजेसे होगी।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० ७ से ११ नवम्बर तक सोना तो मन्दा नहीं रहेगा, और वस्तु मन्दी। ता० ७ या ८ को तेजी हो वहीं पर बेचो। ता० ९ को मन्दी होके तेजी होगी, ता० १०-११ और १२ में दो दिन अच्छी मन्दी रहेगी, आगे ईश्वर जाने।

(नोट) दीपावलीका पूजन कोई कहते हैं सिंह लग्नमें, कोई कहते हैं वृष लग्न अच्छा रहता है, परन्तु यह केवल भ्रम है। दीपावली पूजन अमावस्यामें होना श्रेष्ठ है और कोई लग्न नहीं होता है। इस दिन वैसे सारी रात्री ही मांके पूजनेकी होती है, इस वर्ष गोधूली लग्नमें पूजना ही श्रेष्ठ है।

(४) चौथा सप्ताह— ता० १५ से २२ नवम्बर तक हरेक व्यापारमें अनेकानेक उत्पात होते रहेंगे। इस सप्ताहका नजराना लगाना बहुत अच्छा है। घट बढ़का राज्य है। ता० १५-१६-१७ दोतरफा लगावें। ता० १६ को मन्दी होके तेज होगी। ता० १७ को तेजी खुलके मन्दी होगी। ता० १८ को घट बढ़ मन्देसे तेजी होगी। ता० २१ को तेज होके मन्दी होगी। ता० २२ को घटबढ़के तेजी।

(५) पांचवां सप्ताह—

ता० २३ से २९ नवम्बर तक बढ़े भाव बेचो, जनरल ध्यान मन्दा है। यहां पर शेयर और तांबामें तेजी, शेयर अवश्य तेज होंगे। ता० २५-२६ में एक अच्छी मन्दी।

ता० २६ को मन्दी।

(६) छठा सप्ताह—

ता० १ से ७ दिसम्बर तक अच्छी तेजीकी सम्भावना है। ता० ३० नवम्बरको या १ दिसम्बरको मन्दी होगी, उस मन्दीमें खरीदो, यहाँ पर शनिका उदय हो रहा है। इसलिए हमारी लिखी हुई १-२ दिन नहीं मिले तो विश्वास मत करो। ता० ३-४-७ अवश्य तेजी। ता० ५ को नजराना लगावें।

(७) सातवां सप्ताह—

ता० ८ से १४ दिसम्बर तक मन्दीकी पूर्ण संभावना है। ता० ८ को सायंकाल बन्द बाजार मन्दी रहे तो निश्चय मन्दी है। ता० १५ नवम्बरसे १५ दिसम्बर तककी स्पेशल रिपोर्ट कार्यालयसे मंगाना अच्छा रहेगा, क्योंकि इस १ मासमें दो ग्रहण होने वाले हैं। रुईकी मन्दीका चान्स अच्छा है। ता० ८-१०-१२-१४ मन्दी।

(८) आठवां सप्ताह—

ता० १५ से २१ दिसम्बर तक घटबढ़से तेजी, ता० १५-१६ में मन्दी होगी वहां खरीदो। ता० १७-१८-१६ अच्छी तेजी होगी। ता० २०को घटबढ़ होगी, ता० २१तेज।

(९) नौवां सप्ताह—

ता० २२ से २६ दिसम्बर तक साधारण घटबढ़ जनरल ध्यान मन्दीका है। ता० २२-२३ मन्दी। ता० २४-२६ तेज। ता० २७-२६ मन्दी। ता० २८ को तेज खुलके मन्दी होगी।

(१०) दशवां सप्ताह

ता० ३० दिसम्बरसे ५ जनवरी सन् ५६ तक सोना चान्दी में तेजी। रुई में ता० २-३-४ में एक मन्दी का पूरा झटका लगेगा, उस मन्दी में खरीदो, हाथकी हाथ तेजी होगी, ता० ३०-३१ घटबढ से तेज। ता० २-३ चान्दीमें १ अवश्य तेजी।

(११) ग्यारहवां सप्ताह—

ता० ६ से १२ जनवरी तक तेजी, जिसमें ता०१२-१३ में अच्छी मन्दी की सम्भावना है। ता० ११ तक तेजी सुल्टा लेना चाहिए। ता० ७-६ अच्छी तेजी, ता० १० को घटबढ रहेगा।

(१२) बारहवां सप्ताह—

ता० १४ से २३ जनवरी तक अचूक तेजीका चान्स है। ता० १४ को तेजी, ता० १६-१७ को घटबढ अच्छी है, दोतरफा लगाना अच्छा है। ता० १८ को तेजी, ता० १६ को सायंकाल बन्द बाजार तेजी रहे तो२३तक अचूक तेजी। यदि इस दिन तेजी नहीं रहे तो तेजीका विश्वास मत करो। आगे ईश्वरकी गति वही जाने।

वृश्चिकके शनिका संक्षिप्त फल

[ले०—श्री पं० कालीचरणजी शर्मा ज्योतिर्भूषण]

आजके युगमें विदेशी शिक्षासे प्रभावित सज्जन ग्रहोंको न मानने वाले भी शनिके प्रतिकूल समयमें ज्योतिषियों द्वारा शनिके कोपको शान्त करनेका उपाय पूछते और देख जाते हैं। इसका विस्तृत उल्लेख आगामी अंकमें पढ़नेको मिलेगा।

वृश्चिकका शनि धन सम्पन्नोंकी शक्तिका ह्रास करेगा। जिसका परिणाम धन कुबेरोंके कोष (खजाने) खाली करेगा। देशके बड़े बड़े लोक वे चाहे नेतृत्व करने वाले हों चाहे धनिक वर्गमें से हों इनमें से किसीको धन संकटमें किसीको प्राण संकटमें आना पड़ेगा। दूसरे शब्दोंमें अपनेको बड़े मानने वालोंको वृश्चिकस्थ शनि कष्ट दायक जाएगा।

वृश्चिकका शनि इस वर्ष आगामी गेहूंकी उत्पत्तिमें विघ्न करेगा, पर श० रा० का योग सदा अन्नके भाव सस्ते ही रखता आया है, किसी भी कारणको लेकर अन्नकी समर्घता (मंदी) बनी रहेगी।

रुई चांदीके भावको घटवढ़के साथ एक बार घटना पड़ेगा। घटनेका आंकड़ा निश्चित लिखना उचित नहीं समझते। चांदीके भाव वृश्चिकका शनि सदा मंदा करता आया है, अनुमान २०) २२) की मंदी क्रमात् होगी।

वृश्चिक पर शनि राहु मंगलका योग है, तीनों पापी हैं, पाप ग्रहके क्षेत्रमें है इसका फल पाप गृहोंकी इच्छानुसार पाप फल होगा। पौष शुदी १५ बाद रुईमें अचानक अच्छी तेजी आ जाएगी।

व्यापार पर स्वरोंका अनुभव

[लेखक :—श्री पं० श्यामसुन्दरजी ज्योतिषी]

गताङ्कमें अपने व्यापारी बन्धुओंको मैंने सूचना दी थी कि अगले अंकमें त्रैमासिक भविष्य प्रकाशित करूंगा। स्वरशास्त्रका गणितसे निर्णय करनेके साथ समय समय पर प्रत्यक्ष रूपसे भी स्वरको देखना पड़ता है। इस कारणसे एक बारमें एक मासके अधिकका ठोस निर्णय हो सकना कठिन है। तीन मासका निर्णय त्रैमासिक प्रत्यक्ष स्वरके अनुभव द्वारा होता है। इस बार एक अत्यन्त व्यथाजनक दुर्घटनाके कारण त्रैमासिक स्वरका प्रत्यक्ष निर्णय न हो सका। एतदर्थ एक मासका निर्णय ही दिया जा रहा है। भविष्यमें त्रैमासिक निर्णय अवश्य देंगे। तथा एक मासके भविष्यके स्पेशल चांस इस बार ८० प्रतिशत अवश्य ठीक होने चाहिये ऐसी आशा है। हम पर व्यापारके लाभ हानिका उत्तरदायित्व नहीं। इसके पश्चात् श्रीस्वाध्यायके ग्राहकोंको चांस फ्री देंगे। लाभ होने पर आपका जो कर्तव्य है आप उसे पूरा करेंगे।

२७ अक्तूबर—आज हर चीज़ गुवार-गुड़ तेज खुलेंगे लेकिन बादमें जोरसे घटेंगे। बंद होते वक्त मंदी धमाकेसे आयगी।

२८ अक्तूबर—आज भी पहले जोरसे घटेगा। बंद होते वक्त स्टेडी होगा।

२९ अक्तूबर—जबर्दस्त तेजी गुड़, चना, रुई, सरसों, चांदीमें आयगी। अच्छी तेजी का दिन है।

३१ अक्तूबर—बाजार सीधी मंदीकी तरफ चलेंगे। कहीं तेजी का रियेक्शन आये तो बेचो—बंद होते वक्त तेज।

१ नवम्बर—गुवार, चना, गुड़, चांदी जोरसे घटेगी।

२ नवम्बर—तेजीका कोई रियेक्शन चाहे आ जाये लाइन मंदी की ही है।

३ नवम्बर—तेजीके उछाले आयंगे। चांदी, चना, गुवार, खास तौरसे बढ़ेंगे।

४ नवम्बर—बाजार उछाले खाकर बैठ जायेंगे।

५ नवम्बर—पहिले मंदी होगी। हर चीज मध्यान्हके पश्चात् भड़क उठेंगी।

७ नवम्बर—आज मंदा खुलेगा। सीधी जोरदार मंदी आयगी। तेजीके रियेक्शनमें बेचो।

८ नवम्बर—आज बाजारोंमें प्रथम मंदीका अच्छा जोर रहेगा। बादमें घटबढ़से स्टेडी।

९ नवम्बर—मंदीकी आशा है। हर चीज घटेगी।

१० नवम्बर—मंदी रहेगी। गुवार चना जोरसे घटेगा।

११ नवम्बर—मामूली उछालोंके साथ मंदी रहेगी।

१२ नवम्बर—उछाले आकर मंदीका ही जोर रहेगा।

१३ नवम्बर—मध्यान्हसे बाजारोंमें आग लग जायगी।

१४ नवम्बर—मंदीका दिन है। अच्छी मंदी आयगी।

१५ नवम्बर—बाजार भड़केंगे। शामको बेचो।

१६ नवम्बर—अच्छी मंदीका दिन है।

१७ नवम्बर—उछालेमें बेचो। शामको खरीदो।

१८ नवम्बर—उछालासे अच्छी तेजी आयगी।

१९ नवम्बर—मामूली मंदी खुलते आयगी वहां खरीदो आगे तेजी चलेगी।

२० नवम्बर—तेजीका शानदार उछाला आयेगा। गुड़, गुवार ज्यादा बढ़ेगा।

२१ नवम्बर—आज मंदी रहेगी। पर बाजार टूटेंगे।

२२ नवम्बर—घटबढ़ जोरदार रहेगी। उछालेमें बेचो।

२३ नवम्बर—बाजार मामूली मंदीका रियेक्शन लेकर भड़क उठेंगे। अच्छी तेजी हर चीजमें।

२४ नवम्बर—बाजार टूटेंगे। तेजीके रियेक्शनमें बेचो।

२५ नवम्बर—घटबढ़ चलेगी। तेजीमें बेचो, मंदी ज्यादा है।

२६ नवम्बर—बाजारोंमें आग लगेगी। तेजी जोरदार है।

२८ नवम्बर—उछाले बेचो। मंदीका पावर बढ़ रहा है।

२९ नवम्बर—बाजार मामूली सा उछाला खाकर पानी पानी हो जायेंगे।

विशेष अनुभव

नवम्बर ता० १४ से १५ की शाम तक यदि बाजार नरम रहें तो १५ दिन यानी २९-३० नवम्बर तक मंदी

चांदी सोनेका त्रैमासिक भविष्य

[ले०—राजवैद्य डा० अमरदत्त मिश्र एच. एम. डी. एस. एस्ट्रोलोजर]

'श्रीस्वाध्याय' आज दैवज्ञके रूपमें व्यापापार क्षेत्रको संचालित Govern कर रहा है—और व्यापारी वर्ग भी इसकी सत्तासे प्रसन्न ही प्रतीत हो रहे हैं, अतः इस प्रसन्नता का सच्चा स्वरूप तब ही माना जावेगा जब कि प्रत्येक व्यापारी ग्राहक एक एक ग्राहक बढ़ाकर गुरु दक्षिणाके रूप में अपनी कर्तव्य निष्ठाका पालन करते हुए दैवज्ञ दृष्टिका चमत्कार प्राप्त करते हुये संसारके कल्याणार्थ अपनी सद्भावनाका परिचय अवश्य ही देवें ।

नवम्बर १९५५ ई०

मास नवम्बर १९५५ में निम्नलिखित ग्रह योग हैं—सूर्य सायन वृश्चिकमें २२ नवम्बर १९५५ तक, फिर आगे धनुःमें २३ नवम्बरको प्रवेश करता है, यह तेजी कारक है, तथा घटा बढ़ी करता है यह सोनेका अधिपति है। मं० तुलामें है यह सोने पर भी प्रभाव रखता है और तुला मंदी कारक राशिमें है।

बुध ६ नवम्बर तक तुलामें रहेगा यह चांदीको मंदी करने वाला है, पुनः यह वृश्चिक राशिमें प्रवेश करता है, शीघ्र गतिमें है यह भी चांदीको तेज करेगा, पुनः २७ नवम्बरको धनुमें प्रवेश करता है यह द्विस्वभावराशि हैं यह घटाबढ़ी कराती है। शुक्र वृश्चिकमें है और ६ नवम्बरको धनुः में प्रवेश करता है यह प्रथम सप्ताहमें तेजी कारक रहेगा पुनः घटाबढ़ी करेगा। धनुः में आनेके बाद गुरु सिंह राशिके अंतिम नवांशमें हैं, १६ नवम्बर तक रहेगा, पुनः १७ नवम्बरसे गुरु सायन कन्यामें प्रवेश करता है। १७ से बाजारकी टौन बदलेगी यह लम्बी तेजी मंदी लाने वाला ग्रह है। यह ही चांदीमें परिवर्तन लावेगा, प्रारम्भमें यह कन्याके प्रथम नवांश में है इसके प्रभावसे चांदीका बाजार (मकर) में गुरु नीचांशस्थ होनेसे काफी गड़बड़ करेगा।

शनि वृश्चिक राशिमें है तेजी कारक राशि है यह बाजारको मन्दीसे रोकता है, कभी कभी तेजी भी करता है, यह लम्बी लाइनका अधिपति है। इस मासमें ७ नवम्बर को बुधगुरुकी सेक्स्टाइल हो रही है। यह भी चान्दीके बाजारमें परिवर्तन लावेगी, इस मासमें भी अन्तमें गुरु मंगलकी सेक्सटायल हो रही है यह चांदीमें नवम्बर मासके अन्तिम सप्ताहमें अच्छा परिवर्तन लावेगी। जनरल तौरसे यह मास परिवर्तनकारी ही रहेगा, चान्दीका बाजार इस मास में अच्छे रूपमें परिवर्तन हो ऐसी निश्चित संभाव्य स्थिति है। विशेष जानकारीके लिए हमारी रिपोर्ट मंगावें मूल्य ३३) रु० प्रति वस्तु प्रति मास। रुपया एडवान्स भेजने पर रिपोर्ट भेजी जाती है। वी० पी० से भेजनेका नियम नहीं है।

दिसम्बर १९५५ ई०

इस मासमें निम्नलिखित ग्रहयोग हैं और उनका चांदी पर कैसा प्रभाव ज्योतिष शास्त्रके आधार पर होगा। तद्वत् फल "श्रीस्वाध्याय" के पाठकोंके लाभार्थ वर्णित किया जाता है। यथा सूर्य धनुः राशिमें है यह द्विस्वभाव राशि है, यह घटाबढी करने वाली है, इसके साथ बुध भी धनुःमें ही है यह दोनों ग्रह चान्दीमें परिवर्तन करेंगे, बाजार को उठाने वाले हैं, मन्दीको रोकते हैं तेजी कारक है। इन्हें पंचम दृष्टिसे हर्शल देखता है परन्तु यह तेजीका प्रतीक अवश्य ही है। हर्शल कर्कको छोड़कर सिंहमें आया है। यह जब तक सिंहमें रहेगा तब तक सब चीजोंको तो एक बार मन्दी करेगा ही, किन्तु कृषिकी वस्तुओंको तो अवश्य ही मन्दी कर देगा और दिनोंदिन मकानोंका मूल्य भी कम होता जावेगा। शनि वृश्चिकमें है यह तेजीकारक है, इस पर किसीकी दृष्टि नहीं है और इसकी तेजी लम्बे समय तक प्रतीक्षा कराती है। गुरु कन्यामें वक्री हो रहा है यह मन्दी अवश्य लावेगा। यह निश्चित मन्दीका द्योतक है। शुक्र

रहेगी। यदि तेज रहें तो तेजी रहेगी। यह जनरल १५ दिनकी लाइन है। अनुभवसे यह एक नियम पिछले रिकार्ड पर बड़ा चमत्कारी प्रमाणित हो चुका है।

——

मकरमें है यह तेजीकारक राशि है । यह मन्दीकी टौनको लाता है किन्तु मामूली Slighty । मंगल वृश्चिक राशि में यह तेजीकारक है Bullion Market में। सूर्य २३ को पुनः मकरमें आता है और बुध १६ को यह दोनों जब साथ होते हैं तबसे ही मन्दी व्यापेगी, गुरु भी वक्री होता है यह भी चांदीको मन्दी करेगा। इस मासमें भी तेजी मन्दीका दौरदौरा चलता ही रहेगा। प्रारम्भमें ही चान्दीमें तेजीका चान्स है, मंगल हर्शल चतुर्थ हो रहा है। यह अवश्य ही चान्दीको तेज करेगा । पहलीसे ही तेजी समझें २-३ दिन तक। १० को सूर्य बुधकी युति होती है यह भी तेजीकारक है। २) ३) की तेजी सम्भावित है और २४ को शुक्र हर्शल सप्तम हो रही है यह चान्दीके बाजार में मन्दी लावेगी, घटाबढीके साथ, अतः बाजार चान्दीका इस प्रकार चलेगा। विशेष जानकारीके लिए हमारी रिपोर्ट मंगावें श्रीस्वाध्याय सदन सोलन द्वारा जिसका माहवारी ३५) रु० है यह एडवान्स भेज कर, वी० पी० से नहीं भेजी जाती है ।

जनवरी १९५६ ई०

इस मासकी रिपोर्ट पाठकोंको निरयन गणिताधार पर देता हूं। नवम्बर दिसम्बरकी सायन गणिताधार पर लिखी गई है और सदासे ही लेखक सायन गणिताधार पर ही रिपोर्ट प्रस्तुत करता आ रहा है, इस बार जनवरी १९५६ की रिपोर्ट निरयन मानसे सूर्य धनका, मंगल वृश्चिकका, बुध मकरका और शुक्र मकरका है, ये सब तेजीकारक हैं। गुरु सिंहका है यह चांदीको भी तेज करता है और लाल पदार्थोंको भी। शनि वृश्चिक राशिमें है यह चांदीको मन्दी करता है तथा दिल्लीमें राजनैतिक बड़ा तोफान उत्पन्न होनेकी सम्भावना है। ऐसा ज्योतिष शास्त्राधार बतलाता है, जनताको कष्ट होवे। राहु वृश्चिक राशिमें है यह भी चांदी को तेज ही करता है और यहां मंगल शनि और राहु तीनों वृश्चिक राशिमें हैं। इन तीनोंका मेल विशेष क्रान्तिकारी परिवर्तनका द्योतक है अतः यह १९५६ का जनवरी मास विशेष महत्व प्रद निकलेगा। व्यापारी क्षेत्रमें तो अच्छा परिवर्तन लावेगा ही किन्तु राजनैतिक परिवर्तनोंका भी पूरा पूरा द्योतक है। इस मासमें ३) ४) रु० की तेजी संभावित है। यहां गुरुदेव बक्री भी चल रहे हैं यह भी चांदीको २) ४) रु० तेज करता है, अतः यह निश्चित हो जाता है कि इस मासमें बहुमतमें ग्रह तेजीमें हैं अतः यह मास अच्छी तेजीका है। विशेष जानकारीके लिए हमारी रिपोर्ट मंगा लें जिसमें तारीख वार तेजी मन्दीका पूरा पूरा हाल मिलेगा वी० पी० से रिपोर्ट नहीं भेजी जाती है।

त्रैमासिक व्यापार-रुख

रुई चांदी सोना अलसी एरण्डा शेयर गुड़ गवार मटर बारदानाकी तेजी मंदी

ता० २६ अक्टूबर ५५ से ३१ जनवरी १९५६ तक

[ले०—प्रो० श्रीगणेश, विद्यासागर, विश्वनाथ शर्मा दैवज्ञरत्न]

अक्टूबर १९५५

ता० २६ बुधवार—आज बाजार घटेगा चांदी ॥।) शेयर गुड़ गुवार ≡)।) रुई ५) ७) मंदी।

ता० २७ गुरुवार—कल नहीं तो आज बाजारोंमें साधारण मंदी ही आकर रहेगी।

ता० २८ शुक्रवार—हर घटे भाव खरीदो रुई७) ८) शेयर।) ।≈) गुड़ गुवार ≈)॥ तेज।

ता० २९ शनिवार—आज साधारण मन्दी बाजार में आयगी, इस मन्दी में जो खरीदेगा वह कमायेगा।

ता० ३१ चन्द्रवार—आजसे ग्रहगणना तेजीकी तरफ चली जा रही है, भाव अवश्य बढ़ जायेंगे।

नवम्बर १९५५

ता० १ से ५ तक बाजारोंमें तेजी आयगी, चांदी ३) ३॥) सुवर्ण शेयर ॥।) १) गुड़ गुवार मटर ॥≈)

॥) बारदाना सरसों अलसी २) २॥) रुई १५) १८) कालीमिर्च ३०) ३५)की तेजी पकड़ ले, भाव बढ़ते ही चले जायेगें। ता० ६,७,को चांदी, गुड़ गुवार, मटरके समान भाव रहेगें। ता० ८,६, को आये उछाले मालका बेचाण करो यहां चांदी १।) १॥) आईरन ॥) ॥=) सरसों अलसी, मूंगफली॥)१)गुड़ गुवार मटर।)।–)मन्दे हो जायेगें। ता० १०को आप हर घटे भाव खरीद चालू कर दें। और उछालेमें नफा खाते रहें,देखो ता०१६को सांयकाल तक चांदी३)३॥) आईरन सुवर्ण१) १।))गुड़ गुवार मटर ॥) ॥=) अलसी सरसों मूंगफली, बारदाना १॥) २) रुई ३०) ३५) कालीमिर्च ४०) ४५) तक तेजी पकड़ लेगी हर घटे भाव खरीद उछाले में नफा खाने वाला जीतमें रहेगा।

ता० १७को आये उछाले बेचो और ता० १८को बंद बाजार तक मंदे बाजार रहेगें, जिस वस्तुमें अधिक मंदीका झटका लगे उसकी खरीद करो, ता० १६से २१ तक अच्छी तेजी आजायगी यहां चांदी २) २॥) अरंडा १॥) २) मूंगफली सरसों अलसी गुड़ गुवार मटर डिफर्ड, आईरन, इत्यादि समस्त बाजारोंमें तेजीका उछाला आयेगा। ता० २१को सांय ४ बजेसे मालका बेचाण बोल दो और ता० २६को बंद बाजार तक चांदी ४) ४॥) शेयर सुवर्ण १।) १॥) गुड़ गुवार मटर ॥) १) रुई कालीमिर्च २५) ३०) तथा तेल पदार्थ भी मंदी पकड़ लेगें, इस मंदीका शान्तिसे उपयोग करो। ता० २७ से ३० तक बाजार दोनों तरफ चलता हुआ साधारण तेजी पकड़ेगा

दिसम्बर १९५५

ता० १ को खुलते बाजार खरीदो यहां चांदी रुई पर भारी खरीद आयेगी, ता० २ को बंद बाजार तक चांदी १॥) २) रुई १०) १२) अलसी ऐरण्डा मूंगफली सरसों ॥) १) गुड़ मटर गुवार आईरन ॥) ॥) तेज हो जायेगें। ता० ११ को बंद बाजार तक बाजारोंमें मंदी चल पड़ेगी, ता० ३ को खुलते बाजार मालका बेचाण चालू कर दो यहां चांदी ५) ६) एरण्डा ८) १०) रुई ४०) ४५) कालीमिर्च ५५) ६०) सुवर्ण शेयर गुड़ गुवार मटर १) १।) तैल पदार्थोंमें भी २) २॥) की मंदी यहां आनी चाहिये, ता० १२-१३ को बाजारोंमें तेजीका उछाला आयेगा। इस तेजीमें फिर मालका बेचाण करो। ता० १४, १५, १६- इन तीनों दिन फिर बाजार मंदे हो जायेंगे। ता० १७, १८ इन दोनों दिनोंमें फिर किरतबी तेजी सब बाजारोंमें आयेगी, भाव उछलेंगे परन्तु बाजार ठहरेंगे नहीं।

ता० १६ से फिर बाजार मंदीका रास्ता पकड़ेंगे यहां मन्दी समस्त बाजारोंमें अच्छी आयेगी, ऐसे समय आंकड़े लिखना सूर्यको दीपक दिखाना है–यह मंदी ता० २३ को सायंकाल तक अच्छी चलेगी। ता० २४ को बाजार संभल जायंगे। और ता० २६ तक जितनी पीछेकी कलममें ता० १६ से २३ तक जितनी मन्दी जिस जिस वस्तुमें आवेगी— उतनी ही तेजी ता० २४ से २६ तक आ जायेगी। चतुर को संकेत काफी होता है। अधिक बात जानना हो तो एक मासका 'व्यापार-रुख' श्रीस्वाध्यायका' एक नया ग्राहक बनाकर फ्री मंगवा लें। ता० ३०, ३१, को बाजारोंमें साधारण मंदी रहेगी।

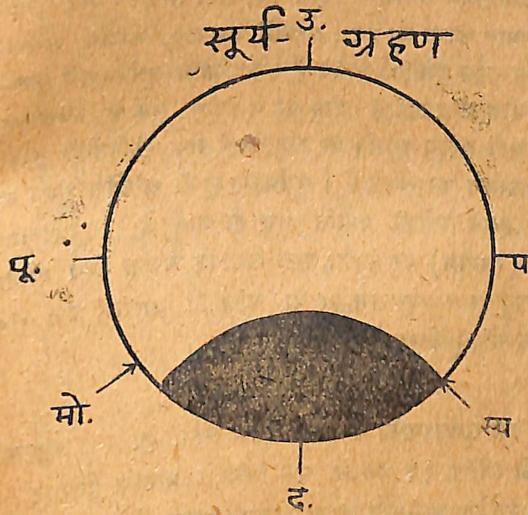
जनवरी १९५६

ता० १, २, इन दोनों दिनोंमें बाजार भाव समान पड़े रहेंगे, नजराने हजम हो जायेंगे। ता० ३ से ५ को बंद बाजार तक चांदी, सुवर्ण, रुई, शेयर अरंडामें मंदी आयेगी। ता० ६ को प्रातः से ता० १० तक चांदी २॥) ३) अरंडा ३) ४) गुवार, मटर, गुड़, आइरन ॥) ॥) अलसी सरसों मूंगफली बारदाना १॥) २) की तेजी पकड़ लेंगे। रुई कालीमिर्च ३०) ३५) तक बढ़ जायेगी। ता० ११ से १७ तक चांदी २) २॥) में चक्कर लगाती रहेगी। ३, ४, चक्कर चांदीको लगाने पड़ेंगे, इसी प्रकार सब वस्तुएँ भारी घटाबढ़ी में चलेंगी। बाजारोंकी स्थिति डावां-डोल रहेगी, नजराने हजम होते रहेंगे। तेजी मंदी अच्छी चलती रहेगी। ता० १८ से २१ तक बाजार अच्छे मन्दे हो जायेंगे, यहां रुई २५) ३०) चांदी २) २॥) टूटेगी। जब बड़ी वस्तुओंमें ही मन्दी आयेगी तब छोटी वस्तुओंमें तेजी कैसे ठहरेगी, अपनी इज्जत अनुसार सबमें मन्दी आयेगी।

ता० २२ से २५ तक फिर तेजीका उछाला आयेगा, ता० २६ को आये उछाले मालका बेचान चालू कर देना। ता० ३१ तक धीरे धीरे मन्दी आ जायेगी। रुई ४०) ४५) कालीमिर्च ५५) ६०) चांदी ऐरंडा ३) ३॥) आईरन गुड़, गुवार, मटर, १) १।) अलसी सरसों मूंगफली बारदाना १॥) २) की मन्दी पकड़ लेगी।

सूर्यग्रहणका संसार पर प्रभाव

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]



मार्गशीर्ष कृष्णा अमावस्या बुधवार ता० १४ दिसम्बर १९५५ ई० को सम्पूर्ण भारतमें खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, अरब, चीन, जापान, रशिया, ब्रह्मदेश, जावा, सुमात्रा, मिश्र, अरब, टर्की, दक्षिण पूर्वी यूरोप, हिन्दचीन, हिन्देशिया, पूर्वी अफ्रीका, एबीसीनिया, मेडागास्कर, युगाण्डा, बेल्जियम, केनिया, टांगानीका, डच न्यूगिनी, पूर्वी जर्मनी, प्रशांत महासागरके दक्षिण पश्चिमी भाग और हिन्द महासागरमें यह सूर्यग्रहण न्यूनाधिक रूपमें खण्डग्रास ही दिखाई देगा। श्रीलंकासे दक्षिणकी ओर ५ से निरक्षस्थान [शून्य अक्षांश] तक हिन्दमहासागरमें और पूर्वमें बैंकाक [श्याम] के दक्षिणी भाग ताइनान तथा पश्चिममें एंग्लो इजिप्शीयन सूडान एवं ब्रिटिश सुमालीलैंडमें यह सूर्यग्रहण ३ मिनट तक कङ्कणाकृतिरूपमें दिखाई देगा। मास्को और लेनिनग्राडसे दक्षिणमें रोम (इटली) से सिसलीके मध्यवर्ती पूर्वी यूरोपमें यह ग्रहण सूर्योदयके समय दिखाई देगा। कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहणका विशेष पर्व माना जाता है। इस अवसर पर वहां धार्मिक जनताका विशाल मेला भी लगता है।

अतः यहां पहले कुरुक्षेत्रका स्पर्श मोक्षकाल स्टैंडर्ड टाइमके अनुसार नीचे दिया जा रहा है:—

	घं०	मि०
स्पर्श	११	२२
मध्य	१२	३५
मोक्ष	२	३१

कुरुक्षेत्रमें कुल ग्रहण वा पर्वकाल ३ घण्टे १० मिनट का है। कुरुक्षेत्र और दिल्लीमें ग्रहण मध्यकालके समय ग्रास स्वरूप का चित्र ऊपर दिया है।

भारतके कुछ प्रमुख नगरोंमें इस सूर्यग्रहणका स्पर्श मोक्षकाल स्टैंडर्ड टाइमके अनुसार निम्नांकित है—

नगरनाम	स्पर्श	मोक्ष	नगरनाम	स्पर्श	मोक्ष
अम्बाला	११।२१	२।३३	अमृतसर	११।२०	२।२५
अजमेर	११।४	२।३५	अहमदाबाद	१०।४४	२।३०
अलवर	११।१४	२।३९	अलीगढ़	११।१५	२।४२
आकोला	१०।५६	२।४६	आगरा	११।२०	२।४२
इन्दौर	११।१	२।४३	उज्जैन	१०।५९	२।४२
उदयपुर मे.	१०।५४	२।३६	कलकत्ता	११।४२	३।१५
कानपुर	११।२३	२।४८	कोटा	१०।५९	२।३८
कोल्हापुर	१०।३९	२।४४	खम्भात	१०।४५	२।३०
ग्वालियर	११।१७	२।४३	गोधरा	१०।४४	२।३४
गोवा	१०।३५	२।४४	चित्तौड़गढ़	१०।५६	२।३५
जयपुर	११।१०	२।३८	जगन्नाथपुरी	११।२७	३।१०
जम्बू	११।१५	२।२०	जालन्धर	११।१८	२।२३
जामनगर	१०।३८	२।२४	जोधपुर	१०।५७	२।३१
द्वारका	१०।४२	२।२२	देहली	११।२१	२।४०
नासिक	१०।४३	२।३८	नागपुर	११।८	२।५०
नैनीताल	११।२१	२।४१	प्रयाग	११।२५	२।५४
पटियाला	११।१९	२।३१	पटना	११।३५	३।०
पूना	१०।४६	२।४१	बम्बई	१०।३४	२।३८
बनारस	११।३४	३।०	बड़ौदा	१०।३१	२।३६

बांसवाड़ा	१०।५१	२।३६	भड़ौंच	१०।४३	२।३३
भरतपुर	११।१६	२।४०	भावनगर	१०।३९	२।२९
भोपाल	११।३	२।४५	मसूरी	११।१६	२।३४
रत्नागिरी	१०।३६	२।४१	रायपुरम. प्र.	११।११	२।५७
राजकोट	१०।३८	२।२४	रांची	११।३०	१।१४
लखनऊ	११:२०	२।५०	लुधियाना	११।१६	२।२८
सूरत	१०।४२	२।४५	सोलन शि.	११ २५	२।३६
सोलापुर	१०।४५	२।४६	श्रीनगर का.	११।२५	२।२८
श्रीनगर गढ़	११।१६	२।३९	हरिद्वार	११।२४	२।४०
हैदराबाद	१०।५७	२।५२	——		

पाकिस्तान और अफगानिस्तानमें

	स्पर्श	मोक्ष		स्पर्श	मोक्ष
कराची	१०।३६	२।१०	क्वेटा	१०।४४	१।५८
कलात	१०।४०	२।०	काबुल	११।५	१।५६
कन्दहार	१०।४३	१।५०	चटागांग	११।५१	३।१८
चित्राल	११।१२	१।५७	ढाका	११।४९	३।१२
नोआखाली	११।५०	३।१६	पेशावर	११।७	२।३
मुल्तान	१०।५७	२।१२	रावलपिंडी	११।१९	२।५
लाहौर	११।१६	२।२५	——		

श्रीलंका और ब्रह्मदेश (बरमा)

	स्पर्श	मोक्ष		स्पर्श	मोक्ष
कोलम्बो	१०।४८	३।४	पेगु	११।५६	३।२१
प्रोम	११।५५	३।२०	मांडले	१२।०	३।२०
रंगून	११।५५	३।२२	——		

पूर्वी अफ्रीका

	स्पर्श	मोक्ष		स्पर्श	मोक्ष
कम्पाला	९।४५	१२।२०	जंगबार	९।५७	१२।३०
दारेसलाम	९।५८	१२।३०	नैरोबी	९।४८	१२।२९
मोम्बासा	९।५०	१२।३२	——		

सुदूर पूर्व

	स्पर्श	मोक्ष		स्पर्श	मोक्ष
बैंकाक	१२।५५	३।३०	सींगापुर	१२।४०	१५।१३
हांगकांग	१२।४६	४।०	——		

ग्रहणमें आवश्यक कर्तव्य

सूर्य चन्द्रमाका ग्रहण स्पर्श होते ही स्नान करके मन्त्र जप स्तोत्रपाठ वा भगवन्नाम संकीर्तनमें बैठ जाना चाहिए। मध्य कालमें हवन और मध्यके बाद जब ग्रहण कम होने लगे उस समय यथाशक्ति दान करे, तथा मोक्षके बाद पुनः शुद्ध स्नान करना चाहिए। ग्रहणमें जलपान, भोजन, शयन और मलमूत्र त्यागका निषेध है। जो लोग सूर्यग्रहणमें कुरु-क्षेत्र और चन्द्रग्रहणमें गंगा पर न पहुंच सकें वे स्थानीय तीर्थ नदी तड़ाग कूपादि पर स्नान एवं जप संकीर्तनके द्वारा पुण्योपार्जन कर सकते हैं। सूर्यग्रहण खुली आंखोंसे कभी न देखें ,इससे नेत्रोंकी ज्योति क्षीण हो जाती है। दूरवीक्षण यन्त्र (दूरबीन) पर काला वस्त्र लगाकर अथवा श्वेत शीशे [कांच] पर काजल लगाकर वा कांसीकी थालीमें जल भर कर उसमें सूर्यबिम्ब देखना चाहिए।

ग्रहणवेध वा सूतक

इस सूर्यग्रहणका वेध वा सूतक मार्ग. कृ. १४ मङ्गलवारको रात्रिके ११ बजकर २२ मिनटसे प्रारम्भ होगा।

राशिफल—यह ग्रहण ज्येष्ठा नक्षत्र और मेष सिंह वृश्चिक धनुः राशिवाले प्राणियोंको अरिष्टप्रद है। वृषभ, कर्क, तुला, मीन राशियोंको मध्यम और मिथुन, कन्या, मकर, कुम्भ राशिवालोंको शुभ फलकारक है।

संसार पर प्रभाव

मारवाड़,पुष्कर, सौराष्ट्र, आबू, नेपाल,काश्मीर,कौशल और पौण्ड्र देशवासियोंको आर्थिक संकट, चौर रोग दुर्भिक्षादि भय। चावल, चणा, तांबा, मोठ, बाजरा, लाल वस्त्र और सुपारी संग्रह करने वालोंको आगे ६ मास तक लाभ। शासकवर्ग, सैनिक, पराक्रमी, कुलीन, धनी, यशस्वी सज्जन पुरुष और सगर्भा स्त्रियों पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। चन्द्रग्रहणके १५ दिन बाद यह सूर्यग्रहण प्रजामें अनाचार व्यभिचार आर्थिक संकट, स्त्री पुरुषोंमें कलह बढ़ाने वाला है। यह सूर्यग्रहण शनिग्रस्त है और ग्रहणमध्यकालीन मीन लग्नसे लग्नेश राज्येश गुरु छठे और धनेशभाग्येश भौम अष्टम पड़ा है यह किसी राष्ट्रके पतन, महापुरुषकी मृत्यु कौर किसी धनी व्यक्तिके धन मान हानिका द्योतक है। यथा—

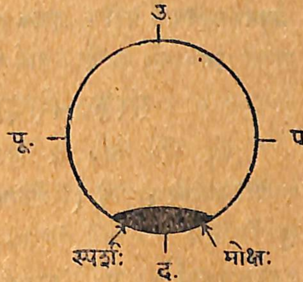
क्रूर संयुक्त सूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः ।
राष्ट्रभङ्गमितिप्राहुर्भर्गज्ञा मुनीश्वराः ॥

तृणधान्य गेहूँ चावल चणा उड़द मूंग धातुमात्र लोहा चांदी सोना तिलहन तैल पदार्थ रुई कपास ऊन और लाल तथा काले रंगकी प्रायः सभी वस्तुओंका भाव ३ मास तक तेज रहेगा ।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

कार्तिक शुक्ल १५ मंगलवार ता० २९ नवम्बर १९५५ को समस्त भारतमें खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होगा । पाकिस्तान अफगानिस्तान चीन जापान ईरान ईराक अरब रूस मिश्र अफ्रीका यूरोप एशिया आस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड उत्तरी कनाडा हिन्दमहासागर और प्रशांत महासागरमें भी यह चन्द्रग्रहण नीचेके चित्र जितना खण्ड ग्रास ही दिखाई देगा । दक्षिण अफ्रिकामें ग्रस्तोदय होगा अर्थात् ग्रहण लगा हुआ चन्द्रमा उदय होगा । भारतमें ग्रहण मध्यकालके समय रात्रिको स्टैण्डर्ड टाईम १०।२९ पर नीचे दिये हुए चित्रके समान दक्षिणकी ओर ग्रहण लगा हुआ चन्द्रबिम्ब खण्डग्रास रूपमें सर्वत्र एक जैसा दिखाई देगा । इस चन्द्र ग्रहणका स्पर्शादि काल सम्पूर्ण भारतमें स्टैण्डर्ड टाइमसे निम्न है—

रात्रिमें	घं. मि.
स्पर्श	९—५१
मध्य	१०—२९
मोक्ष	११—७



सर्वग्रहण वा पर्वकाल १ घंटा १६ मिनटका है ।

ग्रहण सूतक (वेध)

इस ग्रहणका वेध मध्यान्ह १२ बजकर ५१ मिनट से प्रारम्भ होगा । ग्रहण वेधमें भोजनादिका निषेध है ।

राशिफल

यह ग्रहण रोहिणी नक्षत्र और वृष मिथुन तुला तथा कुम्भ राशि वाले प्राणियों एवं राष्ट्रोंको कष्ट भय चिन्ता हानि आदि अशुभफल कारक है । मेष कन्या वृश्चिक और मकर राशि वालोंको मध्यम । तथा कर्क सिंह धनुः मीन राशि वालोंको शुभ फलकारक है । इस ग्रहणका विशेष फल पहले सूर्यग्रहणके फलमें समाविष्ट कर दिया गया है ।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग'से]

अक्टूबर १९५५

ता० २६ बुधवार—विजयादशमी मेला दशहरा अपराजिता [पूजन ।
२७ गुरुवार—पापांकुशा एकादशी व्रत ।
२८ शुक्रवार—प्रदोष व्रत ।
३० रविवार—शरद् पूर्णिमा सत्य व्रत ।
३१ सोमवार—कार्तिक स्नानारम्भ ।

नवम्बर १९५५ ई०

ता० ३ गुरुवार—श्रीगणेश ४ करक (करवा) चौथ व्रत चंद्रोदय स्टे. टा. २१।१७
७ सोमवार—अहोई अष्टमी ।
१० गुरुवार—रमा एकादशी व्रत ।
११ शुक्रवार—प्रदोष व्रत धन त्रयोदशी यमदीपदान ।
१२ शनिवार—श्री धन्वन्तरि जयन्ती श्री हनुमज्जयन्ती नरकहरा १४ रूपचतुर्दशी ।
१३ रविवार—दीपमालिका श्रीमहालक्ष्मी पूजन ।
१४ सोमवार—सोमवती अमावास्या श्री पं० जवाहर लाल नेहरू जन्मोत्सव ।
१५ मंगलवार—अन्नकूट गोवर्द्धन पूजन, रस्साकशी ।
१६ बुधवार—चन्द्रदर्शन वृश्चिक संक्रान्ति पुण्यकाल सु० १५, यम २ भ्रातृटिका दूज, बलिराज दवात कलम पूजन ।
२२ मंगलवार—गोपाष्टमी ।
२५ शुक्रवार—हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत स्मार्त्त ।
२६ शनिवार—हरिप्रबोधिनी ११ व्रत वैष्णवानां चातु- [र्मासंसमाप्तिः ।
२७ रविवार—प्रदोषव्रत ।
२८ सोमवार—वैकुण्ठ १४ ।
२९ मंगलवार—सत्यव्रत टुकरो पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण कार्तिक स्नान समाप्ति मेला गढ़गंगा व पुष्करराज ।

दिसम्बर १९५५ ई०

ता० २ शुक्रवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० [२१।७ ।
६ मंगलवार—श्री महाकाल भैरवाष्टमी ।
९ शुक्रवार—उत्पन्ना एकादशी व्रत स्मार्त गृहस्थोंका।
१० शनिवार—उत्पन्ना एकादशी व्रत वैष्णवोंका
११ रविवार—प्रदोष व्रत ।　　　[मल्ल १२ ।
ता० १४ बुधवार—खण्डग्रास सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र ।
१५ गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु० ३० ।
१६ शुक्रवार—धनुः संक्रान्ति पुण्यकाल ।
२५ रविवार—मोक्षदा एकादशी व्रत श्रीगीता जयन्ती ।
२६ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत ।
२८ बुधवार—सत्यव्रत श्रीदत्तात्रय जयन्ती ।

जनवरी १९५६ ई०

ता० १ रविवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० [२१।१६ ।
८ रविवार—सफला एकादशी व्रत ।
१० मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत ।
१२ गुरुवार—अमावास्या ।
१३ शुक्रवार—लोहड़ी महोत्सव ।
१४ शनिवार—चन्द्रदर्शन मकर संक्रान्ति पुण्यकाल स्टे० टा० १६।४७ पर्यन्त मु० ३० ।
२० शुक्रवार—जन्मदिन श्रीगुरु गोविन्द सिंहजी ।

अ० भा० संस्कृत प्रचारक मण्डलका छठा वार्षिक महाधिवेशन

[मंत्री अ० भा० संस्कृत प्रचारक मण्डल]

अ० भा० संस्कृत-प्रचारक-मण्डलका षष्ठ अधिवेशन (संस्कृत दिवस समारोह) दिल्लीके मुख्यमन्त्री श्री गुरुमुख निहालसिंहजीकी अध्यक्षतामें ता० ३-४-५ जुलाई तदनुसार आषाढ़ शुक्ला १३-१४ और गुरुपूर्णिमाको दिल्लीके टाउन हालमें बड़े समारोहसे सम्पन्न हुआ। इस समारोह का उद्घाटन हिन्दुकालेजके प्रोफेसर डा० सुरेन्द्रनाथ शास्त्री एम. ए. पी. एच. डी. नें किया। श्री सेठ सत्यनारायण-जी गोयनकाके ध्वजारोहणके अनन्तर श्री सेठ चुन्नीलाल महावीरप्रसादजीने अपना स्वागताध्यक्ष भाषण पढ़ा।

इसके पश्चात् श्री पं० वामदेव उपाध्यायने मण्डलका परिचय दिया। श्रीविद्यासागरजीने देश-देशान्तरोंसे समागत प्रमुख विद्वानोंका परिचय कराया। श्रीरामचन्द्र भारती बी. ए. ने उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन्, लोकसभा के उपाध्यक्ष श्रीअनन्तशयनम् आयंगर, म. म. श्रीनारायण शास्त्री खिस्ते, श्री पं० राजेश्वर शास्त्री द्राविड़ (काशी) म. म. कालीप्रसाद शास्त्री (सम्पादक संस्कृतम्) पटियाला के राजपण्डित मुल्कराज शास्त्री, श्रीविश्वबन्धु शास्त्री, श्री पं० सूर्यनारायण व्यास ज्योतिषाचार्य आदि विद्वानोंके सन्देश पत्र पढ़कर सुनाये।

कवि-सम्मेलन

इसी दिन रात्रिको भारतके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् म० म० मथुराप्रसादजी दीक्षित राजगुरु सोलनके सभा-पतित्वमें कवि-सम्मेलन हुआ, जिसमें भारतके प्रमुख कवियोंने अपनी कवितायें पढ़ीं। इसके संयोजक श्री पं० ब्रह्मानन्दजी शुक्ल एम० ए० साहित्याचार्य थे।

संस्कृत-शिक्षा-सम्मेलन

दूसरे दिन ता० ४ जुलाईको श्री पं० कुबेरदत्तजी शास्त्री व्याकरणाचार्य (प्रिंसिपल राधाकृष्ण संस्कृत कालेज खुर्जा) के सभापतित्वमें संस्कृत-शिक्षा-सम्मेलन हुआ। इसके उद्घाटनकर्ता श्री प्रो० हंसराज अग्रवाल एम० ए० पी० ई० एस० (मंत्री संस्कृत विश्वपरिषद) थे। संयोजक श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री विद्यावागीश थे। इसमें संस्कृतके सम्बन्धमें अनेक प्रसिद्ध विद्वानोंके भाषण हुए। इसी अव-सर पर जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजका आशीर्वादात्मक भाषण भी हुआ।

उ० भा० ज्योतिष-सम्मेलन

गुरुपूर्णिमा ता० ५ जुलाई १९५५ को सायंकाल ४

बजेसे दिल्ली नगरपालिकाके दरबार हालमें भारतके सुप्रसिद्ध विद्वान् ज्यौतिषाचार्य श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सोलन) के सभापतित्वमें उ.भा. ज्यौतिषसम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस उ० भा० ज्यौतिष-सम्मेलनके संयोजक थे उत्तरप्रदेशके सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्य (खुर्जा) और उद्घाटनकर्ता थे दिल्लीके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० यमुनाधरजी ज्यौतिषाचार्य। इस ज्यौतिष सम्मेलनमें बाहरसे आये हुए विद्वानोंके अतिरिक्त दिल्लीके नागरिकों और हिन्दी अंग्रेजीके पत्रकारोंने भी विशेष रस लिया। सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए श्री० पं० यमुनाधरजीने अपने ओजस्वी भाषणमें कालविज्ञान-शास्त्र पर प्रकाश डालकर श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदीकी ज्यौतिष शास्त्र सम्बन्धी सेवाओंकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और इस सम्मेलनके गौरवपूर्ण अध्यक्ष पद पर उन्हें ही सर्वथा योग्य बताकर सभापति पद ग्रहण करनेका प्रस्ताव किया। इस प्रस्तावका समर्थन श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्यने ओजस्वी शब्दोंमें करते हुए श्रीत्रिवेदीजीकी विगत २८ वर्षोंसे की जाने वाली शास्त्रीय सेवाओं और 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' तथा 'श्रीस्वाध्याय'की महत्ता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। तदनन्तर सभापतिजीका विद्वत्तापूर्ण भाषण हुआ। भाषणकी मुद्रित प्रतियां सभी उपस्थित जनोंमें वितीर्ण की गई। आपके भाषणकी उपस्थित विद्वानोंने मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की। दिल्लीके सभी हिन्दी अंग्रेजी पत्रोंने ज्यौतिषसम्मेलनकी कार्यवाही और सभापतिजीके भाषणका महत्त्वपूर्ण भाग दूसरे दिन प्रातःकाल ही प्रकाशित कर दिया। (सभापतिका यह पूरा भाषण इस अङ्कमें भी पृष्ठ ३३—४२ पर दिया गया है।)

रात्रिको बाहरसे आये हुए विद्वान् ज्योतिषियोंके भाषण हुए, जिनमें श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़, श्री डा० सुरेन्द्रनाथजी शास्त्री, श्री गो० गिरिधारीलालजी शास्त्री, श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य और श्री पं० शिवशङ्करजी राज ज्योतिषी आदि मुख्य हैं। श्रीविशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्यने अपने ओजस्वी भाषणमें भारतीय वायुशास्त्र और वृष्टि विज्ञान पर पूर्ण प्रकाश डालते हुए घोषणा की कि हमारा ज्योतिर्विज्ञान इतना पूर्ण है कि इससे मौसम (वायु वर्षा आदि) का ६ मास पूर्व सही ज्ञान प्राप्त हो सकता है। मैंने एक तालिका बनाकर ६ मासकी भविष्यवाणी की थी वह सत्य सिद्ध हुई। आपने भारतसरकारसे अनुरोध किया कि वह अपने पर्जन्यविभाग (इण्डियन मेट्रालाजिकल डिपार्टमेंट)में भारतीय ज्योतिर्विज्ञानवेत्ताओंका सहयोग प्राप्त करे। भाषणोंके अनन्तर इस सम्मेलनने निम्नाङ्कित प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास किये—

सर्वप्रथम सभापतिजीने राजस्थानके महाराजप्रमुख महाराणा उदयपुरके निधन पर शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए मार्मिक शब्दोंमें स्व० महाराणाकी उदारता दानवीरता गुणज्ञतादि पर पर्याप्त प्रकाश डाला। प्रस्तावके शब्द ये थे—

"यह सम्मेलन राजस्थानके महाराजप्रमुख उदयपुरके महाराणा हिजहाईनेस श्रीभूपालसिंहजीके निधन पर शोक प्रकट करता है और प्रभु (भगवान् श्रीएकलिङ्ग) से उनकी आत्माको शाश्वत शान्ति प्रदान करनेकी प्रार्थना करता है। साथ ही उनके उत्तराधिकारी महाराणा श्रीभगवतीसिंहजी एवं श्री महाराणीजी आदि सभी शोक सन्तप्त परिवारके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता है।"

सभी उपस्थित जनोंने खड़े हो दो मिनट तक मौन प्रार्थना करके स्व० महाराणाके प्रति सम्मान प्रदर्शित कर प्रस्तावको स्वीकार किया।

दूसरा प्रस्ताव श्री सभापतिजीकी ओरसे यह था—

"यह सम्मेलन भारतसरकारसे अनुरोध करता है कि वह नई दिल्ली स्थित वेधशाला (जन्तरमन्तर) का जीर्णोद्धार करानेके लिए राजस्थान सरकारसे अनुरोध करके उसमें आधुनिक वेधोपयोगी दूरवीक्षण आदि सभी यन्त्र सामग्रीसे सुसज्जित कर एक आदर्श भारतीय वेधशाला बना दे। यदि राजस्थान सरकार इस कार्यको न कर सके तो भारत सरकारको यह कार्य शीघ्र अपने हाथमें लेना चाहिए।" यह प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

तीसरा प्रस्ताव श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्योतिषाचार्यने यों प्रस्तुत किया—

"यह सम्मेलन भारतसरकारसे निवेदन करता है कि वह नई दिल्ली स्थित अपने ऋतु परिवर्तन शास्त्र विभाग (इण्डियन मेट्रोलोजीकल डिपार्टमेण्ट) के साथ ही एक भारतीय अनुसन्धान-विभाग भी स्थापित करके प्राचीन ज्योतिर्विज्ञानका सहयोग लेकर इस विभागकी विशेष प्रगति

करे। उस विभागमें ऐसे विशेषज्ञ ज्यौतिषाचार्यकी नियुक्ति की जावे जो त्रिस्कन्ध ज्योतिष (गणित सिद्धान्त संहिता होरा) को भलीभांति पढ़ा सके और तीनोंका अनुसन्धान अन्वेषण भी कार्यरूपमें प्रत्यक्ष करा सके।''

श्री डा० सुरेन्द्र नाथजी शास्त्रीने इस प्रस्तावका समर्थन किया और सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

चौथा प्रस्ताव राजज्यौतिषी श्री पं० शिवशङ्करजीने इस प्रकार प्रस्तुत किया—

''यह सम्मेलन उत्तरभारतके उन सभी पञ्चाङ्गकर्ता विद्वान् दैवज्ञोंसे सानुरोध निवेदन करता है कि जो अभी तक अपने पञ्चाङ्गका गणित ग्रहलाघव मकरन्द आदि प्राचीन स्थूलमानकी प्रक्रियासे करते हैं वे सब आगामी वर्षसे नवीन दृग्गणित केतकी ज्योतिर्गणित आदिसे लगाकर पञ्चाङ्गोंमें एक वाक्यता लानेका प्रयत्न करें।''

श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य (मुरार) ने इस प्रस्तावका समर्थन किया और सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ। इस प्रकार यह उत्तर भारतीय ज्यौतिष सम्मेलन बड़ी सफलताके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

श्रीविद्यासागरजीकी स्वर्णजयन्ती

गुरु पूर्णिमा ता० ५ जुलाईको रात्रिमें अ० भा० संस्कृत प्रचारक मण्डलके संस्थापक सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागरकी स्वर्ण जयन्ती मनाई गई। जिसमें शिष्य वर्गकी ओरसे श्रीमान् गुरुमुख निहाल सिंहजीके कर कमलों द्वारा श्री विद्यासागरजीको पांच हजार रुपयोंकी थैली भेंट की गई। जयन्तीके संयोजक श्री पं० बामदेव उपाध्यायने श्री विद्यासागरजीका अभिनन्दन पत्र पढ़ा, और अनेक संस्था तथा श्री पं० भवानी शंकर त्रिवेदी शास्त्री बी. ए. साधुराम शास्त्री आदि विद्वानोंने अपनी अपनी श्रद्धाञ्जलियाँ दीं। तत्पश्चात् मण्डलकी ओरसे भारतके विशिष्ट विद्वानोंको निम्नाङ्कित सम्मानित उपाधियाँ दी गईं। श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदीको 'दैवज्ञ शिरोमणि'। श्री पं० यमुनाधरजीको 'ज्योतिषमार्तण्ड'। श्री डा० सुरेन्द्रनाथ शास्त्रीको 'सिद्धान्त वागीश'। श्री पं० श्रीधरमायाधारी शास्त्रीको 'विद्यावागीश'। श्री पं० शिवनाथजी वैद्यको 'आयुर्वेदमार्तण्ड'। श्री पं० कृष्णचन्द्र को 'धर्मभूषण'। सेठ रामप्रसाद चांदी वालेको 'धर्मभूषण' श्री डा० भगवत्स्वरूप गौड़को 'कविरत्न' तथा श्री पं० बामदेव उपाध्यायको 'धर्माचार्य' स्वर्ण पदक, और श्री कुसुमकुमारी गोयल शास्त्री एम० ए० को गौरीशंकर स्वर्णपदक दिये गये।

इसके पश्चात् मंडलकी ओरसे पं० श्रीधरमायाधारी शास्त्री, पं० कृष्ण कान्त बी० ए० ने समारोहके अध्यक्ष श्री गुरुमुखनिहालसिंह जीका अभिनन्दन किया। स्वागत मन्त्री श्री बालकृष्ण सिंहानिया सबका धन्यवाद किया। यह त्रिदिवसीय च कार्यवाही आल इण्डिया रेडियो द्वारा भी प्रसारित की गई।

दिल्ल्यां षष्ठ संस्कृतदिवस समारोहे
श्री पं० छज्जूराम विद्यासागराणां स्वर्णजयन्त्याम्—

अभिनन्दनपत्रम्

स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेषु येषां धीरवगाहते।
नमोऽस्तु बुधवर्येभ्यः तेभ्यः प्राप्त्यै स्वसन्मतेः ॥१॥
कृत्वा ग्रन्थशतं छात्रान् शास्त्र्याचार्यान्परःशतम्।
उपकारित्वमौदार्यं यैर्बुधैः सुप्रदर्शितम् ॥२॥
ते विद्यासागराः छज्जूरामशास्त्रिधुरन्धराः।
महामहाध्यापकादि पदवीभिर्यशोधराः ॥३॥
गीर्वाणवाण्या उद्धारे सदा ते लग्नमानसाः।
गीर्वाणवाणी विदुषां कृते सम्मान लालसाः ॥४॥
सति प्रकाण्डपाण्डित्येऽप्येषां निरभिमानिताम्।
लेखकत्वं च वक्तृत्वं दृष्ट्वा को न प्रसीदति ॥५॥
संस्कृतस्य प्रचाराय कृतभूरिपरिश्रमाः।
ईश्वरात्प्रार्थयाम्यद्य जीवन्त्वेते शतंसमाः ॥६॥
धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि गुरूणां चरणाब्जयोः।
पंचसाहस्रमुद्राणामुपायन समर्पणात् ॥७॥
एषां जयन्त्यां विबुधोत्तमानां
विराजतामष्टपदी मदीया।
गुणानुवादेन प्रहर्षयन्ती
तच्छिष्यवर्गं सुहृदां च वर्गम् ॥८॥

समपर्कः—अ. भा. संस्कृतप्रचारकमण्डलस्य
सदस्यगणः शिष्यगणश्च।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

शनि मंगल राहु युतिका संसार पर प्रभाव

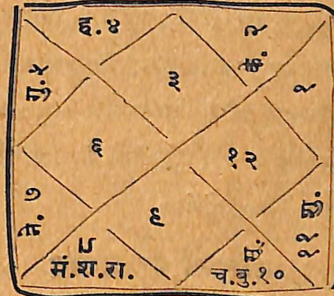
[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

इस तीन मासकी अवधिमें कई महत्त्वपूर्ण ग्रहयोग बन रहे हैं। संहारप्रिय वा मृत्युनायक शनिदेव २॥ वर्ष तक अपनी उच्च राशिमें भ्रमण करके कार्तिक कृ० १३ ता० १२ नवम्बर शनिवारको सूर्योदयसे पूर्व ही वृश्चिक राशिमें प्रवेश करेंगे। राहु पहलेसे वृश्चिकमें है ही। एक मास बाद मार्ग. कृ० ३० ता० १४ दिसम्बरको वृश्चिक राशिस्थ सूर्य चन्द्रमा शनि राहुसे आक्रान्त होकर चतुर्ग्रही योग बनावेंगे। इसी दिन सूर्यग्रहण भी है। इसके ठीक एक मास बाद पौष शु० १ शनिवार ता० १४ जनवरी १९५६ ई० को शनिका मंगलसे द्वन्द्व (युद्ध) ठनेगा। इस युद्धमें मंगल बलवान् स्वक्षेत्री है, अतः आर्यनीतिप्रधान राष्ट्रनायकोंकी दूरदर्शितापूर्ण सद्भावनासे राष्ट्र सुरक्षित रह सकेगा। आर्य प्रकृतिके प्राणियोंको संघर्षरत रहते हुए भी परिणाम विशेष अनिष्टप्रद न होगा। अनार्य म्लेच्छ यवनादि राष्ट्रोंमें भीषण अशान्तिका अकांड तांडव होगा।

मेष, वृष, सिंह, वृश्चिक और धनुः राशि वाले व्यक्तियों तथा राष्ट्रोंके लिए यह शनि-राहु संयोग नानाविध अशांतिकारक रहेगा। वृश्चिक जलतत्त्व राशि है, अतः समुद्री तूफान आवेंगे। पौष माघमें भयानक शीत पड़ेगी। उत्तरीय पार्वत्य प्रदेशमें हिमपातसे हानि होगी। समुद्रमें कोई भयानक दुर्घटना होगी। कहीं अणु विस्फोट सम्भव है। कहीं समुद्रका जल जम जायगा। जलयान वायुयान और रेलवेमें दो भयानक दुर्घटनाएं होंगी। आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात भूकम्प झंझावात अग्निकांड ओलावृष्टि आदिसे भी हानि होगी।

पौष शुक्ला १ शनिवार ता० १४ जनवरी १९५६ ई० को अर्धरात्रोत्तर स्टे. टा. ४।४७ पर मिथुन लग्नमें भगवान् भुवनभास्कर मकर राशिमें प्रविष्ट होंगे।

मकर संक्रान्ति प्रवेश कालीन कुण्डली यह है—



लग्नेश सुखेश बुध अष्टम पड़ा है। अतः प्रजामें रोग भय और अनाचारकी वृद्धि होगी किसी बड़े राजपुरुष वा वैज्ञानिककी मृत्यु होगी। धनेश चन्द्रमा अष्टममें शनिसे दृष्ट है और राज्येश गुरु पर भी शनिकी दृष्टि है, अतः आर्थिक संकट और बेकारी बढ़ेगी। राजा रईस और पूंजीपतियोंको संकटका सामना करना होगा। राजनैतिक सामाजिक धार्मिक संस्था संगठनोंमें पारस्परिक प्रतिस्पर्धा कहीं सांठ-गांठ जोड़ तोड़ तो कहीं शक्तिसंचयके लिए प्रबल प्रयत्न होंगे। प्रजामें असंतोष साम्प्रदायिक प्रादेशिक संघर्ष और छोटे बड़े राष्ट्रोंमें अविश्वास आतंक बढ़ेगा। संधियां भङ्ग होंगी। पाकिस्तानकी ओरसे भारतको हानि पहुँचानेके गुप्त षड्यंत्र होंगे। मन्त्रिमण्डलोंमें उलटफेर होंगे। यहां वृश्चिकका शनि स्थिर राशिमें है और स्थिर राशिस्थ यम-(प्लुटो) से त्रिकोण योग कर रहा है। अतः इसका अनिष्ट प्रभाव शनैः शनैः आगे अधिक होगा। प्रारम्भमें शनि यमकी मित्र दृष्टि वा त्रिकोण योगके कारण सभी राष्ट्रोंमें मित्रताकी भावना बढ़ेगी। राष्ट्रनायकों और सांस्कृतिक सदभावना मण्डलोंका आवागमन अधिक होगा। विश्वशांतिके प्रयत्न होंगे। फलतः कुछ समयके लिए अभी विश्वयुद्धका भय टलता हुआ दिखाई देगा। परन्तु यह सब बाह्य दिखावा

मात्र होगा। अन्दरसे सब सशंक रहकर शक्ति सन्तुलन के साथ शस्त्रास्त्र सामग्री बढ़ाते रहेंगे। आगे मकरके शनि में एक बार आठ ग्रह एकत्र होंगे वहां विश्वमें भयानक विनाश होगा। उसका विशेष विवेचन हम फिर किसी समय करेंगे।

मध्यभारत, बंगाल, मद्रास, पंजाब सौराष्ट्र, राजस्थान, काश्मीर, नेपाल, आस्ट्रेलिया, चीन, जापान, ब्रह्मदेश, श्रीलंका, फ्रांस, अमेरिका, रूस, हिन्दचीन और हिन्देशिया पर सूर्यग्रहण और शनिमंगल युतिका बुरा प्रभाव पड़ेगा। ८० रेखांशसे पूर्वीय प्रदेशोंमें आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात अधिक होंगे।

वस्तुओं पर प्रभाव

वृश्चिकका शनि राहु आरम्भमें एक वर्ष तक अन्न धान्य धातु मात्र और रसादि पदार्थोंमें साधारण मन्दीकारक है। परन्तु ता० ३ जनवरी १९५६से वृश्चिकस्थ शनि राहुके साथ मंगल भी मिल जावेगा। यह घृत तैल वस्त्र और राजमाष उड़दादि धान्यमें पर्याप्त तेजी कारक है। पहले संग्रह करने पर ५ मासमें अच्छा लाभ होता है। यथा—

वृश्चिकस्थो यदा राहुर्दैवाद् भौमस्य संगमः।
तदा ज्ञात्वा च कर्तव्यः संग्रहो घृतवाससाम् ॥
पंचमासान् व्यतिक्रम्य षष्ठे कार्योऽस्यविक्रयः ॥
लाभश्च द्विगुणो ज्ञेयो निश्चितं शास्त्रभाषितम् ॥

आश्विन शुक्ला ६ को मंगलवार है, यह भी कपास चावल उड़दादि धान्यमें तेजीकारक है। चैत्रमें इन वस्तुओं के विक्रयसे लाभ होना लिखा है। यथा—

नवमी चाश्विने शुक्ले कुजवारेण संगता।
मुहुः कार्पास चपला माषादिः संग्रहोमतः ॥
द्विगुणस्तु भवेल्लाभो चैत्रमासेऽथ विक्रये।

प्रकृति-प्रकोप

शनि मंगल राहु योगके कारण प्रकृति-प्रकोप हिमपात अतिवृष्टि अनावृष्टि आदिसे कई प्रान्तोंमें फसलको हानि पहुंचेगी। संसारमें अधर्म और अनाचारके बढ़ जानेसे प्रकृति-प्रकोप (उत्पात जलप्लावन दुर्भिक्ष महामारी युद्धादि) से प्रजा का नाश होता है। इसका विस्तार पूर्वक सप्रमाण विवेचन हमने आजसे ५ वर्ष पूर्व श्रीस्वाध्यायके ६ वें वर्षके ग्रीष्माङ्कमें "दैवी आपत्तियोंका मूल कारण" शीर्षक लेखमें दिया था। वहीं पर इन आपत्तियोंसे बचनेके शास्त्रीय उपाय भी बताये थे। अभी आश्विन मासमें यहां भीषण बाढ़से जो खण्ड-प्रलय उपस्थित हुआ यह भी प्रजाके पापकर्मोदयका फल है। ग्रहगणनानुसार पहलेसे ही इसका संकेत मिल जाता है। एक वर्ष पूर्व हमने अपने सं० २०१२ के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' में इस प्रकृति-प्रकोपका उल्लेख किया था। पृष्ठ ३३ पर लिखा था कि—

"......इन सब योगों पर सूक्ष्म दृष्ट्या विचार करनेसे ज्ञात होता है कि इस वर्ष अनियमित वर्षा एवं प्रकृति-प्रकोप से पूरी फसल कृषकोंके हाथ नहीं लगेगी। कहीं अनावृष्टि और कहीं अतिवृष्टिसे तो कहीं टिड्डी ओला हिमपातादिसे खड़ी फसलको हानि होगी।"

आषाढ़ कृष्णा ३० को सूर्यग्रहण कर्क लग्नमें हुआ था और श्रावण शुक्लमें कर्क राशिमें ही पंचग्रहयोग हुआ था इसकी स्पष्ट सूचना हमने 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत टाइम्स' और 'मकरन्द' में दी थी। वहां लिखा था कि 'जलचर कर्क राशिमें पंचग्रह योग अतिवृष्टि जलप्लावन दुर्भिक्ष रोगादि उत्पातका सूचक है।

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा ॥"

तदनुसार गत कर्क राशिकी पंचग्रही और कर्क लग्नस्थ सूर्यग्रहणने ३ मासके अन्दर ही भीषण जलप्रलय उपस्थित करके 'प्लावयन्ति महीं सर्वां......जलेन वा' पदको चरितार्थ कर दिया। अब आगे वृश्चिक धनुःका शनि और ग्रहयोग संसारमें क्या क्या अभूतपूर्व घटनाओंको जन्म देंगे, इसका विवरण हमारे नये वर्षके पंचांग और श्रीस्वाध्यायके आगामी अंकोंमें देखिये।

—

सोलनके सार्वजनिक सेवा क्षेत्रकी विभूतियां

आदर्श नरेश श्रीदुर्गासिंहजी

भारतमें जो अनुपम सौन्दर्य और अनेक प्राकृतिक मनोरम दृश्य भूस्वर्ग काश्मीर और हिमाचलप्रदेशमें दिखाई देते हैं वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलेंगे। प्रतिवर्ष अनेकों नर-नारी इन पार्वत्य प्रदेशोंमें पहुँच कर अपने सन्तप्त शरीर एवं मस्तिष्कको सुशीतल समीरके साथ प्राकृतिक वैभवमें विभोर हो आत्मानन्दका अनुभव कराते हैं। हिमाचलप्रदेशमें सोलननगर अपनी रमणीयताके लिए प्रसिद्ध है। रेलमार्ग और राजपथ (मोटर रोड) पर होनेके कारण इसे सभी साधन प्राप्त हैं। यहांके नरेश धर्ममार्तण्ड महाराज श्री १०५ दुर्गासिंहजी एक आदर्श लोकप्रिय नरेश हैं। इस कलि-कालमें भी आपने भगवान् श्रीरामके आदर्श मार्गको अपना कर राजर्षि पदको सार्थक किया है। आपके राज्यकालमें ही सोलन नगरने पर्याप्त प्रगति की थी। संस्कृत-कालेज, हाई-स्कूल, कन्या-पाठशाला, हस्पताल, औषधालयादिकी स्थापना प्रजाके हितार्थ आपके राजत्व कालमें ही हो चुकी थी। भारत-विभाजनके पश्चात् लाहौरसे पंजाब विश्वविद्यालयके कार्या-लय भी सोलनमें स्थानान्तरित हो जानेसे इस नगरकी शोभा और भी बढ़ गई है।

रा० ब० श्री सेठ तोलारामजी गजराजजी

सोलनके सार्वजनिक सेवा कार्योंमें लाडनूं (राजस्थान) के सुप्रसिद्ध दानवीर रायबहादुर श्रीमान् सेठ तोलारामजी गजराजजी खावगी और श्रीमान् सेठ गणपतरायजी खावगी का भी बहुत बड़ा हाथ है। रा० ब० सेठ तोलारामजी गजराजजीका कलकत्ता और पूर्वी बंगालमें बड़ा भारी व्यवसाय है। आप पाँच भाई हैं और पाँचों ही धर्मनिष्ठ उदार हैं। अपने पुरुषार्थसे ही आपने करोड़ोंकी सम्पत्तिका उपार्जन किया है। गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीकी "जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना" यह उक्ति आपके परिवारमें पूर्ण-रूपेण चरितार्थ हो रही है। आपने हस्पताल, औषधालय विद्यालय, मन्दिर निर्माणादिमें लाखों रुपयोंका दान अपनी जन्मभूमि लाडनूं राजस्थान और दिल्ली कलकत्ता आदिमें दिया है और अब भी देते रहते हैं। शास्त्रकारोंने धनकी तीन ही गति बतलाई है—

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुंक्ते गतिस्तृतीया भवति तस्य॥

सबसे उत्तम गति है धनकी परोपकारार्थ दान। दानसे बराबर वृद्धि होती रहती है। दूसरी गति है भोग। और यदि इन दोनोंमें धनका सदुपयोग न हो तो फिर तीसरी गति नाश तो है ही। इसलिए बुद्धिमान् पुरुष वही है जो दान और भोगमें अपने द्रव्यका सदुपयोग करता रहे।

सोलनमें पहले उमाकन्या माध्यमिक पाठशाला थी, बादमें यह गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल हो गया। परन्तु इसका अपना निजी भवन नहीं था। इस कमीको पूरा करके श्री-मान् सेठ गजराजजीने सोलनकी जनता पर तो उपकार किया ही, साथ अपना सुयश भी अमर कर लिया है। सोलन नगरके राजपथ (माल रोड) पर अपने जैनहाउस के पासमें ही लगभग दो लाख रुपयेकी लागतसे गर्ल्स हाई स्कूलका विशाल भवन इसी वर्ष बनवा दिया है। अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सेठानी लक्ष्मीदेवी जैनके नामसे सेठ श्रीगजराजजीने यह भवन निर्माण कराया है, अब इस का नाम 'श्रीलक्ष्मीदेवी जैन गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल' रक्खा गया है। आश्विन शु० १ रविवार ता० १६ अक्टूबर १९५५ ई० को हिमाचल प्रदेशके उपराज्यपाल श्री बजरंगबहादुर-सिंहजीके करकमलोंसे इसका उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। राज्य और केन्द्रके कई उच्चाधिकारी एवं गण्यमान्य महानुभाव इस शुभावसर पर निमन्त्रित किये गये थे।

श्रीमान् सेठ गजराजजीने इस भवनके निर्माणमें केवल रुपया ही नहीं लगाया अपितु अपना मन और सेवा-भावका स्नेह भी भवनके प्रत्येक पत्थर और ईंटमें भर दिया है। दिन भर मिस्त्रियों और मजदूरोंके साथ खड़े रहकर जिस तन्मयतासे सेठजी कार्य करवाते थे वह उनकी सत्यनिष्ठा और कर्मण्यताका द्योतक है। इतनी विशाल सांसारिक

सम्पत्तिका स्वामी होकर भी आपमें अभिमान लेशमात्र भी नहीं है। इष्टदेव गुरुजन साधुमहात्मा और विद्वान् पुरुषोंमें आपकी परम निष्ठा है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सेठानी लक्ष्मीदेवीजी भी परम धार्मिक विनयसम्पन्न गृहलक्ष्मी हैं। श्रीमान् सेठ तोलारामजी के ज्येष्ठ पुत्र चि० श्री कु० मदन लालजी भी अपने पूज्य पिता और पितृव्य श्री गजराजजी के समान ही सेवाभावी होनहार नवयुवक हैं।

सेठजीने जिस दिन आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराजके देहावसानका समाचार सुना उसी क्षणसे १० दिन के लिए भवन निर्माणादि सभी सांसारिक कार्य बन्द करवा दिये और व्रत जप पूजापाठादिमें लग कर अपनी गुरुभक्ति का परिचय दिया। ता० २६ सितम्बरको श्रीलक्ष्मीदेवी जैन गर्ल्स हाई स्कूलके नवनिर्मित भवनमें अपने सारे परिवार तथा सेठ श्रीगणपतरायजी सेठी और स्थानीय सम्भ्रांत सज्जनोंके साथ सामूहिक रूपमें स्वर्गीय आचार्यको श्रद्धाञ्जलि समर्पित की।

श्री सेठ गणपतरायजी

श्रीमान् सेठ गणपतरायजी सावगी भी लाडनूंके सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ हैं। आप कई वर्षोंसे प्रतिवर्ष ग्रीष्म कालमें सोलन आते हैं और सोलनके साथ भी आपने घर जैसी ही आत्मीयता स्थापित कर ली है। आपकी जीवनी आधुनिक नवयुवकोंके लिए बड़ी अनुकरणीय है। सेठ गणपतरायजीने छोटी आयुमें ही एक सेठके यहाँ साधारण नौकरी करके अपनी सत्यनिष्ठा स्वामिभक्ति और बुद्धिमानी तथा कठिन परिश्रमके बल पर लाखोंकी सम्पत्ति प्राप्त की और लाखों रुपये दान भी किये। श्रीहनुमानजीके आप परम भक्त हैं। साधु महात्मा और विद्वानोंका आपके यहाँ पूरा आतिथ्य सत्कार होता है। सोलनके सनातनधर्म मन्दिर और देवीमन्दिरमें जयपुरसे हनुमानजीकी मूर्तियाँ मंगवा कर आपने प्राणप्रतिष्ठा करवाई थी। सनातनधर्म-मन्दिरमें कूप और स्नानागार भी आपने बनवाया है। अभी इस वर्ष सोलनमें आपने दोहरी दीवारके समीप पेप्सूकी सीमा पर एक सुन्दर विश्रामगृहका निर्माण करवाया है। सोलनकी जनता प्रायः नित्य ही सायंकालको भ्रमणार्थ प्रकृतिनिरीक्षण एवं आमोद प्रमोद करती हुई दोहरी दीवार तक जाती है। सायंकालको इस मार्ग पर अच्छा जमघट सा हो जाता है। यहाँ एक विश्रामगृहकी नितान्त आवश्यकता थी, इसकी पूर्ति करके सेठ गणपतरायजीने सोलन और पेप्सूकी जनताका बड़ा उपकार किया है। प्रत्येक मंगलवार को सेठजी श्रीहनुमानजी के मन्दिरमें दर्शनार्थ जाते हैं और अपने निवासस्थान मोदी भवनमें आने वाले सभी सज्जनों को प्रसाद वितीर्ण दो दिन तक करते रहते हैं। प्रतिवर्ष एक दो बार सेठजीकी ओरसे प्रीतिभोज होता है उसमें राज्यके सभी छोटे बड़े पदाधिकारी और गण्यमान्य व्यक्ति बुलाये जाते हैं। राजस्थानी ठाटकी भोजन व्यवस्था और सेठजी तथा आपकी गृहलक्ष्मी श्रीमती सेठानी केसरदेवीजीके हार्दिक स्नेह को देखकर सब लोग गद्गद् हो जाते हैं। जो श्रेष्ठ अर्थात् अच्छे सुकार्य करे वही श्रेष्ठी सेठी वा सेठ कहा जाता है। श्रीमान् रा० ब० सेठ तोलारामजी गजराजजी और सेठ गणपतरायजीने अनेकों परोपकारी श्रेष्ठ कार्य करके अपने 'सेठ' नामको सार्थक किया है। ऐसे ही श्रेष्ठों (सेठों) की आज भारतको आवश्यकता है।

श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन'

सोलनके विश्वविख्यात डायर मीकन ब्रूरीज लि० के प्रधान व्यवस्थापक श्री नरेन्द्रनाथजी मोहन साहब बड़े ही सहृदय उदार गुणज्ञ कर्मवीर सज्जन हैं। सार्वजनिक कार्योंमें आपका बहुत बड़ा हाथ है। अपने बुद्धि कौशल और पराक्रमसे ही निजी व्यवसायको उन्नत करके पर्याप्त सम्पत्ति प्राप्त की है। ब्राह्मण केवल मस्तिष्कका कार्य (लिखना पढ़ना और शासन करना) ही नहीं जानते, अपितु वे उद्योग व्यवसायके क्षेत्रमें भी किसीसे पीछे न रहकर अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभाका परिचय दे सकते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण श्री मोहन साहब हैं। स्वातन्त्र्य प्राप्तिके पूर्व इस कम्पनीका सञ्चालन यूरोपियनोंके हाथमें था। लखनऊ कसौली और दिल्लीमें उक्त कम्पनीकी निर्माणशालाएं (फेक्टरियां) हैं और भारतमें २३ शाखाएं हैं—उनका सञ्चालन आपके सुपुत्र श्री वेदरत्नजी 'मोहन' और श्रीकपिल मोहन बड़ी कुशलतासे कर रहे हैं। अनेक धार्मिक सामाजिक सार्वजनिक संस्थाओंके आप सम्मान्य सदस्य हैं और आपकी उदार सहायता समय समय पर उन्हें प्राप्त होती रहती है। नेशनल सेण्ड पेपर मिल्स इण्डिया लिमिटेडके आप मैनेजिंग डायरेक्टर हैं और कमर्शियल-

यूनिवर्सिटी दिल्लीके प्रो. चान्सलर हैं। इसी यूनिवर्सिटीने इस वर्ष आपको डाक्टरेटकी उपाधिसे सम्मानित किया है। 'श्रीस्वाध्याय' के भी आप विगत ४ वर्षोंसे सहायक हैं। भारतमें सबसे बड़े बीयरके उत्पादन केन्द्रका संचालन करते हुए भी सुरापान तो दूर रहा पान सिगरेट तकका व्यसन भी आपमें नहीं है। सारे यूरोप भ्रमणमें भी आपने शाकाहारी रहकर अपनी धर्मनिष्ठाको दृढ़ रक्खा। भारतीय संस्कृतिके आप अनन्य उपासक हैं। यह और भी विशेष आनन्दका विषय हैकि आपका सारा परिवार ही सुशिक्षित एवं सदाचारी है।

आजकल प्रायः सर्वत्र ही पूंजीपति और श्रमजीवियों (मिलमालिक-मजदूरों) में संघर्ष एवं पारस्परिक कटुता बनी रहती है, परन्तु आपने अपनी उदारता एवं दूरदर्शिता से अपने सभी श्रमजीवी कर्मचारियोंको सन्तुष्ट रक्खा है। उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाका उचित प्रबन्ध किया हुआ है। ऐसे अनुभवी उदार उद्योगपतियोंकी ही आज भारतको आवश्यकता है।

आवश्यक संशोधन

इस अंकमें पृष्ठ ७ पर 'शुभाशंसनम्' में श्रद्धेय महामहोपाध्याय श्री पं० नारायण शास्त्रीजी खिस्तेका नाम कम्पोजीटरोंकी भूलसे छूट गया है, वहाँ दूसरी पंक्तिमें 'श्री पं० और शास्त्रीके मध्य 'नारायण' अंकित कर लें। पृष्ठ ६ पर 'शेष शयी' के स्थान पर 'शेषशायी' पढ़ें और पृष्ट ४ के दूसरे कालमकी अन्तिम पंक्तियोंमें 'इकट्ठेमें जावेंगे' के स्थानमें 'इकट्ठे मंगावेंगे' ऐसा शुद्ध समझें।

—सम्पादक

"गीत"

शुचि सौम्य स्नेहागार ! मेरे,
हे ! प्रथम-प्राची-किरण !!!
हो उठा कण-कण प्रकाशित
नील नीलम मौक्तिकांचित—
चाहता छूना रश्मि का—
छोर मलयानिल प्रकम्पित
झर रहा मकरन्द कब से—
कर नलिन उर - सन्तरण !!
शुचि सौम्य स्नेहागार ! मेरे,
हे प्रथम - प्राची - किरण !!!
चिर प्रतिक्षा यामिनी सी,
गत हुई, अभिमानिनी सी !
लोभ तम में छा गई—
कोई सतत सौदामिनी सी !!
हो रहा नक्षत्र-पथ से—
स्नेह मय घनसार वर्षण !!
शुचि सौम्य स्नेहागार ! मेरे
हे प्रथम-प्राची-किरण !!!
हिल उठे हैं तार सारे
शून्य में ये शून्य तारे !
भूल कर अस्तित्व अपना
हो गये तुममें तुम्हारे !!
पा सकूँ यदि प्रेरणा ले—
कर रहा हूँ भाव-चित्रण !!
शुचि सौम्य स्नेहागार ! मेरे
हे प्रथम प्राची-किरण !!!

—आचार्य रमानन्द सारस्वत शास्त्री

सूचना

भाग्यांक अथवा अमरीकन काटन फीगरके साप्ताहिक अंक श्री विश्वनाथ दैवज्ञने हमारे पास विलम्बसे प्रकाशनार्थ भेजे थे परन्तु स्थानाभावके कारण इस अंकमें प्रकाशित न हो सके। जिन सज्जनोंको इन भाग्यांकोंकी आवश्यकता हो वे प्रतिलिपि (नकल) और डाक खर्चके लिए ।।=) दश आनेके टिकट व्यवस्थापक श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) के पते पर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।



श्री नरेन्द्रनाथजी मोहन साहब

आप नेशनल सेन्ड पेपर मिल्ज इन्डिया लिमिटेड गाजियाबाद और डायर मीकन-ब्रूीज लि० सोलनके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर हैं। अभी इसी विजयादशमी ता० २६ अक्टूबरको आपका जन्मदिवसोत्सव है। इस शुभावसर पर श्रीस्वाध्याय-परिवार मङ्गलमय प्रभुसे आपके शत-शारदीय जीवनकी कामना करता है।

अनिवार्य संस्कृत शिक्षाकी आवश्यकता

[ले०—प्रो० श्री विद्याधर शास्त्री एम० ए०]

इस समय हमारी दूसरी पंचवर्षीय योजनामें शिक्षाके प्रसार पर अरबोंके व्ययकी योजनाएं बन रही हैं। इस योजनामें केवल पुस्तक शिक्षाकी अपेक्षा औद्योगिक शिक्षा पर सबसे अधिक ध्यान दिया जायगा। मैं भी औद्योगिक शिक्षाका विरोधी नहीं। प्राचीन भारतने औद्योगिक शिक्षा के लिए जैसी व्यापक व्यवस्था की थी उसकी वह व्यवस्था आज भी अन्यान्य शिल्पी जातियोंमें सुरक्षित है। शिल्पी जातियोंकी अपेक्षा यदि सर्वसाधरणमें भी इस युगकी आवश्यकताके अनुसार इस शिक्षाका विशेष प्रचार करना है तो उसके लिए सर्वोत्तम उपाय यही है कि प्रत्येक मिल और कारखानेके साथ एक औद्योगिक स्कूल अथवा कालेज की स्थापना भी अनिवार्य रूपसे की जा सकती है।

शिक्षाका उद्देश्य किन्तु केवल अर्थ प्राप्तिमें ही समाप्त नहीं होता। मैं यह मानता हूं कि इस समय देशमें लाखों चतुर कारीगरोंकी आवश्यकता है, पर इससे भी अधिक राष्ट्रको इस बातकी आवश्यकता है कि इसका प्रत्येक बालक स्वस्थ, सदाचारी और सुसंस्कृत हो।

समस्त राष्ट्रके लिए यह एक परमचिन्तनीय विषय है कि वह आत्मकल्याण, लोकसेवक यज्ञ भावना एवं समस्त उच्चप्रवृत्तियोंसे शून्य होकर केवल क्षणिक राजनैतिक स्वार्थ और क्षणिक ऐन्द्रियसुखोंकी ओर ही सबसे अधिक झुका जा रहा है। मैं यह नहीं कहता कि नवभारत भोग-विषयकी प्रत्येक प्रवृत्तिसे विरक्त होकर, केवल परित्यागकी गतिमें ही अपनी समस्त भावनाओंको भावित कर दे। परन्तु प्रश्न यह है कि जिस राष्ट्रमें प्रतिक्षण असंख्य जन-संख्याकी वृद्धि हो रही है एवं जिसमें मानवशरीर और मानवमस्तिष्कके पोषक घृत दुग्धका सर्वथा अत्यन्ताभाव होता जा रहा है और जिसमें वनस्पति तेल ही पोषक तत्व माना जाता है, उस राष्ट्रमें उत्तेजक पदार्थोंकी वृद्धिके हो जाने अथवा उनके उत्पादनमें पाश्चात्योंसे भी आगे बढ़ जाने से ही हमारे जीवनकी वास्तविक आवश्यकताओंकी पूर्ति कैसे होगी? आज राष्ट्रमें जिस शिक्षाका प्रसार किया जा रहा है, अथवा जिस शिक्षाके आधार पर आजकल हमारे समस्त मानसिक जगत्‌का विकास होता है वह शिक्षा सर्वथा आधार शून्य, लक्ष्यशून्य एवं जीवनकी सर्वाङ्गमयी प्रवृत्तियोंसे सर्वथा शून्य है।

इन सब दोषोंके निराकरणके लिए एवं जीवनकी विश्व-व्यापकताके लिए यदि किसी शिक्षामें शक्ति है तो वह केवल संस्कृत शिक्षामें ही है। संस्कृतशिक्षा ही समस्त राष्ट्रमें सदाचार और सात्विक वृत्तियोंको उद्भूत कर समस्त विश्व के लिए आदर्श स्थापित करने वाले महामानवोंको प्रादुर्भूत कर सकती है। संस्कृत शिक्षा केवल अर्थप्रधान नहीं वह जीवनको धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष इन चारों वर्गोंकी प्राप्ति के साधनोंसे सम्पन्न करती है।

भारतके जो विश्वविद्यालय आज भी केवल अंग्रेजीके मोहमें मग्न हैं वे यह नहीं जानते कि यदि आगेके १५ वर्षोंमें फिर भी अंग्रेजीका ही प्रचार रहेगा तो अनिवार्य शिक्षाके इस युगमें आगेके १५ वर्षोंमें यह भारत भारतीयों की अपेक्षा केवल करोड़ों नए यूरेशियनोंसे परिपूर्ण हो जायगा।

यह संस्कृत-शिक्षामें ही शक्ति है कि वह विद्यार्थीमें विनय, समाजमें साम्यवृत्ति और राजनीतिमें भीष्म एवं कृष्ण की नीतियों और चाणक्य के व्यावहारिक सिद्धान्तोंका प्रसार करती है। जब तक भारतमें इन आवश्यक गुणोंकी वृद्धि नहीं होगी तब तक यहांके शासनमें भ्रष्टाचार और यहांके राजनीतिज्ञोंमें केवल क्षणिक स्वार्थका ही प्राबल्य बढता रहेगा। राष्ट्रके प्रत्येक शिक्षा प्रेमीका कर्तव्य है कि वह भारतीय शिक्षा क्षेत्रके इस परमावश्यक प्रश्न पर सबसे अधिक ध्यान दे और केवल अंग्रेजीके पक्षपाती अनभिज्ञ शिक्षा शास्त्रियोंकी बातों पर ही ध्यान न देकर संस्कृतशिक्षा की अनिवार्यताके लिए पूरा प्रयत्न करें।

——

तीसरी बार

महामहिम आचार्य

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

छप गया

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं।

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र हैं, पति हीं।

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति किंक्रान्ति है, संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्रप्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मँगाइये। मूल्य ॥) मार्ग व्यय -) 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पंचाङ्ग' के स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्ग व्यय सहित ।=) में।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगतमें हलचल-सी मच गई और सैकड़ों प्रतियाँ हाथों-हाथ लग गई। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिये? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि-आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) मार्ग व्यय ॥=) अलग।

श्रीपञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। इसमें प्रथम लघुस्तवकी ७०० वर्ष प्राचीन संस्कृत टीका तथा भारतकी वर्तमान राष्ट्रभाषानुवादके साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूल मात्र है। मूल्य ॥) डाक व्यय दो आने अलग।

श्रीमहानुभवशक्तिस्तव

संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याके साथ मूल्य ॥) आठ आने। यह पुस्तक कितनी उपयोगी एवं महत्वमण्डित है यह सब देखने पर ही विदित होगा।

महामहिम आचार्य श्री १०८ अमृतवाग्भव विरचित—

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ

१. श्रीपरशुरामस्तोत्र, सचित्र राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

२. श्रीसप्तपदी-हृदय, द्वितीय-संस्करण, संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

३. श्रीसंक्रांति-पंचदशी, संस्कृत टीका भाषानुवाद स.।

व्यवस्थापक—'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ...... इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ....।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषय अनुपम पत्र है ...... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है ......।

श्रीयुत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, राज्यपाल उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं। ......मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ ......।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमारजी—'श्रीस्वाध्याय' साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रक्खे हुए है। .... पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।........."

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी मुख्य-मन्त्री उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकल रहा है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किंवा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरण गुप्त—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है। ......यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत स्व० बाबूराव विष्णु पराड़करजी—"...... वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है। ......"

श्री डा० रामकुमारजी वर्मा—"...... 'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"... 'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।...... प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (भू० पू० सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।......आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"...... 'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।